मास्टर ऑफ आर्ट्स (संस्कृत)

Master of Arts (Sanskrit)

तृतीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल - 605

संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी-263139

Toll Free : 1800 180 4025
Operator : 05946-286000
Admissions : 05946-286002
Book Distribution Unit : 05946-286001
Exam Section : 05946-286022
Fax : 05946-264232
Website : http://uou.ac.in

पाठ्यक्रम समिति

कुलपति (अध्यक्ष)
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
प्रोफे0 ब्रजेश कुमार पाण्डेय,
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रोफे0 रमाकान्त पाण्डेय,
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर परिसर, राजस्थान
प्रोफे0 कौस्तुभानन्द पाण्डेय,
संस्कृत विभाग, अल्मोड़ा परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

प्रो0 एच0 पी0 शुक्ल-(संयोजक)
निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
डॉ0 देवेश कुमार मिश्र,
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
डॉ0 नीरज कुमार जोशी,
असिस्टेन्ट प्रोफेसर-ए.सी.,संस्कृत विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

पाठ्यक्रम संयोजन एवं सम्पादन

डॉ0 नीरज कुमार जोशी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

इकाई लेखन	**खण्ड एवं इकाई संख्या**
प्रो० पुष्पा अवस्थी,	**खण्ड 1 (इकाई 1 से 5)**
संस्कृत विभागाध्यक्ष, एस०एस०जे० परिसर,	**खण्ड 2 (इकाई 1 से 3)**
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा	

प्रकाशक: (उ0 मु0 वि0, हल्द्वानी) 263139 **कॉपीराइट** @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
पुस्तक का शीर्षक - संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं **प्रकाशन वर्ष : 2021**

ISBN No. 978-93-84632-29-8 मुद्रक:

यह पुस्तक छात्र हित में शीघ्रता के कारण, प्रकाशित की गयी है। संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण का प्रकाशन पाठ्यक्रम के पूर्ण लेखन व सम्पादन के पश्चात् किया जायेगा। इसका उपयोग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना अन्यत्र किसी भी रूप में नहीं किया जा सकता।

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

खण्ड 1. उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं 1-4

इकाई 1 - उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा **05-20**

इकाई 2 - विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी का जीवन परिचय एवं उनका संस्कृत साहित्य में योगदान **21-42**

इकाई 3 - श्री हरि नारायण दीक्षित का जीवन परिचय एवं उनका रचना संसार **43-60**

इकाई 4 - लोकरत्न गुमानी का व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व **61-78**

इकाई 5 - शिवप्रसाद भारद्वाज का जीवन परिचय एवं उनकी कृत्तियाँ **79-93**

खण्ड 2. आधुनिक संस्कृत महाकाव्यकारों का परिचय 94

इकाई 1 - अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय **95-110**

इकाई 2 - उन्नीसवीं शती के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय **111-125**

इकाई 3 - बीसवीं शती के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय **126-147**

तृतीय सेमेस्टर/SEMESTER-III

खण्ड–प्रथम

उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं

इकाई 1: उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 इकाई की पाठ्यसामग्री
1.3.1 गढ़वाल में संस्कृत साहित्य की परम्परा
1.3.2 गढ़वाल में प्राप्त संस्कृत अभिलेख
1.3.2.1 देवप्रयाग में प्राप्त यात्री नामावली
1.3.2.2 उत्तरकाशी के शक्ति स्तम्भ का लेख
1.3.2.3 अनुसूयादेवी मन्दिर मार्ग पर पाषाण अभिलेख
1.3.2.4 पलेठी का शिलालेख
1.3.2.5 लाखामण्डल-ईश्वरा का शिलालेख
1.3.2.6 कालीमठ का शिलालेख
1.3.2.7 नाला-मणदेव का शिलालेख
1.3.2.8 अन्य अभिलेख
1.3.3. कुमाऊँ में संस्कृत साहित्य की परम्परा
1.3.3.1 आचार्य हरिहर एवं उनके ग्रन्थ
1.3.3.2 केदार पाण्डे एवं उनके ग्रन्थ
1.3.3.3 राजा रूद्रचन्द्रदेव एवं उनके ग्रन्थ
1.3.3.4 रूद्रमणि जोशी एवं उनका साहित्य
1.3.3.5 अनन्तदेव एवं उनका साहित्य
1.3.3.6 पण्डित शिवानन्द पाण्डे एवं उनका साहित्य
1.3.3.7 कुमाऊँ में प्राप्त अभिलेख
1.4 सारांश
1.5 पारिभाषिक शब्दावली
1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री
1.8 निबन्धात्मकप्रश्न

1.1 प्रस्तावना:-

उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएँ इस प्रथम खण्ड की ''उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा'' यह प्रथम इकाई है। इस इकाई में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ एवं गढ़वाल दोनों ही मण्डलों में संस्कृत साहित्य की प्राप्त परम्परा का उल्लेख किया जा रहा है। इस इकाई में उत्तराखण्ड में प्राप्त संस्कृत में अंकित अभिलेखों, ताम्रपत्रों आदि के साथ-साथ उपलब्ध प्राचीन संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकारों के विषय में चर्चा की जा रही है।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप उत्तराखण्ड में प्राप्त संस्कृत साहित्य की परम्परा से सम्बन्धित प्राचीन अभिलेखों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों तथा संस्कृत भाषा में लिखित प्राचीन साहित्य के विषय में भलीभाँति जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1.2 उद्देश्य:-

- प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप अच्छी प्रकार बता सकेंगे कि उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य का सर्वप्रथम प्रणयन कब हुआ।
- अच्छी तरह समझा सकेंगे कि उत्तराखण्ड में ही सर्वप्रथम वेदादि शास्त्रों की रचना हुई।
- बता पाएंगे कि उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य का लिखित रूप सर्वप्रथम अभिलेखीय सामग्री के रूप में प्राप्त होता है।
- समझा पाएंगे कि अभिलेख एवं शिलालेख उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य परम्परा की प्रथम सामग्री है।
- भलीभाँति बता सकेंगे कि उत्तराखण्ड कें गढ़वाल क्षेत्र में कौन-कौन से संस्कृत में अंकित लेख कहाँ प्राप्त हुए हैं।
- समझा सकेंगे कि कुमाऊँ में संस्कृत साहित्य का लिखित स्वरूप प्राचीन काल में कब से प्राप्त होता है।
- बता सकेंगे कि कुमाऊँ में 17 वीं सदी तक कौन-कौन से संस्कृत साहित्यकार हुए।
- कुमाऊँ में प्राप्त संस्कृत के अभिलेखों के बारे में अच्छी तरह बता पाएंगे।

1.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:-

आप इस बात से भलीभाँति परिचित होंगे कि उत्तराखण्ड को देव भूमि कहा जाता है। यह क्षेत्र पुरातन काल से ही देवी-देवताओं की वासस्थली रहा है। यहाँ की प्रत्येक घाटी, शिखर, वनखण्ड किसी न किसी ऋषि-मुनि या देवी-देवता के नाम पर है। अतः निश्चय ही प्राचीन काल से ही देववाणी (संस्कृत) का प्रभाव भी यहाँ पर रहा होगा। इसके प्रमाण विभिन्न अभिलेखों, ताम्रपत्रों एवं शिलालेखों के रूप में तथा समय-समय पर प्राप्त प्राचीन संस्कृत साहित्य की पाण्डुलिपियों के रूप में हमारे सामने आते रहे हैं।

आज के उत्तराखण्ड को आप पूर्व में उत्तर प्रदेश के ही एक भाग के रूप में जानते है जो 9 नवम्बर सन 2000 ईसवी में अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। आप यह भी जानते होंगे कि प्राचीन काल में भी यह क्षेत्र उत्तराखण्ड नाम से जाना जाता था। आप जान लें कि स्कन्दपुराण में उत्तराखण्ड के गढ़वाल एवं कुमाऊँ को केदारखण्ड एवं मानसखण्ड के रूप में कहा गया है। इनमें गढ़वाल एवं कुमाऊँ का सुरम्य एवं प्रामाणिक वर्णन प्राप्त होता है। ऋषि-मुनियों की तपस्थली तथा देवी-देवताओं की वासभूमि के रूप में उत्तराखण्ड की पहचान पुरातन है। शिव-पार्वती का तो यह स्थान ही माना जाता है। भारतवर्ष के उत्तर में स्थित हिमशिखरों से सुशोभित उत्तराखण्ड का संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि में विशेष योगदान है। ऐसा माना जाता है कि हिमालय की कन्दराओं और नदियों के संगम तटों पर की वैदिक ऋषियों को वेद मंत्रों का साक्षात्कार प्राप्त हुआ था।- **''उपगह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियः विप्रोऽजायत्''**

उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की अजस्र धारा पुराने जमाने से ही अविरल रूप से चली आ रही है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में अनेकों हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के होने की प्रबल संभावना व्यक्त की जाती है लेकिन यथासमय प्रकाश में न आ पाने से यह अमूल्य निधि अब नष्ट भ्रष्ट होकर लुप्तप्राय हो चली है।

उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा को आप गढ़वाल में संस्कृत साहित्य की परम्परा तथा कुमाऊँ में संस्कृत साहित्य की परम्परा के रूप में विभाजित कर अधिक सरलता पूर्वक समझ सकेंगे। अतः इसी रूप में हम इसका वर्णन करेंगे -

1.3.1 गढ़वाल में संस्कृत साहित्य की परम्परा:-

गढ़वाल और कुमाऊँ भारतीय समाज के लिए साहित्यिक, धार्मिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक आकर्षण का विषय रहे हैं। भारतीय साहित्य का मूल वैदिक साहित्य है। गढ़वाल, जिसे स्कन्दपुराण में केदारखण्ड के नाम से कहा गया है, में संस्कृत का मूल स्वरूप वैदिक काल

से है। संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति और समाज अपने भावों को अभिव्यक्ति देता है। भाषा के सदैव दो रूप रहे है। एक राजनैतिक काम-काज में प्रयुक्त होने वाली तथा समाज के प्रबुद्ध वर्ग के द्वारा साहित्य में प्रयुक्त होने वाली भाषा तथा दूसरी बोलचाल की भाषा। प्राचीन काल में वैदिक ऋषि मुनियों की तपोस्थली, उनके विद्याकेन्द्र (आश्रम), साधना भूमि आदि हिमालय की उपपत्यकथाओं में ही थे। इस तथ्य पर विद्वानों में सहमति बनती दिखाई देती है। हिमालय का यह क्षेत्र गढ़वाल (प्राचीन केदारखण्ड) था जहाँ ऋषियों को वेद-मंत्रों का आत्मबोध हुआ।

वैदिक काल का समग्र साहित्य वैदिक संस्कृत में प्राप्त है। अतः मानना होगा कि उस काल की राजभाषा संस्कृत रही होगी। गंगा-यमुना की पवित्र धारा की तरह संस्कृत साहित्य की अजस्र धारा भी हिमालयी क्षेत्र से निकलकर सर्वत्र व्याप्त हुई। ऋग्वेद में जिन अनेकानेक ऋषि परिवार के सूक्त संकलित है उनमें भारद्वाज तथा अत्रि ऋषि का घनिष्ठ सम्बद्ध गढ़वाल प्रदेश से प्रतीत होता है। प्राचीन ऋषियों के अनेक स्थान (विद्याकेन्द्र या आश्रम) आज भी गढ़वाल में उन्हीं के नाम से प्रचलित है।

वैदिक काल के बाद पौराणिक काल के अनेक ऋषि मुनियों के आश्रम भी केदारखण्ड (गढ़वाल) में होने का उल्लेख प्राप्त होता है यथा- नर-नारायण आश्रम, उपमन्यु आश्रम, व्यास आश्रम, कण्व आश्रम, अगस्तमुनि आश्रम, भृगु आश्रम आदि के उल्लेख से यह सिद्ध होता है कि गढ़वाल में संस्कृत की जड़े बहुत गहरी है। इन आश्रमों में गुरू द्वारा शिष्यों को वैदिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी तथा ये आश्रम सतत् वेद-मंत्रों की ध्वनियों तथा यज्ञधूम से व्याप्त रहा करते थे। पौराणिक ग्रन्थों के अन्तःसाक्ष के आधार पर यह तथ्य भी पुष्ट होता है कि बदरीनाथ के समीप सरस्वती के तट पर व्यास और जैमिनी ऋषियों के आश्रम थे। यहीं पर व्यास ने महाभारत और अट्ठारह पुराणों की रचना की थी।

कश्यप और चरक का आश्रम गन्धमादन पर्वत (बदरीनाथ) पर, मरीचि और अंगिरा का आश्रम अलका प्रदेश और वसुधारा के मध्यवर्ती पर्वत के मूल में (अलकापुरी की ओर) कपिल और सनत्कुमारेां का हरिद्वार में वशिष्ठ-अरून्धती का हिमदाश्रम (हिदाऊ में), जनु और जगदन्नि का आश्रम उत्तरकाशी के समीप, गर्ग का आश्रम द्रोणगिरी में, मनु का आश्रम माना (माणा गाँव में), पतंजलि का आश्रम ऋषिकेश के निकट तपोवन में, अगस्त्य व गौतम का आश्रम मन्दाकिनी नदी के तट पर, विश्वामित्र और दुर्वासा का आश्रम ज्योतिर्मठ (जोशीमठ) के पास तपोवन में, पाराशर का यमुनोत्री में, भृगु का केदारकांठा के पास, अत्रि-अनुसूया का गोपेश्वर के

पास, कण्व का आश्रम मालिनि के तट पर कोटद्वार के पास तथा बाल्मीकि का आश्रम पौड़ी के निकट सीतोन्स्यू में होने के प्रमाण मिलते है।

यह संभव है कि जिस गढ़वाल में ऋषि-मुनियों के आश्रम थे जहाँ दिन-रात वेद-मंत्रों की ध्वनि गूँजती थी वहाँ राजकार्य की भाषा संस्कृत रही होगी क्योंकि राज्य की राजभाषा का प्रभाव जन-जीवन एवं समाज की शिक्षा-दीक्षा पर पड़ता ही है। कालान्तर में केदारखण्ड (गढ़वाल) राजनीतिक अस्थिरता के भँवर में फँस गया। फलतः साधनों के अभाव में अपनी प्राचीनतम संस्कृत रचनाओं को सुरक्षित रख पाने में असमर्थ रहा। वे सब काल के गर्त में समा गई। केवल उनका स्मरण कराने वाले स्थान मात्र ही रह गए।लौकिक संस्कृत के महाकवि कुलगुरू कालिदास के काव्यों में वर्णित मास-नक्षत्र, विवाह कर्म, प्राकृतिक सौन्दर्य, अलकापुरी वर्णन, मेघदूतम् के मेघ-मार्ग वर्णन आदि से विद्वानों के इस तर्क को बल मिलता है कि कालिदस की जन्मस्थली गढ़वाल रही होगी। गढ़वाल के अन्र्तगत गुप्तकाशी के निकट स्थित 'कालीमठ' ही वह स्थल है जहाँ मूर्ख कालिदास 'काली देवी' की उपासना करके उनकी कृपादृष्टि से कालान्तर में महाकवि कालिदास बन गए। जनश्रुति है कि आदि शंकराचार्य के गुरू गोविन्दपाद का विद्या केन्द्र (आश्रम) कर्णप्रयाग के पास 'सिमली' में था। इस प्रकार इन विभिन्न ऋषि-मुनियों के नाम पर आधारित आश्रमों की वर्तमान में प्रामाणिकता से यही सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में गढ़वाल में संस्कृत की स्थिति अत्यन्त समृद्ध रही होगी।

1.3.2 गढ़वाल में प्राप्त संस्कृत अभिलेख:-

यद्यपि उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में संस्कृत भाषा में पठन-पाठन, ग्रन्थ लेखन आदि के प्रमाण प्राचीन काल से मिलते है तथापि आप जानते है कि उनमें से अधिकांश कालकवलित हो गया और आज अप्राप्य है तथापि यहाँ प्राप्त अभिलेख प्राचीन काल से गढ़वाल में संस्कृत की समृद्ध परम्परा के परिचायक हैं। इन अभिलेखों का विवरण इस प्रकार है -

1.3.2.1 देवप्रयाग में प्राप्त यात्री नामावली:

देवप्रयाग में दूसरी शताब्दी से पाँचवी शताब्दी तक उत्तराखण्ड (बदरी-केदार) की यात्रा पर आए हुए यात्रियों का नामोल्लेख संस्कृत में प्राप्त होना इस तथ्य का सूचक है कि तब यहाँ संस्कृत भाषा प्रचलन में थी।

1.3.2.2 उत्तरकाशी के शक्तिस्तम्भ का लेख:

उत्तरकाशी के गोपेश्वर तथा वाराहाट में त्रिशूल पर उत्कीर्ण लेख की भाषा भी संस्कृत है। यह लेख 12 वीं शताब्दी का है। इस लेख में गणेश्वर नामक नरेश द्वारा राज-पाट छोड़कर कैलाश प्रस्थान के पश्चात् उसके पुत्र श्रीगृह के राज्यारूढ़ होने का तथा उसके गुणों एवं कीर्ति का वर्णन प्राप्त होता है। यह अभिलेख ''श्रीगृह का त्रिशूल अभिलेख'' कहलाता है।

1.3.2.3. अनुसूया देवी मन्दिर मार्ग पर पाषाण अभिलेख:

इस अभिलेख की भाषा शुद्ध संस्कृत है। इसका समय छठी शताब्दी के आस-पास का है। इसमें राजा सर्व वर्मन से संबंधित विवरण अंकित है।

1.3.2.4 पलेठी का शिलालेख:

गंगा और अलकनन्दा के संगम पर स्थित देवप्रयाग से लगभग 12 किमी. दूर पश्चिमोत्तर में टिहरी के अन्र्तगत पट्टी खास की गहरी घाटी में स्थित पलेठी के प्राचीन मन्दिरों के अवशेषों पर उत्कीर्ण शिलालेख संस्कृत भाषा में है। ये अभिलेख अत्यन्त टूटी-फूटी हालत में है। इनका समय लगभग 7 वीं शताब्दी है। इन अभिलेखों में से एक में तो राजा आदित्यवर्मन, परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर कल्यानवर्मा, आदित्यवर्धन तथा करवर्धन का सन्दर्भ है जबकि दूसरे खण्डित पूर्ण लेख में कल्याणवर्मन् और आदित्यवर्मन के नाम आते हैं।

1.3.2.5 लाखामण्डल-ईश्वरा का शिलालेख:

यह शिलालेख छठी से सातवी शताब्दी वि0 का है। इसकी भाषा परिमार्जित (शुद्ध) संस्कृत है। इसमें द्विजवर्मन् के शासनकाल में ब्रह्मपुर जिले में स्थित कार्तिकेयपुर का वर्णन किया गया है, जो कि वर्तमान जोशीमठ प्रतीत होता है। यह शिलालेख यदुवंशी राजर्षि सेनवर्मन् के आगे उसके पुत्र पौत्र प्रपौत्र आदि वंशावली का वर्णन करता है।

1.3.2.6 कालीमठ शिलालेख:

कालीमठ के मन्दिर की दीवारों पर रूद्रसुनू का शिलालेख संस्कृत भाषा में है। इसका समय 10 वीं से 12 वीं शताब्दी है। यह कत्यूरी कालीन शिलालेख प्रतीत होता है। यह लेख मात्र 18 पंक्तियों का है। इसमें गिरिपति मंदिर के संरक्षक किन्हीं रूद्र नामक सामन्त के पुत्र (रूद्रसुनू)

बालपन में सर्व विजेता बन गए थे और उनके द्वारा ही इस मन्दिर का निर्माण करवाया गया इस आशय का लेख प्राप्त होता है।

1.3.2.7 नाला-मणदेव का शिलालेख:

गुप्तकाशी सं एक मील दूर नाला में एक पत्थर का एक स्तूप है, जो बौद्ध धर्म के चिह्न का अवशेष प्रतीत होता है। नाला के समीप 'ललितामाई' मन्दिर के पास स्थित छोटे मन्दिर के द्वार के ऊपर एक शिलालेख है। यही मणदेव का शिलालेख कहलाता है। इसमें 1203 वि0 में मन्दिर निर्माण का उल्लेख संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।

1.3.10 अन्य अभिलेख:

इनके अलावा चाँदपुर गढ़ी का शिलालेख (कनकपाल से संबंधित), गोपेश्वर में प्राप्त अशोकचल्ल का अभिलेख, वाराहाट (उत्तरकाशी) में प्राप्त त्रिशूल के निचले भाग का लेख, देवप्रयाग के क्षेत्रपाल के मन्दिर-द्वार के ऊपर सहजपाल का शिलालेख, देवप्रयाग में ही रघुनाथ मंदिर के पीछे वामन गुफा के प्रवेश स्थान के ऊपर अंकित शिलालेख, महाराज फतेहशाह के सिक्के का लेख, उत्तरकाशी के परशुराम मंदिर पर अंकित अभिलेख, यहीं के विश्वनाथ मंदिर द्वार पर अंकित अभिलेख, टिहरी के बदरीनाथ मंदिर के ऊपर दरवाजे पर अंकित अभिलेख तथा कत्यूरी अभिलेख, जिनमें पाँच ताम्रपत्रांकित लेख और एक शिलालेख है, भी गढ़वाल में संस्कृत की समद्ध परम्परा को दर्शाते है।संस्कृत भाषा में लिखित समृद्ध अभिलेखीय परम्परा के होते हुए भी गढ़वाल में संस्कृत भाषा में लिखित प्राचीन साहित्य अनुपलब्ध है। संभवतः राजनीतिक अस्थिरता ने प्राचीन साहित्य को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था अथवा गोरखों के राज्य में वह नेपाल ले जाया गया। चाहे जो भी कारण रहा हो उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में हमें प्राचीन लिखित संस्कृत साहित्य अप्राप्य ही है।

1.3.3. कुमाऊँ में संस्कृत साहित्य की परम्परा:

गढ़वाल की अपेक्षा कुमाऊँ में प्राचीन काल से ही संस्कृत साहित्य प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। यहाँ 8 वीं शताब्दी के बाद अनेकानेक कवि तथा साहित्यकार हुए उनके द्वारा रचित पर्याप्त संस्कृत साहित्य उपलब्ध है। कुमाऊँ में चन्द राजाओं का आगमन 700 ई0 के लगभग हुआ। इससे पूर्व यहाँ कत्यूरियों का राज था। उस काल के अनेक ताम्रपत्र, शिलालेख

आदि प्राप्त हुए हैं जो संस्कृत भाषा में अंकित है। चन्दों का शासन काल तो कुमाऊँ में संस्कृत के विकास एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आप जानते होंगे कि चन्द नरेश संस्कृतानुरागी थे। वे काशी से संस्कृत विद्वानों को अपने यहाँ आमंत्रित करते थे। उन्होंने अनेक संस्कृत पाठशालाएँ खुलवाई। योग्य विद्यार्थियों को वे राजकीय खर्च पर विद्याध्ययन हेतु काशी भी भेजते थे। अनेक चन्द नरेश स्वयं संस्कृतज्ञ एवं साहित्यकार भी थे। चन्द शासकों ने संस्कृत को राजभाषा का दर्जा दिया। इस तरह यह काल संस्कृत के लिए स्वर्णिम काल माना जाता है।वर्तमान में उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि कुमाऊँ के सर्वप्रथम ज्ञात साहित्यकार श्रीहरिहर है। आगे यह परम्परा अविच्छिन्न रही। कुमाऊँ के विद्वान संस्कृत साहित्यकारों का परिचय इस प्रकार है -

1.3.3.1 आचार्य हरिहर एवं उनके ग्रन्थ:

श्रीहरिहर कुमाऊँ में चन्दवंशी राजाओं के मूल पुरूष सोमचन्द के साथ यहाँ बदरीनाथ की यात्रा हेतु आए और यही बस गए। राजा सोमचन्द का समय इतिहासकारों के अनुसार 700-721 ई. के आस-पास माना गया है। अतः हरिहर का समय भी तभी का माना जा सकता है। हरिहर मूलतः कान्यकुब्ज प्रदेश के पैती ग्राम के कश्यप गोत्री ब्राह्माण थे। कुमाऊँ में ये कश्यप गोत्री 'पाण्डे' कहलाते हैं। श्रीहरिहर ने पारस्कर गृहयसूत्र पर 'भाष्य' की रचना की थी। कुमाऊँ में प्रचलित कर्मकाण्ड में श्रीहरिहर का नाम आदर से लिया जाता है। हरिहर विरचित 'भाष्य ग्रन्थ में तीन काण्ड और 51 कण्डिकाएं है। प्रथम काण्ड में होमविधि, अरणिमन्थन, विवाहविधि के प्रधान अंग, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण तथा अन्नप्राशन आदि संस्कारों का वर्णन है। द्वितीय काण्ड में चूड़ाकर्म, उपनयन, ब्रह्मचर्यव्रत, पंचमहाज्ञविधि, इन्द्रयज्ञ तथा सीतायज्ञ प्रधान रूप से वर्णित हैं। तृतीय काण्ड में नवान्नभोज विधि, अशौच विधान, प्रायश्चित विधान, सभा प्रवेश विधि, हस्त्यारोहरण, कर्मविधान तथा अष्टकाश्राद्धपद्धति आदि विषयों का समावेश है।

1.3..3.2 केदार पाण्डे एवं उनके ग्रन्थ:

श्रीहरिहर के बाद 12 वीं शताब्दी में जन्में श्री केदारपाण्डे द्वारा विरचित ग्रन्थ 'वृत्तरत्नाकर' ही आज उपलब्ध है। बीच की कालावधि की कोई रचना आज प्राप्त नहीं है। संभवतः इस बीच की रचनाएं नष्ट हो चुकी है। केदार पाण्डे आचार्य हरिहर की ही 10 वीं पीढ़ी में

उत्पन्न पद्मापति पाण्डे के पुत्र थे। यद्यपि पद्मापति स्वयं शैवदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान थे किन्तु इनका कोई ग्रन्थ आज नहीं मिलता। केदार पाण्डे का 'वृत्तरत्नाकर' छन्दशास्त्र विषयक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसका रचनाकाल 1135 ई. के आस-पास मान्य है। यह केदार पाण्डे की एकमात्र रचना है। 136 श्लोकों में विरचित यह ग्रन्थ 6 अध्यायों में विभक्त है। इस ग्रन्थ की 30 से अधिक टीकाएँ हो चुकी, जिनमें विक्रम भट्ट की टीका सबसे पुरानी मानी जाती है।

1.3..3.4 राजा रूद्रचन्द देव एवं उनके ग्रन्थ:

राजा रूद्रचन्द देव द्वारा विरचित चार ग्रन्थ उषारागोदया नाटिका, श्यैनिकशास्त्रम्, तथा त्रैवर्णिक धर्मनिर्णय तथा ययातिचरितम् है। इनमें से उषारागोदया नाटिका सन् 1979 ई. में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। श्यैनिकशास्त्रम् प्राचीन काल में प्रचलित आखेट विद्या का प्रामाणिक ग्रन्थ है तो त्रैवर्णिक-धर्मनिर्णय स्मृति तुल्य (मनुस्मृति आदि की तरह) ग्रन्थ है। इनका ययातिचरितम् ग्रन्थ अनुपलब्ध है। राजा रूद्रचन्द मुगल सम्राट अकबर के समकालीन थे। इनका समय 16 वीं सदी का उत्तरार्ध माना जाता है।

1.3.3.5 रूद्रमणि जोशी एवं उनका साहित्य:

रूद्रमणि अपने समय के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। ये चन्द राजा बाजबहादुर के सभा पण्डित थे। अतः इनका समय सन् 1638-1678 ई0 मान्य है। ये अल्मोड़ा से कुछ दूरी पर स्थित 'माला' गाँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम श्री महादेव था। पण्डित रूद्रमणि की दो रचनाएँ है - 'रूद्रप्रदीप' एवं 'ज्योतिषचन्द्रार्क'। रूद्रप्रदीप इनकी पहली रचना है। इसमें कवि ने सूक्ष्म रूप से फलित विषयों का निर्देश किया है। रूद्रप्रदीप में पाँच अध्याय है, जिनमें विभिन्न कर्मकाण्डों की पद्धतियों का परिचय छंदोबद्ध रूप में दिया गया है। यह ग्रन्थ अब तक अप्रकाशित है। ज्योतिषचन्द्रार्थ में कुल आठ अध्याय हैं जिनमें से प्रारम्भ के पाँच अध्याय प्रकाशित भी हो चुके हैं। रूद्रमणि ने 'काशिका' नाम से इस ग्रन्थ की टीका भी स्वयं लिखी है।

1.3.3.6 अनन्तदेव एवं उनका साहित्य:

अनन्तदेव राजा बाजबहादुरचन्द के दरबारी कवि थे। अतः इनका समय भी 17 वीं शताब्दी का उत्तर भाग सिद्ध होता है। अनन्तदेव मूलतः महाराष्ट्र के थे किन्तु इन्होंने अपनी

संस्कृत साधना बाजबहादुर के आश्रय में की। अनन्तदेव की संस्कृत साहित्य को देन अमूल्य है। इन्होंने निम्नलिखित ग्रन्थों की रचना की -

(1) स्मृतिकौस्तुभ

(2) प्रायश्चितदीपिका

(3) कालबिन्दुनिर्णय

(4) अग्निहोत्रप्रयोग

(5) आग्रहायणप्रयोग

(6) चातुर्मास्य प्रयोग

(7) अन्त्येष्टि पद्धति

(8) नक्षत्र सत्र प्रयोग

(9) भगवन्नामकौमुदी प्रकाश टीका

(10) भगवद्भक्तिनिर्णय

(11) मथुरासेतु

(12) मीमांसान्यायप्रकाशी की टीका(भट्टालंकार)

(13) वाक्य भेदभाव

(14) देवतातत्त्वविचार

(15) सिद्धान्त तत्त्व

1.3.3.7 पण्डित शिवानन्द पाण्डे एवं उनका साहित्य:

शिवानन्द पाण्डे लिखित दो संस्कृत काव्यों का उल्लेख मिलता है- 'कल्याणचन्द्रोदय' एवं 'कूर्माचलकाव्य'। शिवकवि चन्द नरेश कल्याणचन्द के राजगुरू एवं दरबारी कवि थे। इनका समय सन् 1670 से 1750 ई0 सिद्ध होता है। अपने आश्रयदाता कल्याण चन्द की कीत्रि गाथा के रूप में इन्होंने कल्याणचन्द्रोदय काव्य लिखा। यह एक ऐतिहासिक काव्य है। इनका कूर्माचलकाव्य आज प्राप्त नहीं है।

1.3.3.8 कुमाऊँ में प्राप्त अभिलेख:

कूर्माचल में संस्कृत साहित्य की एक समृद्ध परम्परा रही। इस परम्परा में 8 वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक के साहित्यकारों के बारे में आप जान चुके हैं। इससे पूर्व भी कुमाऊँ में

संस्कृत के प्रचलन के संकेत मिलते हैं। विक्रम की तीसरी सदी के प्रारंभिक वर्षों के कुछ सिक्के अल्मोड़ा में मिले हैं, जिनमें संस्कृत से प्रभावित पालि तथा प्राकृत भाषा का प्रयोग मिलता है। तीसरी शताब्दी के बाद के प्राप्त सभी अभिलेख संस्कृत भाषा में छन्दोबद्ध हैं। सातवीं सदी के बाद के जो ताम्रपत्रांकित अभिलेख मिले हैं उनमें समास बहुत संस्कृत गद्य-पद्य की वही छटा देखने को मिलती है जो दण्डी, बाण और सुबन्धु की शैली में दिखाई देती है।कुमाऊँ में संस्कृत भाषा में लिखे सबसे प्राचीन लेख अल्मोड़ा जनपद के 'तालेश्वर' से प्राप्त हुए हैं। ये लेख छठी से सातवीं सदी के हैं। अल्मोड़ा के जागेश्वर के महामृत्युंजय मन्दिर में संस्कृत भाषा में अंकित लेख 8 वीं से 10 वीं शताब्दी का है। इसी तरह बागेश्वर के बैजनाथ मन्दिर में 11 वीं सदी का संस्कृत भाषा में लिखा लेख प्राप्त होता है। चन्द नरेश रूद्रचन्द देव द्वारा सन् 1568 ई. से सन् 1596 ई. तक जारी किए गऐ 6 ताम्रपत्रांकित लेख संस्कृत भाषा में होने की जानकारी मिलती है। इसके अलावा राजा लक्ष्मणचन्द (1620 ई.) का, त्रिमलचन्द का (1633 ई.), बाजबहादुरचन्द का (1720 ई.) ताम्रपत्र संस्कृत भाषा में है। इन अभिलेखों से कुमाऊँ में संस्कृत की अजस्र धारा का परिचय मिलता है।उत्तराखण्ड में आगे भी संस्कृत में साहित्य रचना लगातार होती रही। जिनका उल्लेख आगे की इकाईयों में किया जाएगा।

1.4 सारांश:-

उत्तराखण्ड की पावन धरती, हरियाली से परिपूर्ण वातावरण कल-कल करती नदियों की पवित्र धारा, उत्तुंग हिमाच्छादित पर्वत शिखर, ऐसा वातावरण किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को कवि बना देने के लिए पर्याप्त है। अतः उत्तराखण्ड यदि प्राचीन काल से ही मेधावी ऋषि-मुनियों और साहित्यकारों की कर्मभूमि बना रहा तो इसमें आश्चर्य कैसा ?

उत्तराखण्ड के गढ़वाल एवं कुमाऊँ दोनों क्षेत्रों में अनेकानेक अभिलेख- ताम्रपत्र-शिलालेख आदि की प्राप्ति होना इस क्षेत्र में संस्कृत के प्रचलन के ठोस सबूत है। गढ़वाल में यद्यपि प्राचीन संस्कृत साहित्य आज उपलब्ध नहीं है तथापि निश्चित रूप से वहाँ संस्कृत साहित्य की स्थिति रही होगी जो राजनीतिक अस्थिरता और विदेशी आक्रमण के चलते या तो नष्ट हो गया या अन्यत्र ले जाया गया। कुमाऊँ में प्राप्त अभिलेखीय सामग्री तथा लिखित संस्कृत साहित्य इस क्षेत्र में संस्कृत साहित्य की उत्कृष्ट परम्परा के परिचायक है। इस इकाई में 17 वीं शताब्दी पर्यन्त ही उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा का वर्णन किया गया है क्योंकि

इससे आगे के कालखण्डों में प्राप्त संस्कृत साहित्यकारों एवं उनके साहित्य का उल्लेख आगे की इकाईयों में किया जाएगा।

अभ्यास प्रश्न:

टिप्पणी:

(1) पलेठी का शिलालेख

(2) उत्तरकाशी के शक्ति स्तम्भ का लेख

(3) अनन्तदेव एवं उनका साहित्य

(4) कुमाऊँ में प्राप्त अभिलेख

बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. किस पुराण में उत्तराखण्ड का उल्लेख 'केदारखण्ड-मानसखण्ड' के रूप में आया है-

(क) अग्निपुराण

(ख) मत्स्य पुराण

(ग) स्कन्दपुराण

(घ) गरूढ़पुराण

2. कपिल एवं सनत्कुमारों का आश्रम कहाँ था?

(क) ऋषिकेश

(ख) हरिद्वार

(ग) केदारनाथ

(घ) कर्णप्रयाग

3. मालिनी नदी के तट पर किसका आश्रम था?

(क) भृगु का

(ख) कण्व का

(ग) गौतम का

(घ) बाल्मीकि

4. पलेठी का शिलालेख किस शताब्दी का है?

(क) चैथी

(ख) पाँचवी

(ग) छठी

(घ) सातवीं

5. आचार्य हरिहर के द्वारा रचित ग्रन्थ है -

(क) श्यैनिकशास्त्रम्

(ख) नक्षत्रसत्र प्रयोग

(ग) पारस्करगृहयसूत्र भाष्य

(घ) त्रैवर्णिक धर्मनिर्णय

6. वृत्तरत्नाकर के रचयिता कौन है-

(क) पिंगल

(ख) केदार पाण्डे

(ग) शिवानन्द पाण्डे

(घ) रूद्रमणि जोशी

रिक्त स्थान पूर्ति

1. उत्तरकाशी के शक्तिस्तम्भ का लेख ..... शताब्दी का है।

2. लाखामण्डल -ईश्वरा के शिलालेख में राजा ..... के शासन का वर्णन है।

3. कालीमठ का शिलालेख ..... से संबंधित है।

4. हरिहर मूलतः ..... के निवासी थे।

5. रूद्रचन्ददेव का ..... ग्रन्थ अनुपलब्ध है।

6. अनन्तदेव के कुल ..... ग्रन्थ प्राप्त होते हैं।

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

1. शिवानन्द पाण्डे का एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ कौन सा है?

2. अनन्तदेव मूलतः कहाँ के रहने वाले थे?

3. कुमाऊँ में संस्कृत भाषा में लिखित सबसे पुराना लेख कहाँ प्राप्त हुआ है।

4. कश्यप और चरक का आश्रम कहाँ पर स्थित था?

5. वाल्मीकि का आश्रम पौड़ी के निकट किस स्थान पर होने के प्रमाण मिलते हैं?

6. आदि शंकराचार्य के गुरू का नाम क्या था?

सत्य/असत्य बताइए

1. वैदिक काल का समस्त साहित्य खड़ी बोली में प्राप्त होता है।

2. गंगा नदी के तट पर व्यास ने पुराणों की रचना की थी।

3. पाराशर का आश्रम यमुनोत्री के पास स्थित था।

4. हरिहर विरचित पारस्करगृहयसूत्र भाष्य में चार काण्ड है।

5. स्मृतिकौस्तुभ अनन्तदेव की रचना है।

6. रूद्रचन्द देव द्वारा दिए गए 6 ताम्रपत्रांकित लेख प्राप्त होने का प्रमाण मिलता है।

1.5 पारिभाषिक शब्द/कठिन शब्द:-

पाण्डुलिपि: हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थ। पुराने जमाने में भूर्जपत्र पर लेख अंकित किये जाते थे। भूर्जापत्र सफेद रंग के होते है। इस पर अंकित प्राचीन ग्रन्थ पाण्डुलिपि के रूप में होते थे। यद्यपि आज लगभग सौ वर्ष पुराने कागज पर अंकित ग्रन्थ यदि अप्रकाशित हो तो वह हस्तलिखित प्रति पाण्डुलिपि कही जाती है।

अभिलेख: ऐसे प्राचीन लेख, जो ताम्रपत्र, शिला, इष्टिका या काष्ठ आदि पर अंकित हो और किसी प्राचीन ऐतिहासिक तथ्य को प्रस्तुत करते हो अभिलेख कहे जाते है।

टीका: किसी सूत्र ग्रन्थ की सरल रूप में की गयी विस्तृत व्याख्या ही टीका कहलाती है।

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:-

टिप्पणी

1. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 1.3.6 देखें।

2. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 1.3.4 देखें।

3. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 1.3.11.7 देखें।

बहुविकल्पीय

1. ग

2. ख

3. ख

4 .घ

5. ग

6. ख

रिक्त स्थान पूर्ति

1. 12 वीं शताब्दी

2. द्विजवर्मन

3. रूद्रसुनू

4. कान्यकुब्ज

5. ययातिचरितम्

6. 15

अतिलघुउत्तरीय

1. कल्याणचन्द्रोदय

2. महाराष्ट्र

3. तालेश्वर में

4. गन्धमादन पर्वत (बदरीनाथ)

5. सीतोन्स्यू

6. गोविन्दपाद

सत्य/असत्य

1. असत्य

2. असत्य

3. सत्य

4. असत्य

5. सत्य

6. सत्य

1.7 सन्दर्भ गन्थ/सहायक सामग्री:-

1. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन, डाँ. प्रेमदत्त चमोली

2. कूर्मांचल में संस्कृत साहित्य की परम्परा, बसन्तबल्लभ भट्ट

3. कुमाऊँ का इतिहास, बद्रीदत्त पाण्डे

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न:-

1. कुमाऊँ के अभिलेखीय परम्परा का वर्णन कीजिए।

2. गढ़वाल की अभिलेखीय परम्परा पर लेख लिखिए।

3. कुमाऊँ के प्राचीन संस्कृत साहित्यकारों का परिचय दीजिए।

इकाई 2. विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी का जीवन परिचय एवं उनका संस्कृत साहित्य में योगदान

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2. उद्देश्य

2.3 इकाई की पाठ्यसामग्री

2.3.1 विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी के पूर्वज

2.3.2 विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी का जन्म

2.3.3 शिक्षा-दिक्षा

2.3.4 वैवाहिक जीवन

2.3.5 कार्य क्षेत्र

2.3.6 मृत्यु

2.3.7 साहित्यिक कार्य

2.3.7.1 नाटक

2.3.7.2 काव्य

2.3.7.3 भाष्य ग्रन्थ

2.3.7.4 व्याकरण ग्रन्थ

2.3.7.5 दर्शन ग्रन्थ

2.3.7.6 मनोविज्ञान ग्रन्थ

2.3.7.7 खगोल ग्रन्थ

2.3.7.8 ज्योतिष ग्रन्थ

2.3.7.9 कोष ग्रन्थ

2.3.7.10 सामाजिक शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ

2.3.7.11 कथा ग्रन्थ

2.3.7.12 स्त्रोत ग्रन्थ

2.3.7.13 अन्य रचनाएँ

2.3.8. शोधात्मक कार्य

2.3.9 राजनीतिक कार्य

2.3.10 सामाजिक कार्य

2.3.11 कवि की आर्थिक स्थिति

2.3.12 स्वभाव एवं चरित्र

2.3.13 वेशभूषा

2.4 सारांश

2.5 पारिभाषिक शब्दावली

2.6. अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना:-

उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएँ इस प्रथम खण्ड की यह दूसरी इकाई है। इससे पूर्व की इकाई में आप जान चुके हैं कि उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की उत्कृष्ट परम्परा प्राचीन काल से ही सतत् चली आ रही है। प्राचीन काल में संस्कृत यहाँ की राजभाषा थी जिसके प्रमाण गढ़वाल एवं कूर्मांचल में प्राप्त अभिलेखों ताम्रपत्रों तथा उपलब्ध संस्कृत ग्रन्थों के रूप में प्राप्त होते हैं।

इस इकाई में आप उत्तराखण्ड के कूर्मांचल क्षेत्र की संस्कृत की आधुनिक प्रतिभा विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी के पूर्वज, जन्म, शिक्षा-दीक्षा, वैवाहिक जीवन, कार्यक्षेत्र आदि के बारे में विस्तार से जानेंगे। इसके साथ ही श्रीकृष्ण जोशी की रचनाओं तथा उनके राजनीतिक, सामाजिक कार्यों के बारे में, उनकी आर्थिक स्थिति उनके स्वभाव चरित्र वेशभूषा आदि से भी भलीभाँति अवगत हो सकेंगे।

2.2 उद्देश्य:-

- प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप बता सकेंगे कूर्मांचल के 19वीं 20वीं शताब्दी के संस्कृत के महान साहित्यकार श्रीकृष्ण जोशी के पूर्वज कौन थे? उनके जन्मस्थल के बारे में आप अच्छी तरह बता पाएंगे।
- आप बता पाएंगे कि कवि की शिक्षा-दीक्षा, वैवाहिक जीवन, कार्यक्षेत्र कैसा था तथा उनकी मृत्यु कब हुई।
- समझा पाएंगे कि कि श्रीकृष्ण जोशी साहित्यिक कार्य क्षेत्र कितना विस्तृत था।
- श्रीकृष्ण जी की प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं के बारे में भलीभाँति जानकारी दे सकेंगे।
- भलीभाँति बता सकेंगे कि कवि श्रीकृष्ण जोशी को अपनी विद्वता के कारण किस-किस तरह के सम्मान एवं उपाधियाँ प्राप्त हुई।
- समझा पाएंगे कि श्रीकृष्ण जोशी ने तत्कालीन राजनीति में किस तरह भागीदारी की।
- भलीभाँति बता सकेंगे कि श्रीकृष्ण जोशी ने समाज की भलाई के लिए क्या-क्या किया।

- भलीभाँति बता पाएंगे कि श्रीकृष्ण जोशी का स्वभाव, वेशभूषा आदि तथा उनकी आर्थिक स्थिति कैसी थी।

2.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:-

इससे पूर्व की इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जान चुके हैं कि उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र की अपेक्षा कुमाऊँ में संस्कृत भाषा में लिखित साहित्य (काव्य, नाटक, व्याकरण, ज्योतिष आदि से सम्बन्धित ग्रन्थ) प्राचीन काल (लगभग 8 वीं शताब्दी) से ही प्राप्त होता है। संस्कृत साहित्य की अविरल धारा कुमाऊँ में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक निरन्तर अविरल रूप से प्रवाहित होती चली आ रही है।

यहाँ संस्कृत में लिखित सर्वप्रथम ग्रन्थ आचार्य हरिहर का पारस्करगृह्यसूत्र पर भाष्य प्राप्त होता है। इनका समय 700-721 ई0 के मध्य माना जाता है। आचार्य हरिहर के बाद लगभग 450 वर्षों का काल अन्धकार पूर्ण है अर्थात् इस काल की कोई कृति आज प्राप्त नहीं होती और न किसी रचना का उल्लेख ही कहीं मिलता है। हरिहर के पश्चात् 12 वीं शताब्दी में केदार पाण्डे हुए जिनका 'वृत्तरत्नाकर' छन्दशास्त्र का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसके बाद 15 वीं शताब्दी में राजा रूद्रचन्ददेव हुए जिनके तीन उपलब्ध ग्रन्थ है- ऊषारागोदया नाटिका, श्यैनिकशास्त्रम् तथा त्रैवर्णिकधर्मानिर्णय। इनकी एक रचना ययातिचरितम् अनुपलब्ध है। उस का उल्लेख मात्र मिलता है। इसके बाद कूर्माचल में संस्कृत साहित्यकारों की एक दीर्घ परम्परा प्राप्त होती है जिनमें रूद्रमणि, अनन्तदेव, भगीरथ पाण्डे, पण्डित लक्ष्मीपति पाण्डे, पण्डित पद्मदेव पाण्डे, पण्डित शिवानन्द पाण्डेय, त्रिलोचन जोशी, भवानन्द, प्रेमनिधि पन्त, प्राणमंजरी (कवियित्रि), धरणीधर पन्त, हरिदत्त जोशी, विश्वेश्वर पाण्डे, हरिकृष्ण पन्त, हरिवल्लभ उप्रेती, गणितज्ञ लक्ष्मीपति, कृष्णदेव, पण्डित लोकरन्त पन्त गुमानी, सुकृतिदत्त पन्त, दुर्गादत्त पन्त, पण्डित घनानन्द पन्त, रामदत्त पन्त, गुणानन्द, पण्डित गंगादत्त शास्त्री, देवीदत्त पाण्डे, केदारदत्त जोशी, नित्यानन्द पन्त, तारादत्त पन्त, जनार्दन शास्त्री, तारादत्त जोशी, प्रेमवल्लभ शर्मा, तथा भोलादत्त पाण्डे, आदि स्वनाम धन्य संस्कृत साहित्यकारों के नाम उल्लेखनीय हैं।कूर्माचल के इन्हीं सुप्रसिद्ध, संस्कृत साहित्यकारों की परम्परा की एक मजबूत कड़ी है विद्याभूषा श्रीकृष्ण जोशी। अब आपके समक्ष उनके जीवन-परिचय एवं रचना संसार को प्रस्तुत किया जा रहा है-

2.3.1 श्रीकृष्ण जोशी के पूर्वज:

श्रीकृष्ण जोशी के पूर्वज कन्नौज के निकट असनी गाँव के भारद्वाज गोत्री ब्राह्मण थे। इस वंश के श्री लंकाराज ज्योतिर्विद राजा सोमचन्द के साथ ही तीर्थयात्रार्थ कुमाऊँ आए और यहीं बस गए। यहाँ उन्हें शिलग्राम की जागीर मिली और वे शिल्वाल के जोशी कहे जाने लगें। इनके वंशज पृथ्वीराज बाद में अल्मोड़ा आकर बस गये। प्राप्त जानकारी के अनुसार पृथ्वीराज के पश्चात् इस वंश में क्रमशः कपिलराज, नीलराज, रूद्रदेव, ब्रह्मदेव एवं शिवदेव के तीन पुत्रों में जयाकर शिल्वाल हाट वंश का मूल पुरूष हुआ तथा प्रभाकर के वंशज जोशी खोला के रजांगी जोशी कहलाए। मझले दिवाकर के वंश में आगे क्रमशः रूधाकर, रश्मिदेव एवं देवनिधि हुए। देवनिधि के वंशज मकेड़ी के जोशी कहलाए। आगे इसी वंश में क्रमशः कपिलदेव, यशोधर, श्रीनिवास, श्रीकृष्ण आदि हुए। श्रीनिवास के पश्चात् इस वंश के लोगों का निवास-स्थल चीनाखान, अल्मोड़ा रहा। श्रीकृष्ण के प्रपौत्र गंगादत्त के पौत्र एवं बदरीदत्त जोशी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीकृष्ण जोशी हुए।

2.3.2 श्रीकृष्ण जोशी का जन्म:

जोशी जी का जन्म अल्मोड़ा जनपद के चीनाखान नामक स्थान पर अपने पैतृक मकान में हुआ था। उनकी माता का नाम तुलसी देवी था। बह्सिाक्ष्यों के अनुसार उनका जन्म सन् 1882 ई0 तथा सन् 1883 ई0 में हुआ था, किन्तु अन्तर्साक्ष्य के अनुसार उनकी जन्म तिथि का उल्लेख स्वयं कवि की हस्तलिखित जन्मकुण्डली में सन् 1884 ईसवी में उल्लिखित है।

2.3.3 शिक्षा-दीक्षा:

जोशी की प्रारम्भिक शिक्षा नैनीताल में सम्पन्न हुई। एक अन्य साक्ष्य से ज्ञात होता है कि उनकी हाईस्कूल तक की शिक्षा गवर्मेंट कॉलेज, नैनीताल में हुई थी। जोशी जी ने सन् 1899 ई0 में म्योर सेन्ट्रल कॉलेज, इलाहाबाद से मिडिल परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीण की थी। संभवतः उस समय मिडिल परीक्षा का प्रमाण-पत्र म्योर सेन्ट्रल कॉलेज, इलाहाबाद द्वारा दिया जाता था। सन् 1902 ई0 में इन्ट्रैस (हाईस्कूल) की परीक्षा गवर्मेंट कॉलेज, नैनीताल से प्रथम श्रेणी में तथा सन् 1904 ई0 में इन्टरमीडिएट की परीक्षा रामजे इण्टर कॉलेज, अल्मोड़ा से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। जोशी जी के घर का वातावरण संस्कृतमय था। उनके पिता संस्कृत के अच्छे विद्वान् एवं ज्योतिषि थे। यही कारण था कि बाल्यकाल से ही संस्कृत की ओर उनका विशेष रुझान था। जिन दिनों वे इन्टरमीडिएट के विद्यार्थी थे, उन दिनों उन्होंने सायंकालीन

निःशुल्क संस्कृत पाठशाला में प्रवेश लेकर धर्म एवं दर्शन का अध्ययन भी किया था। श्री जोशी जी इन्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इलाहाबाद चले गये थे। सन् 1906 ई0 में उन्होंने वहाँ के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज से बी0ए0 तथा सन् 1909 ई0 में एल0एल0बी0 की उपाधियाँ प्राप्त की।

2.3.4 वैवाहिक जीवन:

विद्याभूषण पण्डित श्रीकृष्ण जोशी के दो विवाह थे। प्रथम विवाह अनूपशहर निवासी श्री देवीबल्लभ की सुपुत्री नन्दी देवी से हुआ था। कुछ समय बाद नन्दी देवी एक कन्या को जन्म देने के बाद ही स्वर्ग सिधार गई। बन्धुजनों के विशेष आग्रह पर बाद में उसी वंश के श्री चन्द्रबल्लभ की पुत्री सुश्री जानकी देवी से जोशी जी का दूसरा विवाह हुआ। द्वितीय पत्नी ने दीर्घकाल तक सुख-दुखः के क्षणों में आपका साथ निभाया। द्वितीय पत्नी से जोशी जी की कुल ग्यारह सन्तानें हुई जिनमें तीन पुत्र तथा 8 पुत्रियाँ हैं।

2.3.5 कार्य क्षेत्र:-

श्री जोशी जी को 12 अगस्त सन् 1992 ई0 को नौर्थ वेस्ट प्राँविन्सेज के हाईकोर्ट के वकील का प्रथम लाइसेन्स प्राप्त हुआ और 21 अगस्त, 1912 ई0 को दूसरा लाइसेन्स कुमाऊँ हाईकोर्ट का प्राप्त हुआ। इसके आधार पर उन्होंने कुमाऊँ हाईकोर्ट, जो उन दिनों नैनीताल में था, में वकालत प्रारम्भ की। बाद में उन्होंने बम्बई हाईकोर्ट में भी वकालत की। सन् 1912 ई0 से लेकर सन् 1926 ई0 तक उनका मुख्य व्यवसाय वकालत ही था। इनकी वकालत उन दिनों बहुत अच्छी चलती थी। श्रीकृष्ण जोशी ने अपने एक पत्र में लिखा है कि 'सन् 1926 में जब महात्मा गाँधी जी ने कहा कि वकीलों ने ब्रिटिश राज को धर रखा है तो उनके कहने से और सी0आर0 दास के अनुकरण से मैं भी बाँयकाँट आँफ ब्रिटिश कोर्ट में शामिल हो गया तथा अपनी वकालत त्याग दी।' तब वे महामना मदनमोहन मालवीय जी के सम्पर्क में आए। कवि के संस्कृत ज्ञान से प्रभावित होकर मालवीय जी ने उन्हें 200 रूपये प्रतिमाह मानदेय तथा निःशुल्क आवास की सुविधा देकर काशी विश्वविद्यालय के धर्म विभाग में मानद प्रवक्ता पद पर नियुक्ति दे दी। सन् 1937 में उन्हें धार्मिक शिक्षा विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। सन् 1944 में उन्हें काशी विश्वविद्यालय से सेवामुक्त कर दिया गया। काशी से लौटने के बाद वे नैनीताल स्थित अपने आवास कृष्णापुर, तल्लीताल में रहते थे

2.3.6 मृत्यु:-

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में जोशी जी नैनीताल में ही रहते थे। 8 जून 1965 ई0 को प्रातः नौ बज कर पच्चीस मिनट पर 84 वर्ष की अवस्था में वाणी के इस वरद् पुत्र की जीवन लीला समाप्त हो गई है। मृत्यु के समय उनकी अवस्था 82 वर्ष थी। उनकी मृत्यु पर तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली डा0 राधाकृष्णन् ने शोक सन्देश भेजकर उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्ति की थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री जोशी जी द्वारा अपने जीवन काल में किए गए विभिन्न साहित्यक, शोधात्मक, राजनीतिक एवं समाजिक कार्य इस प्रकार है-

2.3.7 साहित्यक कार्य:-

विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी 20 वीं सदी के संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान थे। उन्होंने नाटक, काव्य, दर्शन, मनोविज्ञान, खगोलशास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष और भाष्य आदि सभी विषयों पर समान रूप से अपनी लेखनी चलाई। श्रीकृष्ण जोशी के प्रकाशित ग्रन्थ अल्प है। उनके कुछ ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ नैनीताल (कृष्णापुर) स्थित उनके आवास में तथा कुछ ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ में सुरक्षित है। श्रीकृष्ण जोशी के प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थां का विवरण इस प्रकार है -

2.3.7.1 नाटक:-

यमराजपराजय—

सावित्री-सत्यवान की कथा पर आधारित यह नाटक सात अंकों में विभाजित है। इसकी एक पाण्डुलिपि अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् लखनऊ में तथा दूसरी पाण्डुलिपि नैनीताल में है। यह नाटक लगभग 8'' लम्बी एवं 6'' चैड़ी अभ्यास पुस्तिका में नीली स्याही से कलम द्वारा लिखा गया है। यह एक उच्च कोटि का नाटक है। इसमें सावित्री द्वारा यमराज के पाश से अपने पति सत्यवान को मुक्त कराने हेतु किये गये प्रयासों का सफल चित्रण किया गया है। इससे नारी की इच्छा शक्ति और उसकी दृढ़ भावना का सुस्पष्ट परिचय मिलता है।

श्रीकृतार्थकौशिकम्—

भारत के गौरवमय अतीत की झाँकी प्रस्तुत करने वाला यह नाटक छः अंकों में विभक्त है। इस नाटक का प्रकाशन उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी जी की

अध्यक्षता में संवत् 2032 वि0 (सन् 1975 ई0) में अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, लखनऊ से हुआ। यह नाटक विश्वामित्र जो राजा गाधि के पुत्र विश्वमित्र थे उनकी, युवावस्था के जीवन चरित्र को दर्शाता है। यह श्रृंगाररस प्रधान नाटक है।

2.3.7.2 काव्य:

रामरसायन महाकाव्य—

श्रीकृष्ण जोशी विरचित इस काव्य का दूसरा नाम 'ईष्टसिद्धिः' भी है। राम की महिमाओं का गुणगान करने वाला यह महाकाव्य चैबीस सर्गों में विभक्त है। इसकी पाण्डुलिपि नैनीताल में उपलब्ध है। इस महाकाव्य की एक अपूर्ण पाण्डुलिपि, जिसमें केवल 13 सर्ग हैं, लखनऊ में भी उपलब्ब्ध है। यह गन्थ अप्रकाशित है।

स्यमन्तकनाम् महाकाव्य—

इस अप्रकाशित ग्रन्थ की एक मात्र पाण्डुलिपि नैनीताल में उपलब्ध है। यह महाकाव्य कुल तेरह सर्गों में विभक्त है। इस काव्य ग्रन्थ में पाँच सौ श्लोक है।

वीरभारतकाव्यम्—

इस अप्रकाशित ग्रन्थ की पाण्डुलिपि उपलब्ध नहीं हो पाई। इस काव्य में कुल 9 अध्याय हैं जो विभिन्न शीर्षकों- महासंग्राम वर्णन, प्रतिज्ञात्मक, हेत्वाख्यानात्मक आदि में विभक्त है इस काव्य का उल्लेख मात्र प्राप्त होता है।

संगीतराघवीयम्-

इस ग्रन्थ में कुल 22 गीत हैं और कहीं-कहीं गीतों के अनन्तर श्लोक भी दिये गये हैं। इस ग्रन्थ के द्वारा भी जोशी जी की सीता-राम के प्रति श्रद्धा भक्ति का परिचय मिलता है। यह ग्रन्थ अप्रकाशित है इसकी एक पाण्डुलिपि लखनऊ में सुरक्षित है। दूसरी पाण्डुलिपि नैनीताल में नष्ट प्रायः स्थिति में उपलब्ध है। यह ग्रन्थ जगज्जननी सीता की अर्चना से प्रारम्भ होकर विष्णु के विभिन्न अवतारों, दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ, राम-विवाह, राम वनवास आदि का वर्णन गीतात्मक पद्यों में करता है।

2.3.7.3 भाष्य ग्रन्थ:-

श्रीमद्भगवतगीता श्लोक व्याख्या—

इस ग्रन्थ में गीता के महात्मय प्रतिपादन के साथ-साथ उसके अष्टादश अध्यायों के समस्त श्लोकों की व्याख्या संस्कृत में की गयी है। यह ग्रथ अप्रकाशित है तथा इसकी पाण्डुलिपि लखनऊ में उपलब्ध है।

श्रीमद्भगवतगीता भाष्यम्—

इस अप्रकाशित ग्रन्थ में सर्वप्रथम 105 श्लोकों में ग्रन्थ की भूमिका लिखी है। तत्पश्चात् गीता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अध्यायों पर भाष्य लिखा गया है। संभवतः कवि गीता के अन्य अध्यायों पर भी भाष्य लिखना चाहता था, लेकिन दुर्भाग्यवश यह ग्रन्थ अपूर्ण रह गया।

2.3.7.4 व्याकरण ग्रन्थ

धातुपाठ—

इस ग्रन्थ में 3600 धातुपाठ वर्णक्रमानुसार अंग्रेजी अनुवाद सहित दिये गए हैं। इस ग्रन्थ में पण्डित जनार्दन ज्योतिर्विद द्वारा संकलित धातुपाठों को समुद्धृत किया गया है। यह बालोपयोगी ग्रन्थ है।

धातुपाठ—

इस ग्रन्थ में भी 3266 धातुओं की वर्णक्रमानुसार अंग्रेजी अनुवाद सहित, गणना की गई है।

धातुकोष—

इस ग्रन्थ में भी 3600 धातुओं की वर्णक्रमानुसार अंग्रेजी अनुवाद सहित गणना की गई है।

क्रियाकलाप—

इस ग्रन्थ में भी 4000 धातुओं का संकलन अंग्रेजी अनुवाद सहित किया गया है।

संस्कृत बोधक—

इस बालोपयोगी व्याकरण ग्रन्थ के प्रथम भाग में लघु एवं सरल वाक्यों में संस्कृत के धातुरूपों एवं उपसर्गों का परिचय दिया गया है। तत्पश्चात् लगभग 25 बालोपयोगी लघु कथाएँ दी गई है। द्वितीय भाग में संस्कृत के शब्द रूपों का परिचय देते हुए अनेक लघु कथाएँ दी गई हैं। तृतीय भाग में पूर्व के दो भागों की अपेक्षा लम्बे एवं समासगर्भित वाक्यों का प्रयोग करके लेख एवं कथाएँ दी गई हैं। उपर्युक्त सभी व्याकरण ग्रन्थ अप्रकाशित है और इनकी पाण्डुलिपियाँ नैनीताल में उपलब्ध है।

2.3.7.5 दर्शन ग्रन्थ-

मतिप्रशिक्षशास्त्र अथवा परमतत्वमीमांसा—

इस ग्रन्थ में अंग्रेजी के 'मैटाफिजिक्स' शब्द का संस्कृत में 'मतिप्रशिक्ष' अनुवाद करने के पाश्चात्य दार्शनिकों के विभिन्न सिद्धान्तों का संग्रह एवं उनकी समालोचना की गई है। यह ग्रन्थ गद्य एवं पद्य में निबद्ध है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो चुका है।

सर्वदर्शनमंजूषा: —

इस ग्रन्थ में चार्वाक, कापालिक, योगाचार, माध्यमिक, सौत्रान्तिक बौद्ध, वैभाषिक, आर्हतजैन, पाशुपत, जैमिनी, कुमारिल, कपिल, पंचसाख्य, पातंजल, कणाद, न्याय और वेदान्त- इन सोलह दर्शनों के मुख्य-मुख्य सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ की एक पाण्डुलिपि लखनऊ में तथा दूसरी नैनीताल में उपलब्ध है।

पाश्चात्यदर्यनमंजूषा: —

यह ग्रन्थ लखनऊ से प्रकाशित है। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में भारतीय तत्व ज्ञान की विशिष्टता का प्रतिपादन किया गया है। तत्पश्चात् पाश्चात्य दर्शन के विभिन्न तत्वों की विवेचना की गई है।

कालमीमांसा—

काल की विवेचना प्रस्तुत करने वाला यह एक अप्रकाशित ग्रन्थ है। इसकी एक पाण्डुलिपि नैनीताल में तथा दूसरी लखनऊ में उपलब्ध है। इसमें 54 शीर्षकों में वेद, पुराण एवं ब्राह्मण ग्रन्थों तथा विभिन्न दर्शनों के काल संबंधी मतों का विवेचन किया गया है। विशिष्टाद्वैतदर्शन, वेदान्तशास्त्र, परमार्थसार, पाश्चात्य तत्वदर्शनानि, योगकारिका एवं अद्वैतवेदान्तदर्शन- दर्शन संबंधी ये ग्रन्थ अप्रकाशित है। इनकी पाण्डुलिपियां भी उपलब्ध नहीं हो पाई। इनका उल्लेख मात्र मिलता है।

2.3.7.6 मनोविज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थ:

अंतरंगमीमांसा: —

यह ग्रन्थ चार खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में 30 शीर्षकों के अन्तर्गत अंतरंगमीमांसा के सूत्र, मन का लक्षण, मनोविज्ञान की शाखाओं तथा उसका महत्व आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय खण्ड में बाल मनोविज्ञान से सम्बन्धित विषयों का 38

शीर्षकों के अन्तर्गत विवेचन किया गया है। तृतीय खण्ड में 25 शीर्षकों में चेतना के अनेक प्रकारों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खण्ड धृति भाग है। इसमें 29 शीर्षक है। यह ग्रन्थ अप्रकाशित है।

2.3.7.7 खगोल ग्रन्थ:

खगोलज्ञानम् इस अप्रकाशित ग्रन्थ की दो पाण्डुलिपियाँ लखनऊ में सुरक्षित है। एक पद्य में है और दूसरी गद्य में। पद्यात्मक ग्रन्थ में पृथ्वी के आकार व गति, ऋतुओं, राशियों आदि का उल्लेख मिलता है। ग्रहों एवं महाग्रहों की पारस्परिक दूरी और विभिन्न ग्रहों की सूर्य से दूरी चित्रों की सहायता से मीलों में दिखाई गयी है। गद्यात्मक ग्रन्थ संभवतः अपूर्ण रह गया है। इसमें खगोल ज्ञान के महत्व, वेद-वेदांग में खगोल विषयक ज्ञान आदि को उद्धृत किया गया है और ग्रहों की स्थिति का सचित्र वर्णन किया गया है।

खगोलज्ञान मंजूषा:—

इस अप्रकाशित ग्रन्थ की पाण्डुलिपि नैनीताल में उपलब्ध है। इसमें भी पृथ्वी, आकाश आदि का विस्तार से वर्णन करते हुए विभिन्न ग्रहों की स्थिति, उनकी पारस्परिक दूरी, सूर्य से दूरी एवं गति आदि का वर्णन किया गया है।

2.3.7.8 ज्योतिष ग्रन्थ:

सर्वार्थ चिन्तामणि: —

ज्योतिष से सम्बन्धित यह अप्रकाशित ग्रन्थ जातक प्रधान है। इस ग्रन्थ की एक पाण्डुलिपि नैनीताल में सुरक्षित है। यह ग्रन्थ पुराने कागज पर काली स्याही से कलम द्वारा लिखा गया है।

ज्योतिर्विद कंठभूषण एवं यन्त्रविद्या:—

यह दोनों ज्योतिष संबंधी ग्रन्थ अप्रकाशित है और इनकी पाण्डुलिपि भी उपलब्ध नही हो पायी। इनका उल्लेख 'उत्तराखण्ड भारती' में प्रकाशित लेख में मिलता है।

2.3.7.9 कोष ग्रन्थ:

बहुभाषा क्रियाकोष: यह ग्रन्थ अप्रकाशित है। इस ग्रन्थ में वर्णक्रमानुसार लगभग बीस हजार क्रियाओं के हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और कहीं-कहीं पर उर्दू पर्याय दिए गये है। इसमें कुल 123 पृष्ठ है।

2.3.7.10 सामाजिकशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ:

सामाजिक शास्त्र मंजुषा: इस अप्रकाशित ग्रन्थ की पाण्डुलिपि लखनऊ में उपलब्ध है। इस ग्रन्थ में व्यक्ति के लिए समाज एवं समाज के लिए व्यक्ति के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। समाज के विकास के लिए बालकों के शैक्षिक विकास, कर्म शिक्षा तथा नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। यह ग्रन्थ गद्य में है और इसमें कुल 35 पृष्ठ है।

2.3.7.11 कथा ग्रन्थ:

श्रीकृष्ण जोशी जी ने प्रह्लाद कथा, युधिष्ठिर कथ, पृथु चरित्रम, नारद कथा, श्री भागवत कथा एवं सप्ताध्यायी सत्यनारायण कथा नामक ग्रन्थों की रचना की है। ये सभी अप्रकाशित है। इनकी पाण्डुलिपियाँ नैनीताल में उपलब्ध है। ये ग्रन्थ 8 इंच लम्बी और 6 इंच चौड़ी अभ्यास पुस्तिका में नीली स्याही से कलम द्वारा लिखे गये हैं। श्री भागवत कथा और सप्ताध्यायी सत्य नारायण कथा में लगभ 30-35 पृष्ठ है और अन्य कथा ग्रन्थ मात्र 10-15 पृष्ठों में विरचित हैं।

2.3.7.12 स्तोत्र ग्रन्थ:

श्री गंगामहिम्न स्तोत्रम्: —

इस ग्रन्थ में कवि ने 73 श्लोको में गंगा की पवित्र महिमा का गुणगान किया है। ग्रन्थ में कुल 116 पृष्ठ है।

श्रीकृष्णमहिम्न स्तोत्रम्: —

इस ग्रन्थ में कवि ने 56 श्लोकों में भगवान कृष्ण के विभिन्न रूपों की स्तुति की है। इस ग्रन्थ में ही प्रत्येक श्लोक का आंग्ल एवं हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

श्रीराममहिम्नस्त्रोतम्:—

इस ग्रन्थ में श्रीकृष्ण जोशी ने 72 श्लोंकों में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के चरित्र का मनमोहन चित्रण किया गया है। उपर्युक्त तीनों ग्रन्थों का प्रकाशन स्वयं श्रीकृण जोशी ने हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में धर्माध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए करवाया था।

2.3.7.13 अन्य रचनाएँ:

चरित्रमीमांसा: —

संस्कृत गद्य शैली में विरचित इस ग्रन्थ में लेखक ने चरित्र से सम्बन्धित अनेक वादों यथा - विलासवाद, सुखवाद, सुखैकान्तवाद आदि का उल्लेख करते हुए मानव चरित्र की सम्यक् विवेचना की है। इस अप्रकाशित ग्रन्थ की पाण्डुलिपि लखनऊ में सुरक्षित है।

राष्ट्रीय रामचरितम्:—

इस ग्रन्थ में मर्यादापुरूषोत्तम राम के प्रजा पालक रूप की आराधना मात्र 54 श्लोकों में की गई है। इस अप्रकाशित ग्रन्थ की पाण्डुलिपि नैनीताल में उपलब्ध है।

विज्ञानगीता:—

इस अप्रकाशित ग्रन्थ की पाण्डुलिपि उपलब्ध नही हो सकी। इसका उल्लेख मात्र मिलता है।

हिमालयमहिमा वर्णनम्:—

इस अप्रकाशित ग्रन्थ में नगाधिराज हिमालय की महिमा का वर्णन हुआ है। इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि नैनीताल में उपलब्ध है।

अपथ्यापथ्यम्:—

चिकित्सा संबंधी यह अप्रकाशित ग्रन्थ भी उपलब्ध नही हो सका। इसका उल्लेख मात्र मिलता है।

वृत्तदर्शनविज्ञानम्: —

इस ग्रन्थ का भी उल्लेख मात्र मिलता है। इसकी पाण्डुलिपि उपलब्ध नही हो सकी। जोशी जी के परिजनों से जानकारी मिली कि इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि स्वयं श्रीकृष्ण जोशी ने 7 जनवरी सन् 1957 ई0 को राजकीय संस्कृत विद्यालय काशी में प्रकाशनार्थ भेजी थी, लेकिन काशी से न तो इसका प्रकाशन हुआ और न ही इसकी पाण्डुलिपि को वापस किया गया।

2.3.8 शोधात्मक कार्य:

श्री जोशी जी ने कुमाऊँ की अनेक वंशों की वंशावलियाँ बनाई थीं, जिनमें चन्दवंशी राजाओं की वंशावली के अतिरिक्त, कुमाऊँ के पाण्डे, पंत, जोशी, तिवारी आदि अनेक वंशों की वंशावलियाँ है। ऐसी लगभग 40-42 वंशावलियाँ नैनीताल में उनके आवास में उपलब्ध हैं। यह भी ज्ञात होता है कि जोशी जी ने अल्मोड़ा एवं नैनीताल जिले के अनेक साहित्यकारों एवं उनकी साहित्यिक कृतियों की विवरणिका भी बनाई थी, जो अब तक प्रकाश में नही आ सके थे परन्तु आज यह विवरणिका उलपब्ध नही है।

2.3.9 राजनीतिक कार्य:

भारत के स्वाधीनता आन्दोलनों ने जोशी जी की जीवनधारा को भी प्रभावित किया बाल्यकाल से ही वे राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत थे। यह भी ज्ञात होता है कि वे रंग बिरंगे कागजों पर राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण गीत-कविता आदि रचकर गुप्त रूप से जनता में वितरित किया करते थे। जब ब्रिटिश सरकार ऐसे साहित्य का विनाश करने पर लगी तो जोशी जी के परिवार वालों ने राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण उनके सम्पूर्ण साहित्य को नष्ट कर दिया ताकि वे तथा उनका परिवार ब्रिटिश सरकार की कोपदृष्टि से बच सके। अपने विद्यार्थी जीवन काल में (सन् 1904 ई0 में)कवि ने बंग-भंग आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। सन् 1904 से सन् 1943 ई0 तक इन्होंने भारत के राजनीतिक आन्दोलनों में स्वार्थत्याग पूर्वक भाग लिया था। सन् 1904 से 1919 ई0 तक वे कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते रहे। सन् 1926 ई0 में महात्मा गाँधी के कहने पर उन्होंने अंग्रेजी न्यायालयों के बहिष्कार में शामिल होकर अपनी अच्छी खासी चलती हुयी वकालत त्याग दी। वकालत के दिनों में भी गुप्त रूप से धन आदि के द्वारा कांग्रेस तथा अन्य राजनीतिक संस्थाओं की सहायता किया करते थे। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेते हुए उन्हें कुछ समय तक सर्वश्री सुन्दर लाल, पुरूषोत्तमदास टंडन तथा मन्सूर अली सोख्ते आदि के साथ गुप्तवास भी करना पड़ा था।सन् 1920 ई0 के पश्चात् उन्होंने राजनीति में सक्रिय भागीदारी कम कर दी थी, किन्तु राजनीति से पूर्ण रूपेण पृथक नहीं हुए। उन दिनों वे पर्दे के पीछे रहकर अपने सहयोगियों का मार्ग दर्शन करते थे। स्व0 श्री अम्बादत्त भट्ट, श्री घनानन्द जोशी तथा श्री के0 एन0 गैरोला उनके मार्गदर्शन से कार्य किया करते थे। उस समय उनकी राजनीति दो तरफा थी। एक ओर तो ब्रिटिश सरकार को भ्रम में रखकर, उनकी सरकारी चालों को जान लेते थे तथा दूसरी ओर गुप्त रूप से जनता को राष्ट्रीय हित के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करते थे। देश के बड़े-बड़े राष्ट्रीय नेता; यथा- श्री गोविन्द बल्लभ पन्त एवं हरगोविन्द पन्त आदि राजनैतिक विषयों पर उनसे गुप्त मन्त्राणाएँ किया करते थे।

2.3.10 सामाजिक कार्य:

जोशी जी ने साहित्यिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में तो सक्रिय योगदान दिया ही, इसके साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी सदा आगे रहे। सन् 1926 ई0 से वे महामना मदनमोहन मालवी के साथ जुटकर काशी विश्वविद्यालय के नक्शे बनाते थे। काशी विश्वविद्यालय की

स्थापना के बाद भी चन्दा एकत्रित करने के लिए उन्होंने अनेक स्थानों का भ्रमण किया था। उनकी इसी सेवा से प्रभावित होकर ही मालवीयजी ने उन्हें काशी विश्वविद्यालय में ही संस्कृत के धर्म विभाग में नियुक्त कर दिया था।

नैनीताल बैंक की स्थापना में भी उनका प्रमुख हाथ था। सन् 1910 ई0 में उन्होंने हरिद्वार में ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम बनाने में अपना सर्वस्व लगा दिया था। हरिद्वार में पर्वतीय धर्मशाला की स्थापना में भी उन्होंने सक्रिय योगदान दिया। सन् 1919 ई0 से सन् 1926 ई0 तक कुमाऊँ परिषद के अध्यक्ष पद को भी वे सुशोभित करते रहे। भगवानदास आयोग के सदस्य के रूप में उन्होंने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की मूलभूत भावनाओं को प्रोत्साहित करने में सहयोग दिया। इसी काल में वे 'अखिल भारतीय सनातन धर्म महामण्डल' के सचिव भी रहे। भारतीय पंचाग संशोधन के निमित्त गठित 'चुलैट कमेटी' के सदस्य रहकर उन्होंने भारतीय ज्योतिष विज्ञान के सूत्रपात में योगदान दिया था। इसी चुलैट कमीशन की सिफारिशों के आधार पर ही नैनीताल में वेधशाला की स्थापना की गई थी।

अपने विद्यार्थी जीवन से ही, वे छात्रों को किसी न किसी रूप में सहायता दिया करते थे। जब वे काशी पढ़ने गये तब धनाभाव होने पर उन्होंने अध्ययन के साथ-साथ ट्यूशन भी पढ़ाए। इससे जो भी आय होती थी, उससे अपना खर्च चलाने के साथ ही वे कई अन्य छात्रों को भी आर्थिक सहायता दिया करते थे। जब वे काशी विश्वविद्यालय में कार्यरत थे तब सदैव छात्रों को आवास, भोजन एवं पुस्तकों के रूप में भी सहायता देते थे। वस्तुतः 'विद्या उनका व्यसन था तो विद्यार्थी उनके प्राण थे।' काशी से वापस आने के पश्चात् उन्होंने अपने नैनीताल स्थित आवास में ही एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की थी, जिसमें छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था थी। उन्होंने नैनीताल में पौराणिक साहित्य एवं दर्शन ग्रन्थों का एक विशाल पुस्तकालय भी स्थापित किया था। इस पुस्तकालय की समस्त पुस्तकें उन्होंने बाद में ताड़ीखेत में स्थापित एक आश्रम को दे दी थी। उनका एक निजी पुस्तकालय भी था, जिसकी अधिकांश पुस्तकें मृत्यु से पूर्व वे अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ को समर्पित कर गऐ थे।

श्रीकृष्ण जोशी को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान: —

श्रीकृष्ण जोशी को अपने वैदुष्य के कारण अपने जीवन काल में पर्याप्त सम्मान मिला था। कानून के विद्यार्थी तथा एक सफल अधिवक्ता होते हुए भी मालवीय जी ने पहले सन् 1927 ई0 में उन्हें सम्मानपूर्वक हिन्दू धर्म विभग में मानद प्रवक्ता और बाद में धर्माचार्य के पद पर

अधिष्ठित किया। उनके संस्कृत ज्ञान के कारण सन् 1917 ई0 में भारत धर्म महामण्डल ने उन्हें 'विद्याभूषण' की उपाधि प्रदान की थी। काशी के विद्वत्समाज ने इन्हें 'कवि सुधाशु' की उपाधि से सुशोभित किया था। काशी विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त कर नैनीताल आने के कुछ समय पश्चात् वे मध्य भारत में राजस्थान की ओर चले गये। वहाँ उन्होंने महाराजा आरनोद के पुत्रों को पढ़ाया था। आरनोद के महाराजा ने उनकी विद्वता से प्रसन्न होकर उन्हें एक छोटी सी जागीर प्रदान की थी, किन्तु वे उसका मोह त्याग कर नैनीताल लौट आये।

जोशी जी के मित्र वर्ग में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का नाम सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। मालवीय जी भी उनके प्रति विशेष स्नेह तथा आदर भाव रखते थे। जब श्रीकृष्ण जोशी वहाँ से सेवानिवृत्त हुए तब मालवीय जी को अत्यधिक दु:ख हुआ था। पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त तथा हरगोविन्द पंत भी जोशी जी के अच्छे मित्रों में थे। चतुरानन जोशी जी के संस्मरण से यह जानकारी मिलती है कि गोविन्द बल्लभ पंत म्योर सेन्ट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में उनके सहपाठी रह चुके थे।

उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री के0एम0 मुंशी जी से भी जोशी जी की अच्छी मित्रता थी। उनके नैनीताल प्रवास के समय श्रीकृष्ण उन्हें संस्कृत पढ़ाया करते थे। आरनोद के महाराजा भी आपके प्रति मैत्रीभाव रखते थे और आर्थिक विषमता के दिनों में यदा-कदा आपकी सहायता भी करते थे। आनन्द शंकर बापूभाई ध्रुव जी तथा श्यामचरण पाण्डे आदि प्रतिष्ठित पंडित आपके मित्र थे। इसके अतिरिक्त प्रौद्योगिकी संस्थान, नैनीताल के संस्थापक श्री गंगादत्त पाण्डे, श्री घनानन्द जोशी और श्री अम्बादत्त भट्ट भी आपके मित्रों में थे। श्री चतुरानन जोशी आपके बन्धु एवं अभिन्न मित्र थे।

2.3.11 कवि की आर्थिक स्थिति:

श्रीकृष्ण जोशी का जन्म संयुक्त परिवार में हुआ था। उनके पिता सार्वजनिक निर्माण विभाग में लिपिक पद पर मात्र पचहत्तर रूपये मासिक वेतन पर कार्य करते थे। अतः आर्थिक कठिनाईयों के कारण पिता श्री बद्रीदत्त जोशी दसवी कक्षा के पश्चात उन्हें आगे पढ़ा सकने में असमर्थ थे। जैसे-तैसे उन्होंने इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। बी0ए0 तथा एल0एल0बी0 की शिक्षा भी ट्यूशन करते हुए स्वयं धन जुटाकर प्राप्त की थी। वकालत प्रारम्भ करने के बाद उनकी आर्थिक स्थिति सुधर गयी। इसी बीच दुर्भाग्य से उनके पिता की मृत्यु हो गई। परिवार के साथ ही कर्ज का भारी बोझ भी श्रीकृष्ण के कन्धों पर आ पड़ा। जोशी जी ने इस कर्ज को चुकाने के

अतिरिक्त अपने तीन छोटे भाइयों को कानून की शिक्षा भी दिलवाई। इन दिनों वे स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलनकारियों को भी गुप्त रूप से आर्थिक सहायता देते थे। पंडित गोविन्द बल्लभ पंत तथा हरगोविन्द पंत भी यदा-कदा उनसे आर्थिक सहायता लेते थे। सन् 1926 ई0 में उन्होंने कृष्णापुर नैनीताल में भूमि खरीदी तथा वही पर मकान भी बनवाया।

सन् 1926 ई0 में उन्होंने वकालत त्याग दी तथा मालवीय जी के पास काशी चले गये। वहाँ धर्म विभाग में कार्य करते हुए उन्हें निःशुल्क आवास तथा दो सौ रूपे मानदेय प्राप्त था। उन दिनों परिवार काफी बड़ा था। अतः दो सौ रूपये मिलने पर आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक तो नही कही जा सकती, किन्तु गृहस्थी की गाड़ी जैसे-तैसे चलती रही। आर्थिक विषमताएँ संभवतः उनके भाग्य में लिखी हुई थी। सन् 1944 ई0 में उन्हें धर्माध्यक्ष पद त्यागना पड़ा। तब वे नैनीताल आ गये और पुनः कचहरी जाने की दिनचर्या प्रारम्भ की, किन्तु वकालत का कार्य पूर्ववत् नहीं चल सका। आर्थिक उतार-चढ़ाव के कारण उन्हें वृद्धावस्था में अत्यधिक कष्ट झेलने पड़े।

2.3.12 स्वभाव एवं चरित्र:

श्रीकृष्ण जोशी अत्यन्त मृदु, सहनशील एवं शान्तिप्रिय थे। विषम से विषम परिस्थितियों में भी उनके मुख पर वही चिर परिचित मुस्कान खेला करती थी। हताश होना तो उन्होंने जाना ही न था। वे अत्यन्त वाक्पटु थे। ब्रिटिश काल में जब अंग्रेज न्यायाधीश न्यायालय में उनसे यह कहते कि आप ब्राह्माण पंडित होकर भी कोर्ट में झूठ बोलते है, तब वे बड़े सहज भाव से उत्तर देते थे- ब्राह्मण अथवा पंडित होकर झूठ नहीं बोलता अपितु वही कहता हूँ जो कोर्ट के कागज कहते है। कोर्ट समाप्त होने पर अंग्रेज न्यायाधीश उन्हें 'पंडित जी कागजी झूठ' कहकर एक बार अवश्य संबोधित करते थे, किन्तु जोशी जी इस व्यंग का कभी भी बुरा नहीं मानते थे। परोपकार की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी थी।

अतिथि सत्कार में आपको विशेष सुख मिलता था। अतिथि को देवता तुल्य मानते थे। कृतज्ञता की भावना से भी जोशी जी ओत-प्रोत थे। श्री जनार्दन जोशी जी ने जोशी जी को विद्यार्थी जीवन में आर्थिक सहाया दी थी। वे निःसन्तान थे अतः उनके दिवंगत होने पर जोशी जी 12 वर्ष तक निरन्तर पितृपक्ष में गया जाकर अपने पितरों के साथ ही उन्हें भी पिण्डदान देते थे। लोभ ने जोशी जी का स्पर्श भी नहीं किया था। आरनोद मे महाराजा ने उन्हें एक छोटी सी जागीर दी, किन्तु उन्होंने उसे स्वीकार नही किया।

जोशी जी नित्य ब्राह्म मूहुर्त में उठकर पूजा पाठ करते थे। वैश्वदेव यज्ञ करके तथा किसी अतिथि को भोजन कराने के बाद ही स्वयं भोजन ग्रहण करना उनका नित्य का नियम था। अध्ययन और अध्यापन में उनकी विशेष रूचि थी। वृद्धावस्था में तो पुस्तकें ही उनकी बन्धु एवं मित्र थी। उन्होंने पुस्तकों का विशाल संग्रह किया था। तत्कालीन राजनीति एवं स्वतन्त्रता आन्दोलनों में भी वे रूचि लेते थे। यदा-कदा वे मृदंग बजाकर अपना तथा दूसरों का मनोरंजन करते थे। शतरंज में भी उनकी विशेष रूचि थी।

2.3.13 वेशभूषा:

विद्यार्थी जीवन काल में जोशी जी की वेशभूषा विशुद्ध भारतीय थी। उन दिनों वे धोती, कुर्ता और ऊपर से चादर धारण करते थे तथा सिर पर टोपी पहनते थे। यदा-कदा कुत्ते के ऊपर वास्कट भी पहनते थे। वकालत के दिनों में वे न्यायालय जाते वक्त पैण्ट, कमीज, कोट, पैरों में जूते तथा सिर पर पगड़ी धारण करते थे। उनके हाथ में छड़ी रहती थी।। नाटककार के पुत्र ने बताया कि वे पैण्ट के अन्दर धोती भी अवश्य पहनते थे। अपनी विशेष योग्यताओं के लिए उन्हें अनेक पदक मिले थे। जिन्हें धारण कर वह न्यायालय जाते थे। आँखों पर वे सुनहरे तार की कमानी वाला चश्मा पहनते थे तथा सदैव छोटे रूद्राक्ष की माला धारण करते थे। वे हृष्ट पुष्ट शरीर वाले थे। उनका ललाट चैड़ा, आँखें तेजस्वी, कपोल कुछ अन्दर धँसे हुए, नासिका ऊँची तथा चिबुक छोटी थी। वे बड़ी-बड़ी मूँछें भी रखते थे।

2.4 सारांश:-

हिमालय की गोद में स्थित कूर्माचल की पवित्र धरती में जन्म लेने वाले विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान एवं महान साहित्यकार थे। उन्होंने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में ग्रन्थ रचना करके उसकी अभिवृद्धि में अमूल्य योगदान दिया। नाटक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, व्याकरण, दर्शन, गीता-भाष्य, मनोविज्ञान, खगोल, ज्योतिष, कोषग्रन्थ, सामाजिक शास्त्र, स्तोत्र ग्रन्थ आदि सभी विषयों में अपनी लेखनी का चमत्कार प्रदर्शित किया। इसके साथ-साथ श्रीकृष्ण जोशी ने तत्कालीन राजनीति में स्वयं भी प्रतिभाग किया तथा अन्य क्रान्तिकारियों का मार्गदर्शन भी किया। वे एक सक्रिय सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकत्ता तथा संस्कृत के अनन्य सेवक थे। संस्कृत साहित्य को 20 वीं शताब्दी के इस साहित्यकार की देन अनमोल है।

अभ्यास प्रश्न

टिप्पणी

(1) श्रीकृतार्थकौशिकम् नाटक

(2) रामरसायन महाकाव्य

(3) श्रीकृष्ण जोशी के पूर्वज

बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: यहाँ प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिए गए है, जिनमें से एक सही है। उस सही उत्तर को चुनिए।

1. श्रीकृष्ण जोशी ने कितने नाटकों की रचना की।

(क) तीन (ख) चार

(ग) पाँच (घ) छः

2. श्रीकृष्ण जोशी का जन्म कहाँ हुआ -

(क) नैनीताल (ख) लोहाघाट

(ग) चकराता (घ) अल्मोड़ा

3. श्रीकृष्ण जोशी के पिता का नाम क्या था ?

(क) गंगादत्त (ख) विष्णुवल्लभ

(ग) बदरीदत्त (घ) रूद्रदत्त

4. श्रीकृष्ण जोशी ने इन्टरमीडिएट की परीक्षा कहाँ से पास की -

(क) राजकीय इन्टर कॉलेज, नैनीताल (ख) रैमजे इन्टर कॉलेज अल्मोड़ा

(ग) राजकीय इन्टर कॉलेज, अल्मोड़ा (घ) म्योर सेन्ट्रल कॉलेज इलाहाबाद

5. किसके आग्रह पर श्रीकृष्ण जोशी ने वकालत छोड़ी -

(क) मदन मोहन मालवीय जी के (ख) महात्मा गाँधी जी के

(ग) अपनी पत्नी के (घ) अपने पिता के

6. वकालत छोड़ने के बाद श्रीकृष्ण जोशी ने कहाँ अध्यापन कार्य किया

(क) जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (ख) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

(ग) काशी विश्वविद्यालय (घ) काशी विद्यापीठ

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. श्रीकृष्ण जोशी का प्रकाशित नाटक ..... है।

2. ..... कवि का सामाजिक शास्त्र विषयक ग्रन्थ है।

3. श्रीकृष्ण जोशी को काशी विश्वविद्यालय ले जाने वाले ..... थे।

4. काशी के भारत धर्म महामण्डल ने उन्हें ..... की उपाधि प्रदान की थी।

5. श्रीकृष्ण जोशी का देहान्त 8 जून सन् ..... को हुआ था।

6. इनका दर्शन विषयक प्रकाशित ग्रन्थ ..... है।

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

1. श्रीकृष्ण जोशी का श्रीकृतार्थकौशिक नाटक कब प्रकाशित हुआ?

2. श्रीकृष्ण जोशी ने किससे प्रेरणा पाकर वकालत छोड़ी?

3. जोशी जी का संगीत संबंधी ग्रन्थ कौन सा है?

4. श्रीकृष्ण जोशी का बालोपयोगी संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ का नाम बताइए।

5. श्रीकृष्ण जोशी के स्त्रोत ग्रन्थों के नाम बताइए।

6. कौन से प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्रीकृष्ण जोशी के मित्र थे।

सत्य/असत्य बताइए

1. श्रीकृष्ण जोशी उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र से थे।

2. श्रीकृष्ण जोशी भारतीय पंचाग संशोधन हेतु गठित ''चुलैट कमेटी'' के अध्यक्ष थे।

3. विद्याभूषण इनकी उपाधि थी।

4. 'सर्वार्थ चिन्तामणि' श्रीकृष्ण जोशी की कृति नहीं है।

5. 'अन्तरंगमीमांसा' एक ज्योतिष ग्रन्थ है।

6. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होकर ये नैनीताल बस गए।

नोट: ऊपर दिए गए प्रश्नों के उत्तर इकाई के अन्त में दिए गये हैं किन्तु हमारा सुझाव है कि आप स्वमूल्यांकन हेतु उनसे अपने उत्तरों का मिलान करके देखें।

2.5 पारिभाषिक शब्दावली:

म्योर सेन्ट्रल कॉलेज: आजकल के माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश या उत्तराखण्ड माध्यमिक शिक्षा परिषद की तरह उस समय मिडिल परीक्षा का प्रमाण पत्र ''म्योर सेन्ट्रल कॉलेज इलाहाबाद द्वारा दिया जाता था।

चुलैट कमेटी: भारतीय पंचाग संशोधन के निमित्त गठित समिति का नाम। श्रीकृष्ण जोशी भी इसके सदस्य थे।

मतिप्रशिक्ष: अंग्रेजी के 'मैटाफिजिक्स' शब्द का मतिप्रशिक्ष अनुवाद करके श्रीकृष्ण जोशी ने अपने ग्रन्थ 'मतिप्रशिक्षशास्त्र' में पाश्चात्य दर्शनों का संग्रह एवं समालोचना की।

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:-

टिप्पणी:

1. 'श्रीकृतार्थकौशिकम् नाटक' के लिए उपखण्ड संख्या 1.3.7.1 देंखे।
2. 'रामरसायन महाकाव्य' के लिए उपखण्ड संख्या 1.3.7.2 देंखे।
3. 'श्रीकृष्ण जोशी के पूर्वज' के लिए उपखण्ड संख्या 1.3.1 देंखे।

बहुविकल्पीय

(1) क (2) घ

(3) ग (4) ग

(5) क (6) ग

रिक्त स्थान पूर्ति

1.श्रीकृतार्थकौशिकम् 2.सामाजिकशास्त्रमंजूषा

3. महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय 4. विद्याभूषण

5. 1965 ईसवी 6. मतिप्रशिक्षास्त्र अथवा परमतत्त्वमीमांसा

अतिलघूउत्तरीय

1. सन् 1975 ईसवी में 2. महात्मा गाँधी से

3. संगीतराघवीयम् 4. संस्कृतबोधक

5. श्रीराममहिम्न, श्री गंगा महिम्न एवं श्रीकृष्णमहिम्न स्तोत्र

6. गोविन्दवल्लभ पन्त एवं हरगोविन्द पन्त

सत्य/असत्य

1. असत्य 2. असत्य 3. सत्य

4. असत्य 5. असत्य 6. सत्य

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री:-

1. कुमाऊँ का इतिहास, बद्रीदत्त पाण्डे

2. श्रीकृष्ण जोशी के संस्कृत नाटक, डा0 पुष्पा अवस्थी

3. परशुरामचरितम् नाटक, डा0 जगन्नाथ जोशी
4. श्रीकृतार्थकौशिकम् नाटक की भूमिका, डा0 उषा सत्यव्रत
5. श्रीकृष्ण जोशी के परिजनों से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
6. अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, लखनऊ के सहयोग से।

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न:-

1. श्रीकृष्ण जोशी पूर्वज, जन्म, शिक्षा-दिक्षा आदि का विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. जोशी जी की रचनाओं का परिचय दीजिए।
3. श्रीकृष्ण जोशी के सामाजिक एवं राजनीतिक क्रियाकलापों पर प्रकाश डालिए।
4. श्रीकृष्ण जोशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।

इकाई 3. श्री हरिनारायण दीक्षित का जीवन परिचय एवं उनका रचना संसार

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 इकाई की पाठ्य सामग्री

3.3.1 श्री हरिनारायण दीक्षित का जन्म एवं माता पिता

3.3.2 शिक्षा-दीक्षा

3.3.3 आजीविका

3.3.4 दीक्षित जी का रचना संसार

3.3.4.1 महाकाव्य

3.3.4.2 खण्डकाव्य

3.3.4.3 मुक्तक काव्य

3.3.4.4 सन्देश काव्य

3.3.4.5 कथाकाव्य

3.3.4.6 संस्कृत नाटक

3.3.4.7 गद्यकाव्य

3.3.4.8 शोधपरक ग्रन्थ

3.3.4.9 छात्रोपयोगी ग्रन्थ

3.3.4.10 नीतिविषयक ग्रन्थ

3.3.4.11 श्री हरिनारायण दीक्षित के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

3.3.4.12 श्री हरिनारायण को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान

3.4 सारांश

3.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.6 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री

3.7 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावाना:-

उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएँ नामक प्रथम खण्ड की तीसरी इकाई का नाम है 'श्री हरि नारायण दीक्षित का जीवन परिचय एवं उनका रचना संसार'। इससे पूर्व की इकाई में उत्तराखण्ड के संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार विद्याभूषण, श्रीकृष्ण जोशी द्वारा संस्कृत साहित्य को दिए गए योगदान के विषय में जान चुके है।

इस इकाई में आप 20 वीं 21 वीं सदी के संस्कृत साहित्यकार श्री हरिनारायण दीक्षित के बारे में विस्तार से जानेंगे। यद्यपि इनका जन्म, शिक्षा-दीक्षा एवं प्रारंभिक कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश रहा किन्तु इनकी समस्त संस्कृत सारस्वत-साधना उत्तराखंड के नैनीताल नगर में ही सम्पन्न हुई। इस इकाई में आप कवि के जीवन परिचय के साथ-साथ उनके रचना संसार से भी परिचित हो पाएंगे।

3.2 उद्देश्य:-

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप—

- बता पाऐंगे कि श्री हरिनारायण का जन्म कब तथा कहाँ हुआ।
- भलीभाँति समझा सकेंगे कि उनके माता-पिता कौन थे तथा उनकी शिक्षा-दीक्षा कहाँ सम्पन्न हुई।
- श्री हरिनारायण दीक्षित के प्रारम्भिक कार्यक्षेत्र के बारे में अच्छी तरह बता पाऐंगे।
- श्री दीक्षित द्वारा कुमाँऊ विश्वविद्यालय को दी गई सेवाओं के विषय में भली भाँति बता सकेंगे।
- कवि के द्वारा रचित महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक आदि के बारे में भली भाँति बता सकेंगे।
- कवि के द्वारा रचित कथा काव्य के विषय में अच्छी प्रकार से जानकारी दे सकेंगे।
- कवि को उनकी विभिन्न कृतियों के लिए मिले सम्मान एवं पुरस्कारों के बारे में अच्छी प्रकार से बता पाएंगे।

3.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:-

उत्तराखण्ड की पावन धरती और उस पर रमणीय झील से युक्त नैनीताल नगरी यदि संवेदनशील, संस्कृत के प्रति समर्पित विद्वान् की कवित्व प्रतिभा को प्रस्फुटित कर दे तो इसमें कैसा आश्चर्य ? कुछ ऐसा ही हुआ श्री हरि नारायण दीक्षित के साथ उनकी कवित्व प्रतिभा और विद्वता ने नैनीताल की रमणीयता के संयोग से उनसे अनेकानेक संस्कृत ग्रन्थों एवं समालोचनात्मक ग्रन्थों की रचना करवा दी। हरिनारायण दीक्षित जी की सम्पूर्ण सारस्वत-साधना नैनीताल नगरी में ही सम्पन्न हुई। संस्कृत की इस आधुनिक प्रतिभा के जन्म आदि का विवरण इस प्रकार है-

3.3.1 श्री हरिनारायण दीक्षित का जन्म एवं माता-पिता:-

संस्कृत की महान विभूति श्री हरिनारायण दीक्षित का जन्म भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति से लगभग 11 (ग्यारह) वर्ष पूर्व 13 जनवरी, 1936 ईसवी में कृष्ण पक्ष की माघी चतुर्थी को हुआ था। ये मूल रूप से उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के समीप स्थित सरावन के 'पड़कुला' नामक गाँव के रहने वाले हैं। इनके पिता का नाम श्री रघुवीर सहाय तथा माता का नाम श्रीमती सुदामा देवी है। ये कान्यकुब्ज गोत्रोत्पन्न ब्राह्मण हैं।

3.3.2 शिक्षा-दिक्षा:-

दीक्षित जी की प्रारंभिक शिक्षा-दिक्षा अपने जन्म स्थान के आस-पास ही सम्पन्न हुई। बचपन से ही ये अत्यन्त प्रतिभावान तथा शिक्षा के प्रति जागरूक थे। इनके घर का वातावरण संस्कृतमय तथा भारतीय संस्कृति से परिपूर्ण था। इनके पिता अनुशासन प्रिय तथा संस्कृतानुरागी थे। कवि श्री हरिनारायण की शिक्षा दीक्षा प्राच्य तथा आधुनिक दोनों पद्धतियों से हुई।
उन्होंने संस्कृत की उच्च शिक्षा, वाराणसेय विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्राप्त की थी। यह शिक्षा संस्थान अब सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयए वाराणसी के नाम से विख्यात है। यहाँ से दीक्षित जी ने व्याकरण सांख्ययोग एवं साहित्य में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। बाद में इन्होंने आगरा विश्वविद्याल से स्नातक, स्नातकोत्तर (संस्कृत) तथा शोधोपाधि (पी-एच0डी0) प्राप्त की। इन्होंने ''संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना'' विषय पर डी0लिट0 की उपाधि भी प्राप्त की।

3.3.3 आजीविका:-

संस्कृतानुरागी तथा संस्कृत के प्रति समर्पित कविवर दीक्षित जी के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न वयक्तित्व से अनेकानेक लोग प्रभावित हुए। फलस्वरूप संस्कृत ही उनकी आजीविका का साधन बनी। अनके शिक्षण संस्थानों से इन्हें अध्यापन कार्य के लिए आमन्त्रित किया जाने लगा। दीक्षित जी ने अनेक संस्कृत विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में अध्यापन का कार्य किया। जिनका विवरण इस प्रकार है—

(क) आदर्श संस्कृत विद्यालय, उरई, जालौन, उत्तर प्रदेश

(ख) सीताराम जयराम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय

(ग) बरेली कॉलेज, बरेली

(घ) के0एन0 राजकीय महाविद्यालय, ज्ञानपुर, वाराणसी

(ड.) राजकीय महाविद्यालय, टिहरी, गढ़वाल

(च) कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

इस प्रकार विभिन्न संस्थानों में अध्यापन कार्य करते हुए दीक्षित जी 9 नवम्बर, 1979 को डी0एस0बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यायल, नैनीताल में टिहरी गढ़वाल से स्थानान्तरित होकर आए। तब तक वे लोक सेवा आयोग से चयनित होकर प्रवक्ता पद पर नियुक्ति प्राप्त कर चुके थे। कालान्तर में वे कुमाँऊ विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्रवक्ता, रीडर तथा प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग के रूप में भी कार्यरत् रहे। सन् 1996 में वे कुमाँऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष संस्कृत विभाग के पद से सेवानिवृत्त हुए। इस प्रकार इन्होंने लगभग 17 वर्षों तक कुमाँऊ विश्वविद्यालय को अपने सेवाएँ दी। नैनीताल नगरी ने कवि को कुछ ऐसा लुभाया कि सेवानिवृत्ति के बाद भी वे यहीं रहकर काव्य साधना एवं संस्कृत के संरक्षण सवंर्धन हुत कार्य करते रहे। आज भी इनका अधिकांश समय नैनीताल में ही संस्कृत-साधना में व्यतीत होता है।

3.3.4 दीक्षित जी का रचना संसार:-

संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन के साथ ही संस्कृत के अनन्य सेवक दीक्षित जी ने संस्कृत साहित्य को अनेक ग्रन्थ-रत्न प्रदान किए। ये निरन्तर अपने कविकर्म को समाज कल्याण का हेतु मानकर साहित्य सृजन करते रहे। इन्होंने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में ग्रन्थ रचना की जिनमें महाकाव्य, खण्ड काव्य, नाटक आदि हैं। समालोचनात्मक ग्रन्थों की भी इन्होंने रचना की। संस्कृत भाषा कवि की प्रिया थी तो संस्कृत लेखन इनका प्रेम था। संस्कृत के प्रति

अपने इसी अनुराग के कारण ये सतत् संस्कृत भाषा में ग्रन्थ रचना करते चले गए। इनके संस्कृत भाषा में लिखित ग्रन्थ इस प्रकार है-

3.3.4.1 महाकाव्य:-

1. भीष्मचरितम्—

महाभारत के प्रमुख पात्र देवव्रत (भीष्म) के जीवन-चरित को आधार बनाकर लिखा गया श्री दीक्षित जी का यह महाकाव्य 20 सर्गों में निबद्ध है। शान्तनु पुत्र भीष्म के जन्म से लेकर महाभारत की लड़ाई के बाद सूर्य के उत्तरायण में आने पर भीष्मपितामह के शरीर त्याग तक की समस्त कथा को कवि ने भीष्मचरितम् महाकाव्य की कथावस्तु बनाया है। इस महाकाव्य का प्रकाशन सन् 1991 में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हो चुका है। अपने ''भीष्मचरितम्'' महाकाव्य पर श्री दीक्षित जी को उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा सन् 1992 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2. ग्वल्लदेवचरितम्—

कुमाँऊ की जनता के आस्था के केन्द्र यहाँ के प्रख्यात लोक देवता गोलू देव (ग्वल्ल देव) की महिमा का गुणगान करने वाले इस महाकाव्य में गोलू देव की उत्पत्ति से लेकर जनमानस में देवता के रूप में प्रतिष्ठित होने के हेतुभूत उनके समस्त क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है। कुमाँऊ में कहाँ-कहाँ इनके मन्दिर हैं ? तथा लोगों में इनके प्रति कैसी आस्था है? इसका विस्तृत वर्णन महाकाव्य में किया। कुमाँऊ में गोलू देव न्याय के देवता के रूप में प्रख्यात है। अतः उनकी न्यायप्रियता का वर्णन भी इस महाकाव्य में किया गया है। इस महाकाव्य का प्रकाशन भी ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है।

3. भारतमाता ब्रूते—

श्री हरिनारायण दीक्षित द्वारा रचित यह महाकाव्य सन् 2003 ईसवी में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से प्रकाशित है। इस महाकाव्य में कुल 22 सर्ग है। इसमें वर्तमान की भोगवादी संस्कृति में भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों के ह्रास का वर्णन करते हुए कवि के द्वारा उसके संरक्षण के उपायों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। कवि का यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी अटूट आस्था को दर्शाता है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण भारतीय संस्कृति का क्षय कवि को पीड़ित कर देता है। अतः भरतीय संस्कृति के प्रहरी के रूप में उनके विचार इस काव्य में अभिव्यक्त हुए।

4. राधाचरित्—

इस महाकाव्य में कवि ने कृष्ण कथा की एक उपेक्षित नायिका राधा के अभिनव रूप को प्रस्तुत किया है। श्री कृष्ण से अनन्य प्रेम करने वाली राधा कभी कृष्ण का सान्निध्य नहीं पा सकी। यद्यपि कृष्ण भी राधा से प्रेम करते थे तथापि वे राधा को वो स्थान नहीं दे पाए जो उसे मिलना चाहिए था। राधा-कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित इस सारे इतिवृत्त को कवि ने इस महाकाव्य में पिरोया है। 22 सर्गों में विभक्त कवि के इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 2008 ईसवी में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है। उत्कृष्टता, वैचित्रय एवं सुन्दर वर्णन की दृष्टि से प्रस्तुत महाकाव्य अत्यन्त सजीव, सौम्य एवं नूतन है।

3.3.4.2 खण्डकाव्य:-

1. अजमोहः भंगम्—

यह खण्डकाव्य रघुवंशी नरेश अज के मोहभंग से सम्बन्धित है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन भी ईस्टर्न बुक लिंकर्स से सन् 2009 में हुआ है। इस ग्रन्थ में अपनी रानी इन्दुमती की मृत्यु से शोकाकुल हो अपने कत्र्तव्यपथ से विमुख राजा अज किस प्रकार ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के उपदेश से मोहासक्ति से मुक्त होते है, इसी घटनाक्रम का वर्णन किया गया है।

2. पशुपक्षीविचिन्तनम्—

पशु पक्षियों के प्रति कवि की संवेदनशीलता को दर्शाने वाला श्री दीक्षित जी का यह खण्डकाव्य ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से सन् 2008 में प्रकाशित है। प्रस्तुत खण्डकाव्य आज के युग में हिंसक वृत्ति वाले लोगों द्वारा पशु-पक्षियों पर होने वाले अत्याचारों से द्रवीभूत कवि की इन प्राणियों के प्रति करूणा, दया और ममता का प्रतिरूप है। इस काव्य का कवि ने स्वयं हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया है।

3. गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालीयम्—

उत्तराखण्ड राज्य की पावन नगरी, पतितपावनी गंगा की अविरल धारा से आप्लावित हरिद्वार में स्वामी श्रद्धानंद आदि के प्रयासों के परिणामस्वरूप फलीभूत गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का विस्तृत परिचयात्मक यशोगान करने वाला श्री दीक्षित जी का यह खण्डकाव्य प्रशंसनीय है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री स्वामी श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से ही सन् 2002 ईसवी में हुआ।

3.3.4.3 मुक्तक काव्य

1. देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम्—

भारतवर्ष की वर्तमान दशा को देखकर द्रवीभूत हृदय वाले संवेदनशील कवि श्री दीक्षित जी ने अपने इस मुक्तक काव्य में भारत देश की दुर्दशा को व्यंग्यपूर्ण शैली में वर्णन करते हुए देश की उन्नति की कामना को अभिव्यक्त किया है। इस मुक्तक काव्य का प्रकाशन सन् 1993 ईसवी में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है।

2. मनुजाश्रुणुत गिरं मे—

मानव मात्र के प्रति अपने हृदयगत भावों-विचारों को व्यक्त करते हुए कवि ने इस मुक्तक काव्य को हिन्दी अनुवाद सहित लिखा है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन भी ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से सन् 2008 में हुआ है। भारतीय सभ्यता एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा की भावना को व्यक्त करने वाला यह एक प्रशंसनीय मुक्तक काव्य है।

3. दुर्जनाचरितम्—

दुष्ट एवं दुर्जन व्यक्तियों के आचरण के विषय में बताकर सामान्य जनों को उनसे दूर रहने का उपदेश देने वाला यह मुक्तक काव्य समाज को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। इस काव्य का प्रकाशन भी ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से सन् 2011 में हुआ है।

4. सज्जनाचरितम्—

सज्जनों के आचरण के विषय में बताने वाला यह एक प्रशंसनीय मुक्तक काव्य है। इसमें सज्जनों के आचरण-व्यवहार का वर्णन सरल शब्दों में किया गया है। सज्जनों के व्यवहार की विशेषताओं का वर्णन करके कवि समाज को सज्जनों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। यह ग्रन्थ ईस्टर्न बुक लिंकर्स से सन् 2012 में प्रकाशित है।

3.3.4.4 सन्देश काव्य/दूतकाव्य:-

1. श्रीहनुमद्दूतम्

यह दीक्षित जी द्वारा रचित एक सन्देश काव्य है। यह रामायणीकथा पर आश्रित काव्य है। इसमें श्रीराम की वियोग जन्य व्यथा से दुःखी सीता के पास श्रीराम के दूत के रूप में हनुमान के पहुँचने की घटना का मनमोहक वर्णन किया गया है। इसका प्रकाशन भी सन् 1987 ईसवीं में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है। मेघदूतम् की तर्ज पर लिखित अपने श्रीहनुमद्दूतम् काव्य पर कवि को 'उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी' द्वारा 'विशिष्ट पुरस्कार' से सम्मानित भी किया जा चुका है।

3.3.4.5 कथाकाव्य:-

1. गोपालबन्धुः—

संस्कृत गद्यकाव्य की एक प्रसिद्ध विद्या है कथाकाव्य। कवि की 'गोपालबन्धुः' कृति कथाकाव्य की श्रेणी में आती है। इसका प्रकाशन भी ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से सन् 1988 में किया गया। अपने इस ग्रन्थ पर कविवर दीक्षित जी को उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी से 'बाणभट्ट पुरस्कार' प्राप्त हुआ है।

2. निर्वेदनिर्झरिणी—

यह भी दीक्षित जी का एक कथाकाव्य हे। इसका प्रकाशन ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से सन् 2010 में हो चुका है। इसमें कवि ने कथा के नायक विद्याधर के माध्यम से निर्वेद के चैदह निर्झरों को परस्पर सम्बद्ध करके निर्वेद की सुन्दर निर्झरिणी अर्थात् नदी का रूप दे दिया है।

3.3.4.6 संस्कृत नाटक:-

1. मेनकाविश्वामित्रम्—

यह कवि श्री दीक्षित जी द्वारा प्रणीत 8 अंकों वाला संस्कृत नाटक है। यह नाटक एक तरह से अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पूर्वभाग है। इसमें अनन्य सुंदरी अप्सरा मेनका तथा ऋषि विश्वामित्र के अलौकिक प्रणय तथा उस प्रेम से उत्पन्न उनकी पुत्री शकुन्तला के जन्म की कथा का अद्भुत वर्णन है। शकुन्तला को माता-पिता के द्वारा क्यों त्याग दिया गया? किस प्रकार वह ऋषि कण्व को प्राप्त हुई? तथा वह उनकी पालिंता पुत्री वनगई-यह सारा वृत्तान्त इस नाटक में वर्णित है। इसका प्रकाशन सन् 1984 ई0 में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हो चुका है।

2. वाल्मीकिसंभवम्—

कवि दीक्षित प्रणीत यह नाटक आदिकवि वाल्मीकि पर आधारित है। आदिकवि के रत्नाकर (जो उनका मूल नाम था) से कवि वाल्मीकि बनने आदि का वृत्तान्त मनमोहक रूप में इसमें वर्णित है। इस नाटक का प्रकाशन भी ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है।

3.3.4.7 गद्यकाव्य:-

श्रीमदप्पयदीक्षित चरितम्: —

दक्षिण भारत के महान साहित्यशास्त्री श्रीमदप्पयदीक्षित के जीवन पर आधारित यह कविश्रेष्ठ दीक्षित जी का प्रथम गद्यकाव्य है। यद्यपि यह गद्यकाव्य बाणभट्ट के हर्षचरितम् से प्रभावित प्रतीत होता है तथापि इसमें वाणभट्ट जैसी अत्यधिक समास बहुलता नहीं है। इसका प्रकाशन सन् 1981 में देववाणी परिषद, वाणी विहार-दिल्ली से हो चुका है।

3.3.4.8 शोधपरक ग्रन्थ:-

1. तिलकम्जरी एक समीक्षात्मक अध्ययन—

यह श्री हरिनाराण दीक्षित जी द्वारा अपनी पी-एच0डी0 की उपाधि के लिए लिखा गया शोध ग्रन्थ है। इसमें संस्कृत साहित्य के महान कथाकाव्य के रचयिता धनपाल की 'तिलकमंजरी' पर प्रशंसनीय समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इसका प्रकाशन भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली से सन् 1982 ईसवीं में हुआ।

2. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना—

श्री दीक्षित जी ने अपनी डी0लिट0 उपाधि हेतु 'संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना' इस नाम से शोध ग्रन्थ लिखा। इसमें वेदों से लेकर वर्तमान काल पर्यन्त संस्कृत वाड्.मय में वयक्त राष्ट्रीय भावना को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया है। यह शोध ग्रन्थ कवि की राष्ट्रीय भावना एवं देशप्रेम को अभिव्यक्त करता है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन देववाणी परिषद, वाणी विहार, दिल्ली द्वारा सन् 1983 ईसवीं में हुआ।

3. राष्ट्रीय सूक्ति संग्रह—

इसमें राष्ट्रीय भाषा की 1000 से अधिक सूक्तियों का अनुवाद सहित संग्रह किया गया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1987 में अक्षयवट प्रकाशन, बलरामपुर हाउस, इलाहाबाद से किया गया है। इसमें वेदों से लेकर वर्तमान काल तक के ग्रन्थों से देशभक्ति परक सूक्तियों का संग्रह है।

3.3.4.9 छात्रोपयोगी ग्रन्थ:-

1. संस्कृतानुवाद कलिका—

यह कविवर दीक्षित जी की पहली रचना है। छात्रों को सरलतापूर्वक संस्कृत भाषा में विधिवत् अनुवाद सिखाने के लिए उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना की। इसका प्रकाशन सन् 1965 ईसवीं में नया प्रेस, रामनगर, उरई जालौन से हुआ है।

2. संस्कृत निबन्ध रश्मि—

इस ग्रन्थ की रचना दीक्षित जी ने इण्टरमीडिएट तथा बी0ए0 के विद्यार्थियों को संस्कृत निबन्ध लेखन की शिक्षा देने के लिए किया। इसमें सरल संस्कृत भाषा में संस्कृत साहित्य के विभिन्न कवियों एवं विषयों से संबन्धित निबन्ध लिखे गए हैं। इसका प्रकाशन सन् 1968 में जनता प्रेस, ज्ञानपुर-वाराणसी से हुआ है।

3. संस्कृत निबन्धावलि—

श्री दीक्षित जी द्वारा लिखित यह ग्रन्थ एम0ए0 तथा आचार्य की उपाधि हेतु अध्ययनरत् विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त अपयोगी तथा महत्वपूर्ण है। इसमें प्राचीन विषयों के साथ-साथ अर्वाचीन सभी विषयों (नारी शिक्षा, पर्यावरण, परोपकार, देशभक्ति आदि) पर निबन्ध प्रस्तुत किए गए हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1985 ईसवीं में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है।

4. शोध लेखावलि—

भारतवर्ष की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित हुए कविवर हरिनारायण दीक्षित के शोध लेखों का एकत्र संग्रह इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रकाशन सन् 1988 ईसवीं में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली

5. गद्यकाव्य समीक्षा—

इस ग्रन्थ में दीक्षित जी ने संस्कृत गद्यकाव्य की विशेषओं को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है। यह ग्रन्थ शोधकार्यरत् विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोग एवं महत्वपूर्ण है। इसका प्रकाशन भी ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से सन् 1991 में हुआ है।

6. भारतीय काव्यशास्त्र मीमांसा—

इसमें दीक्षित जी ने भारतवर्ष के विभिन्न विद्वानों के काव्यशास्त्र विषयक लेखों का सम्पादन किया है। इसका प्रकाशन सन् 1995 ईसवीं में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है।

7. पण्डितराज जगन्नाथ ग्रन्थावाली—

इस ग्रन्थ में दीक्षित जी ने महान साहित्य शास्त्री एवं साहित्यकार पण्डितराज जगन्नाथ की सम्पूर्ण काव्यसम्पदा का तदनुरूप ही हिन्दी अनुवाद पूर्वक सम्पादन किया है। इसका प्रकाशन सन् 1996 ईसवीं में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से हुआ है।

8. बुन्देलखण्डी कवि पण्डित राजराम मिश्र काव्य संग्रह—

इस ग्रन्थ में उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के रहने वाले केशवदास के वंशज पण्डित राजाराम मिश्र (जो बुन्देलखण्डी कवि हैं) के द्वारा विचरित कविताओं का संकलन एवं सम्पादन श्री हरिनारायण दीक्षित द्वारा किया गया हे। इस ग्रन्थ का प्रकाशन भी ईस्टर्न लिंकर्स, दिल्ली द्वारा सन् 2005 ईसवीं में किया गया।

3.3.4.10 नीति विषयक ग्रन्थ:-

1. उपदेशशती—

भर्तृहरि के नीतिशतकम् से प्रेरणा प्राप्त कर कविवर दीक्षित जी ने नीतिविषयक उपदेशशती ग्रन्थ की रचना की है। इसकी अन्योक्तियाँ कवि के अपने जीवन काल के अनुभवों का साररूप हैं। इसका प्रकाशन सन् 1995 में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली से किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत के आधुनिक कवि श्री हरिनारायण दीक्षित ने अब तक विभिन्न विषयों पर आधारित कुल 29 ग्रन्थों की रचना करके संस्कृत वाड्.मय की अभिवृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया है। 20वीं एवं 21वीं सदी की इस महान विभूति की लेखनी अभी तक विराम को प्राप्त नहीं हुई है। अभी भी ये सतत् ग्रन्थ रचना में संलग्न है। सारस्वत साधना में रत यह साधक प्रशंसनीय है।

3.3.4.11 श्री हरिनारायण दीक्षित के व्यक्तित्व की विशेषताएँ:-

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री हरिनारायण दीक्षित जी अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तराखण्ड की सरोवर नगरी के नाम से विख्यात 'नैनीताल' में बिताया। उनकी अधिकांश सारस्वत साधना नैनीताल में हुई। आज भी सरस्वती के ये साधक संस्कृत की साधना में सतत् लीन है। कागज-कलम और लेखन ही इनके परम मित्र एवं चिर सम्बन्धी है। श्री दीक्षित जी के व्यक्तित्व की कतिपय विशेषताएँ इस प्रकार है—

सुदर्शन वयक्तित्व—

लगभग छः फीट लम्बे श्री दीक्षित जी सुदर्शन व्यक्तित्व के स्वामी हैं। गोरा रंग, उन्नत नासिका, ऊँचा कद और सुपुष्ट देहयष्टि उन्हें आकर्षक बनाती। वे अधिकांशतः पैण्ट कमीज, पैरों में पॉलिश किए हुए लकदक काले जूते, हाथ में घड़ी एवं अँगूठी, आँखों पर काला चैड़े फ्रेम का चश्मा पहनते हैं। सामान्य से कुछ बड़े केश अनके व्यक्तित्व को और भी आकर्षक बना देते है।

सादा जीवन उच्च विचार—

श्री दीक्षित जी 'सादा जीवन उच्च विचार' के पक्षधर हैं। नैनीताल के बड़ा बाजार स्थित उनके छोटे से किराए के आवास में किसी प्रकार के भौतिक सुख साधनों का संचय देखने को नहीं मिलता। अत्यन्त सँकरी घुमावदार सीढ़ीयों पर चढ़कर घर के प्रथम तल पर वे रहते है। उनके घर में सुखसुविधा के साधन भले ही न हो पर एक से एक उत्कृष्ट ग्रन्थ अवश्य देखने को मिल जाएंगे। उनके घर में आप इधर-उधर चारों ओर लेखन-पठन की सामग्री को बिखरा हुआ देखेंगे। उनका खान-पान अत्यन्त सादा शाकाहारी तथा रहन-सहन भी सामान्य है, किन्तु उनकी देववाणी की साधना अपार है। आज लगभग 77 वर्ष की उम्र में भी पुस्तकें उनकी प्रिय साथी है।

अनुशासन प्रिय—

श्री दीक्षित जी ने अपना सारा जीवन अनुशासित रहकर बिताया। अतः अपने विद्यार्थियों से भी वे सदैव यही उम्मीद रखते थे कि वे अनुशासन मे रहे। उनके अनुशासन का ही भय था कि जब वे कुमाऊँ विश्वविद्यालय के डी.एस.बी. परिसर में संस्कृत विभागाध्यक्ष थे तब सभी शोधार्थी नित्य अपनी उपस्थिति ही नहीं देते थे अपितु प्रातः 10 बजे से सायं 4.00 बजे तक अनुसन्धित्सु कक्ष में बैठकर अपने शोध संबन्धी कार्य मे लगे रहते थे। उनका अनुशासन इतना तगड़ा था कि कोई विद्यार्थी या शोधार्थी उनके कक्ष में जाने से पहले दस बार सोचता था।

मृदुभाषी—

श्री दीक्षित जी अत्यन्त मृदुभाषी है। कुपित होने पर भी कभी उन्हें कठोर वचन बोलते नहीं देखा गया। अपने सहयोगी प्राध्यापकों, मित्रों यहाँ तक कि शोधार्थियों और बी.ए. और एम.ए के विद्यार्थियों से भी वे अत्यन्त मृदुता से बात करते थे। यही कारण था कि जहाँ उनकी अनुशासन प्रियता के कारण विद्यार्थी उनसे डरते थे वहीं उनकी मृदुभाषिता के कारण उनका आदर करते थे और उनसे प्रेम भी करते थे। वे हर समय विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते थे।

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान—

श्री हरिनारायण दीक्षित जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हैं। वे संस्कृत व्याकरण, सांख्य एवं साहित्य के अच्छे जानकार हैं। उनका रचना संसार उनके अगाध संस्कृत ज्ञान को दर्शाता है। उन्होंने संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं यथा महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, गद्यकाव्य, कथाकाव्य, चरितकाव्य, नीतिकाव्य, सभी पर अपनी लेखनी का कौशल प्रदर्शित किया है। 77 वर्ष की उम्र मे आज भी वे सतत् संस्कृत की सेवा को समर्पित। आज भी पुस्तकें उनकी प्रियमित्र और लेखन उनका शौक है।

इतिहास पुराण के ज्ञाता—

श्री हरिनारायण दीक्षित को इतिहास (रामायण महाभारत) तथा पुराणादि का विशद ज्ञान है। इनका भीष्मचरितम् काव्य इनके महाभारत विषयक ज्ञान की परिपक्वता को व्यक्त करता है। श्रीहनुमद्दूतम् काव्य कवि के रामकथविषयक ज्ञान का परिचायक है। इसी प्रकार बाल्मीकिसम्भवम् नाटक भी आदिकवि बाल्मीकि के जीवन-चरित के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है। राधाचरितम् महाकाव्य कवि की नारियों के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है। श्रीकृष्ण के साथ सतत् उच्चरित नाम वाली होते हुए भी राधा महाभारत में उपेक्षित पात्र है। अतः राधा को अपने महाकाव्य का केन्द्र बन्दु बनाकर सहदयजनों के हृदय में उसके प्रति संवेदना पैदा कर दी है।

3.3.4.12 श्री हरिनारायण दीक्षित को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान:-

श्री हरिनारायण दीक्षित को अपनी संस्कृत साधना के लिए समय-समय पर विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं जो संस्कृत जगत में व्याप्त उनकी कीर्ति में चार चाँद लगा देते हैं। उन्हें विभिन्न संस्थानों से प्राप्त सम्मानों एवं पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है-

1. साहित्य अकादमी, दिल्ली —

श्री दीक्षित जी को अपने 'भीष्मचरितम् महाकाव्य' के लिए साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा सन् 1991 का विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया।

2. श्री वाणी न्यास, नई दिल्ली —

सन् 2006 में ही कवि को उनके 'भीष्मचरितम् महाकाव्य हेतु 'रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्री वाणी न्यास' द्वारा सम्मानित किया गया।

3. भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता—

श्री हरिनारायण दीक्षित जी की आरंभ से लेकर सन् 1991 ईसवी तक की सांरस्वत साधना के लिए उन्हें 'भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता' द्वारा विशिष्ट सम्मान प्रदान किया गया।

4. राष्ट्रपति पुरस्कार—

संस्कृत साहित्य में श्री दीक्षित जी के विशिष्ट योगदान के लिए उन्हें सन् 2008 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया

5. लोकसंस्कृति सेवानिधिमण्डपम्—

श्री दीक्षित जी को उनकी संस्कृत सेवा को देखते हुए लोकसंस्कृति सेवानिधिमण्डपम् द्वारा पंडित गौरीशंकर द्विवेदी शंकर अलंकरण देकर पुरस्कृत किया गया।

6. गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार—

सन् 2007 में इस विश्वविद्यालय द्वारा श्री दीक्षित जी को 'विद्यारत्नाकर सारस्वत सम्मान' से सम्मानित किया गया।

अभ्यास प्रश्न

टिप्पणी

(क) भीष्मचरितम् महाकाव्य

(ख) ग्वल्लदेवचरितम्

(ग) दीक्षित जी के छात्रोपयोगी ग्रन्थ

बहुविकल्पीय प्रश्न

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर रूप में चार विकल्प दिए गए हैं। जिनमें एक विकल्प सही है। उस सही विकल्प को चुनिए—

1. श्री हरिनारायण दीक्षित मूलतः कहाँ के रहने वाले है-

(क) हरिद्वार

(ख) इलाहाबाद

(ग) बनारस

(घ) जालौन, उत्तर प्रदेश

2. श्री दीक्षित जी की माता का नाम है-

(क) शान्ता देवी

(ख) रूक्मिणी देवी

(ग) सुदामा देवी

(घ) नारायणी देवी

3. श्री दीक्षित जी द्वारा लिखित महाकाव्यों की संख्या है-

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) एक

4. दीक्षित जी का नीतिसम्बन्धी ग्रन्थ है-

(क) उपदेशशती

(ख) नीतिशतकम्

(ग) हितोपदेश

(घ) उपदेशशतकम्

5. दीक्षित जी का पी-एच.डी. उपाधि हेतु लिखा गया तिलकमंजरी एक समीक्षात्मक अध्ययन कब प्रकाशित हुआ-

(क) सन् 1980 ई0 में

(ख) सन् 1982 ई0 में

(ग) सन् 1984 ई0 में

(घ) सन् 1986 ई0 में

6. राष्ट्रीय सूक्ति संग्रह का प्रकाशन कहाँ से हुआ है-

(क) ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली

(ख) चैखम्बा प्रकाशन, वाराणसी

(ग) भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली

(घ) अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. दीक्षित जी के पिता का नाम ..... था।
2. दीक्षित जी ने उच्च शिक्षा ..... वाराणसी से प्राप्त की।
3. कवि दीक्षित साहित्याचार्य, सांख्ययोगाचार्य के साथ ही ..... भी थे।
4. दीक्षित जी की डी. लिट. (शोधपाधि) का विषय ..... था।
5. गोपालबन्धु एक ..... काव्य है।
6. दीक्षित जी के अधिकांश ग्रन्थ ..... दिल्ली से प्रकाशित हैं।

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

1. श्री हरिनारायण का जन्म कब हुआ ?
2. संस्कृत निबन्धावलि, किय स्तर क विद्यार्थियों हेतु लिखा गया है ?
3. देशोंऽयं कुरूते प्रोन्नतिम् किस प्रकार का काव्य है ?

4. कवि के भारतमाता ब्रूते महाकाव्य में कितने सर्ग हैं ?

5. कवि ने कुमाऊँ के किस लोक देवता को आधार बनाकर ग्रन्थ रचना की है ?

सत्य/असत्य बताइए

1. श्री हरिनारायण दीक्षित उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर से थे।
2. बी.ए, एम.ए. तथा पी-एच.डी. की उपाधि दीक्षित जी ने आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी।
3. श्री दीक्षित जी ने रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया
4. राजकीय महाविद्यालय कोटद्वार में भी इन्होंने अध्यापन कार्य किया।
5. दीक्षित जी सन् 1995 ईसवी में कुमाऊँ विश्वविद्यालय से आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग से सेवानितृत्त हुए।
6. दीक्षित जी ने दक्षिण के संस्कृत साहित्यकार रामास्वामी अय्यर के जीवन पर गद्यकाव्य लिखा।

नोट: ऊपर दिए गए प्रश्नों के उत्तर इसी इकाई में दिए जा रहें हैं परन्तु हमारा सुझाव है कि आप स्वमूल्यांकन हेतु उनसे अपने उत्तरों का मिलान करके देखें।

3.4 सारांश:-

उत्तर प्रदेश के मूल निवासी श्री हरिनारायण दीक्षित जी ने सन् 1970 से 1996 ई. (लगभग 26 वर्षो) तक संस्कृत विभाग कुमाऊँ विश्वद्यियालय के डी.एस.बी. परिसर नैनीताल में अपनी सेवाएँ दी। नैनीताल उन्हें कुछ ऐसा भाया कि वे वही के होकर रह गये। सेवानिवृत्ति के 16 वर्ष बाद ये आज भी नैनीताल को छोड़कर नहीं जा पाये। नैनीताल नगरी उनकी साधना स्थली है। यहीं पर उन्होंने अपने श्रेष्ठ संस्कृत ग्रन्थों का प्रणयन किया, जिनके कारण वे आज संस्कृत साहित्य जगत के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार हैं। इनका रचना संसार विस्तृत है। अब तक कवि की 29 कृतियाँ देश के विभिन्न प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थानों से प्रकाशित हो चुकी है। अभी भी उनकी लेखनी की यात्रा समाप्त नहीं हुई है। वे निरन्तर संस्कृत की सेवा के प्रति समर्पित हैं। निश्चय ही शीघ्र ही उनका अगला ग्रन्थ भी प्रकाशित होगा और संस्कृत काव्यसम्पदा की अभिवृद्धि करेगा।

3.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(क) टिप्पणी उत्तर देने हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.3.4.1 के 1. को देखें।

(ख) उत्तर देने हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.3.4.2 के 2. को देखें।

(ग) उत्तर हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.3.4.9 के 3. को देखें।

बहुविकल्पीय

1. घ
2. ग
3. ग
4. क
5. ख
6. क

रिक्त स्थान पूर्ति

1. रघुवीर सहाय दीक्षित
2. वाराणसेय विश्वविद्यालय
3. व्याकरणाचार्य
4. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना
5. कथा
6. इस्टर्न बुक लिंकर्स

अतिलघुत्तरीय

1. 13 जनवरी सन् 1936 ईसवी में
2. एम.ए. तथा आचार्य स्तर के
3. मुक्तक काव्य
4. 22
5. गोलू देवता
6. संस्कृतानुवादकालिका

सत्य/असत्य

1. असत्य
2. सत्य
3. असत्य

4. असत्य
5. सत्य
6. असत्य

3.6 सन्दर्भ ग्रन्थ/ सहायक सामग्री:-

1. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना डा. हरिनारायण दीक्षित, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
2. मेनकाविश्वामित्रम् डा. हरिनारायण दीक्षित, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
3. डा. हरिनारायण दीक्षित प्रणीत भीष्मचरितम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन, हस्तलिखित शोध प्रबन्ध, शोधार्थी पद्मा देवी, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्व विद्यालय की पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध।

3.7 निबन्धात्मक प्रश्न:-

1. श्री हरिनारायण दीक्षित के जीवन-चरित तथा उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।
2. श्री हरिनारायण दीक्षित के रचना संसार पर प्रकाश डालिए।
3. श्री दीक्षित जी के द्वारा रचित महाकाव्य, खण्डकाव्य एवं मुक्तक काव्यों का परिचय दीजिये।

इकाई 4: लोकरत्न गुमानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 इकाई की पाठ्यसामग्री

4.3.1 लोकरत्न गुमानी के पूर्वज एवं उनका जन्म

4.3.2 शिक्षा-दीक्षा

4.3.3 मृत्यु

4.3.4 लोकरत्न पन्त का कृतित्व

4.3.4.1 हितोपदेशतकम्

4.3.4.2 समस्यापूर्तिः

4.3.4.3 ज्ञानभैषज्यमंजरी

4.3.4.4 भक्तिविज्ञप्तिसार

4.3.4.5 रामनामपंचाशिका

4.3.4.6 रामनामविज्ञप्तिसारः

4.3.4.7 रामाष्टकम् अथवा रामाष्टपदी

4.3.4.8 विज्ञप्तिसारः

4.3.4.9 राममहिमावर्णनम्

4.3.4.10 पंचपंचाशिका

4.3.4.11 भक्तिविज्ञप्रिसारः

4.3.4.12 दुर्जनदूषणम्

4.3.4.13 जगन्नाथाष्टकम्

4.3.4.14 गंगार्याशतकम्

4.3.4.15 क्रीड़ाविषयक ग्रन्थ

4.3.4.16 देवतास्त्रोत्राणि

4.3.4.17 अन्य ग्रन्थ

4.3.4.18 लोकरत्न गुमानी के व्यक्तितत्व की विशेषताएँ

4.4 सारांश

4.5 पारिभाषिक शब्दावली

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.7 निबन्धात्मक प्रश्न

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना:-

''उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएँ'' नामक खण्ड 1 की यह चैथी इकाई है। इससे पहले की दो इकाई में आधुनिक संस्कृत साहित्य की दो प्रतिभाओं श्रीकृष्ण जोशी एवं श्री हरिनारायण दीक्षित के बारे में भलीभाँति जान चुके हैं। इस इकाई में आप 18 वीं सदी के अन्त में अवतरित हुए कूर्मांचल की एक अन्य संस्कृत प्रतिभा लोकरत्न गुमानी जी से परिचति होंगे।

इस इकाई के अध्ययन के बाद लोकरत्न गुमानी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व अर्थात उनकी रचनाओं के विषय में भलीभाँति जान पाएंगे साथ ही उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को भी जानेंगे।

4.2 उद्देश्य:-

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- बता सकेंगे कि 18 वीं सदी के अन्त में जन्मे लोकरत्न गुमानी के पूर्वज कौन थे ? उनका जन्म कब और कहाँ हुआ।
- भलीभाँति समझा सकेंगे कि लोकरत्न का 'गुमानी' नाम साहित्य जगत में कैसे प्रसिद्ध हुआ? उनकी शिक्षा-दीक्षा तथा मृत्यु आदि के बारे में भी आप अच्छे से समझा सकेंगे।
- आप अच्छी तरह बता पाएंगे कि लोकरत्न पन्त गुमानी ने किस-किस प्रकार के ग्रन्थों की रचना की।
- लोकरत्न गुमानी के रामभक्तिपरक, आयुर्वेद विषयक, समस्यापूर्ति परक तथा अन्यान्य ग्रन्थों की विषयवस्तु के बारे में भलीभाँति बता सकेंगे।
- लोकरत्न गुमानी के व्यक्तित्व की विशेषताओं के बारे में भली प्रकार बता सकेंगे।

4.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:-

4.3.1 लोकरत्न पन्त के पूर्वज एवं उनका जन्म:

कवि के पूर्वज महाराष्ट्र के कुलीन ब्राह्मण थे। चन्दवंशी राजाओं के शासनकाल में ये कुमाऊँ में आकर बस गए और फिर यहीं के होकर रह गए। गुमानी का जन्म विक्रम संवत 1847

(ईसवी सन् 1790) को नैनीताल जनपद के काशीपुर नामक स्थान में हुआ था। ये भारद्वाज गोत्री 'पन्त' ब्राह्माण थे। इनके पिता का नाम देवनिधि पन्त तथा माता का नाम देवमंजरी था। कवि का बाल्यकाल पिथौरागढ़ जनपद के उपराड़ा नामक गाँव में व्यतीत हुआ।

4.3.2 शिक्षा-दीक्षा:

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इनके पितृव्य श्रीमन् पंडित राधाकृष्ण वैद्यराज के सान्निध्य में हुई। आगे की शिक्षा इन्होंने कलौन ग्रामवासी पंडित हरिदत्त ज्योतिर्विद से प्राप्त की। गुमानी का वास्तविक नाम लोकरत्न था लेकिन इनके पिता प्रेम से इन्हें गुमानी कहते थे। यह कहावत भी इनके बारे में प्रचलित है कि काशीपुर नरेश गुमानसिंह देव की राजसभा को अलंकृत करने के कारण ये गुमानी कहलाये और लोक में तथा साहित्य-जगत में इसी नाम से प्रख्यात हुए।कवि गुमानी बाल्यकाल से ही बुद्धिमान किन्तु किंचित चंचल प्रवृत्ति के थे। इन्होंने देश के विभिन्न भागों में देशाटन कर अपने व्यावहारिक ज्ञान की अभिवृद्धि की। राम के अनन्य भक्त लोकरत्न गुमानी का अधिकांश जीवन साहित्य-साधना में ही व्यतीत हुआ। साहित्यादि विषयों में निष्णात ये विद्वान कवि आयुर्वेद के भी मर्मज्ञ थे। ये एक निपुण चित्रकार भी थे।

4.3.3 मृत्यु:

मात्र 56 वर्ष की अवस्था में इस्वी सन् 1846 को इस महान संस्कृत विद्वान एवं साहित्यकार की भौतिक लीला का अवसान हुआ। कवि का जीवनकाल कुमाऊँ-गढ़वाल की पराधीनता का समय था। इन्होंने गोरखा शासन की कठोरता का प्रत्यक्ष अनुभव किया था। पुनः अंग्रेजों द्वारा कुमाऊँ एवं गढ़वाल की स्वतंत्रता का हरण होते तथा उत्तराखण्ड की जनता को पराधीनता की बेड़ियों में छटपटाते हुए उन्होंने देखा था। जन-जन की यह पीड़ा उनके काव्य में यत्र-तत्र मुखर हुई है।

4.3.4 लोकरत्न पन्त का कृतित्त्व:

यद्यपि कविवर गुमानी ने किसी भी बड़े ग्रन्थ की रचना नहीं की, तथापि विद्वानों के बीच ऐसी मान्यता है कि इन्होंने एक लाख से भी अधिक पद्य रचे। इनकी अनेक छिटपुट रचनाएँ है। ये आशुकवि थे। किसी भी परिस्थिति में किसी भी विषय पर तत्काल पद्य रचना कर देना इनके लिए सहज था। यद्यपि चिरकाल तक ये अन्धकार में रहे तथापि एक लम्बी कालावधि तक

केवल श्रुतिपरम्परा के माध्यम से किसी कवि की कविताओं का जीवित रहना उसकी लोकप्रियता को प्रकट करता है। कविवर गुमानी के संस्कृत भाषा विषयक काव्य निम्न प्रकार है:

4.3.4.1 हितोपदेशशतकम्:

क्षेमेन्द्र की चारूचर्या से प्रभावित इस नीतिविषयक ग्रन्थ में सौ आर्या छन्द है। इस ग्रन्थ का प्रत्येक पद्य एक-एक उपदेश के साथ दृष्टान्तपूर्वक एक पौराणिक आख्यान को प्रस्तुत करता है। प्रत्येक छन्द के तीन चरणों में किसी पुरा-कथा का उल्लेख करते हुए छन्द के चतुर्थ चरण में कवि तत्सम्बन्धी उपदेश देता है। यथा -

सहधर्मिणीं वनान्ताद् दशरथसूनोर्जहार दशवक्त्रः।

बन्धनमाप समुद्रो 'न दुर्जनस्यान्तिके निवसेत्।।'

कवि ने बड़ी ही सरल संस्कृत भाषा में जन-जन को नीतिविषयक उपदेश दिए है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य है:

(क) दुष्टे दण्डः प्रयोक्तव्यः।

(दुष्ट व्यक्ति के प्रति दण्ड का प्रयोग करना चाहिए अर्थात् दुष्ट को दण्डित किया जाना उचित है।)

(ख) स्त्रियं विवस्त्रां न वीक्षेत् ।

(स्त्री को वस्त्रहीन अवस्था में नही देखना चाहिए।)

(ग) क्वापि न गच्छदनाहूतं ।

(बिना बुलाए कहीं भी नही जाना चाहिए।)

(घ) दुष्टजनं दूरतः प्रणमेत् ।

(दुष्टजन को दूर से ही प्रणाम करना चाहिए अर्थात् दुष्टजन से दूर ही रहना उचित है।)

(ड.) नैकाकी संचरेद् विपिनं ।

(वन में अकेले घूमना नहीं चाहिए।)

कवि गुमानी ने इन नीति श्लोकों में जैसी सरल एवं सर्वजनग्राह्य संस्कृत का प्रयोग किया है वैसा ही प्रयोग अन्य कवियों एवं विद्वानों द्वारा भी किया गया होता तो आज संभवतः संस्कृत भाषा सामान्य जन के लिए इतनी दुरूह न होती।

4.3.4.2 समस्यापूर्तिः

यह कवि गुमानी की एक सर्वथा विलक्षण कृति है। इसमें सुन्दरतापूर्वक बहुप्रचलित लोकोक्तियों द्वारा समस्यापूर्ति की गई है। इसमें कवि श्लोक के आरम्भ के तीन चरणों में संस्कृत भाषा में समस्या को रखता है और चतुर्थ चरण में हिन्दी की लोकोक्ति को प्रस्तुत कर समस्यापूर्ति कर देता है। यथा:-

नादात्कन्यां बाणो दायी कृष्णध्वस्तो युद्धस्थायी।

पश्चादासीत्कन्यादायी झख मारी फिर खिचड़ी खाई।।

'जिस विधि राखै राम तिस विधि रहना भय्या - इस प्रचलित लोकोक्ति पर कवि की समस्यापूर्ति रमणीय है -

पूर्वमसुप्यत येन खटव्या हाटकमय्या

तेन नलेन प्रापितवने तृणशय्या।

वक्ति गुमानी देवशक्तिरिह नूनमज्य्या

जिस विधि राखै राम तिस विधि रहना भय्या।

कभी-कभी कवि पद्य के आरंभिक तीन चरण संस्कृत में रचकर अंतिम चरण में कुमाऊँनी बोली में समस्यापूर्ति करता है यथा -

शस्त्रपूरितो रथश्चमूभर:

सारथि बृहन्नला स्वयं धनुर्धर:।

कौरवैस्दप्यलं योद्धुमुत्तर:

'काठकि बिरालि करि माउं को कर।।

इसी प्रकार कभी नेपाली में पद्य के तीन चरणों को लिखकर कवि छन्द के चतुर्थ चरण में संस्कृत की लोकोक्ति द्वारा समस्या-पूर्ति करते हुए जन सामान्य के लिए नीतिपरक उपदेश दे देता है यथा -

अपना सबै पाउ वसाखु भाई,

तिन संग दुर्योधन ले अथाको।

गर्यो अचाक्ली फल दु:ख पायो

'विनाश काले विपरीत बुद्धि:।।

काव्य मे समस्यापूर्ति एक पुरानी विधा है लेकिन कवि गुमानी ने अपनी इन समस्यापूर्तियों में संस्कृत के साथ-साथ कुमाऊँनी, नेपाली आदि जन प्रचलित बोलियों का प्रयोग करके एक विलक्षणता ला दी है। साथ ही उसे सामान्यजन के लिए ग्राह्य भी बना दिया है।

4.3.4.3 ज्ञानभैषज्यमंजरी:

इस ग्रन्थ में मात्र अस्सी पद्यों में आयुर्वेद की सहायता से वेदान्त की शिक्षा वर्णित है। यहाँ कवि पद्य के पूर्वार्ध में तत्वज्ञान का निर्देश करके उत्तरार्ध में दृष्टान्त के द्वारा किसी रोगनाशक औषधि का वर्णन करता है। यथा -

तत्वंपदैक्यभानं भवप्रवाहन् बहून् निवारयति।

कुटजेन्द्रजाम्बुपानं यद्वद् विविधानतीसारान्।।

अर्थात् 'तत्' पदार्थ ब्रह्म एवं त्वं पदार्थ जीव-इन दोनों का ऐक्य ज्ञान होना नाना प्रकार के भव (संसार) सम्बन्धी जन्म-मरण रूप प्रवाहों को उसी प्रकार नष्ट करता है जिस प्रकार कुटज (क्वेड़ा) की छाल एवं इन्द्र जौ (क्वेड़ा के बीज) का क्वाथ (काढ़ा) अनेक प्रकार के अतिसारों का निवारण करता है।

गुरूशास्त्रजोपदेशः समर्हणीयः सदा भवक्लिष्टैः।

व्रणिभिस्तु माननीयो गुग्गुलनिम्बोद्भवोलेपः।।

अर्थात् संसार से दुखित हुए मनुष्यों के लिए, गुरूमुख से निःसृत् शास्त्रोपदेश सदा ग्रहण किए जाने योग्य है। इसी प्रकार गुग्गुल एवं नीम का लेप भी व्रण (घाव से पीड़ित) रोगियों द्वारा सर्वदा आदरपूर्वक सेवन करना उचित है। संसार के दुःखों से पीड़ित मनुष्य गुरूपदेश को माने तथा व्रण रोगी गुग्गुल एवं नीम को पीसकर व्रण में लगावें।

प्रस्तुत रचना में कवि यत्र-तत्र भगवान राम के प्रति अपनी अटूट आस्था को भी व्यक्त करता है। यथाः -

रामार्चनात्सहार्दान्मिथ्यादृष्टिर्विलीयते यादृक्।

अरूचिर्नश्यति तादृक् समीक्षाकाद्रकस्वरसात।।

अर्थात् जैसे प्रेम सहित राम का पूजन करने से मिथ्या दृष्टि (नास्तिकता) दूर हो जाती है वैसे ही मधु सहित अदरक के रस का सेवन करने से अरूचि (रोगी की भोजनादि के प्रति) दूर हो जाती है। इस तरह अपने इस ग्रन्थ में कवि ने अपने तत्व ज्ञान तथा आयुर्वेद विषयक चिकित्सकीय ज्ञान को बड़े ही सरल शब्दों में व्यक्त किया है।

4.3.4.4 भक्तिविज्ञप्ति सार:

इस ग्रन्थ के माध्यम से कवि ने अपने आराध्य देव श्री राम के प्रति लगभग सौ पद्यो में आत्म निवेदन किया है। उदाहरणार्थ:

देहं विदेह तनयाधिपते मदीयं

सा संश्रयिष्यति यदा तु जरा वराको।

हा हन्त हन्त मम जर्जरितेन्द्रियस्य

त्वत्तोऽपरः शरणदो भविता कः।।

इन्द्रियों के जर्जरित हो जाने पर राम के अतिरिक्त अन्य कोई शरणदाता कवि को दिखाई नहीं देता है। यह श्रीराम के प्रति उनकी अनन्य आस्था का सूचक है।

4.3.4.5 रामनापंचाशिका:

रामनापंचाशिका में कवि ने राम के प्रति अपनी भक्ति-भावना का परिचय देते हुए रकारादि क्रम से उनका नामसंग्रह किया है। यथा:

रामो रावणमर्दनो रघुवरो रूद्रप्रियो राघवो

राजेन्द्रो रणकर्कशो रविकुलोत्तंसो रमानायकः।

रत्नालंकरणो रहस्यचतुरो रुच्याकृती रूपवान्

रोचिष्णू रूचिराम्बरो रूचिकरो रज्यत्प्रजो राज्यदः।।

कवि गुमानी का चित्त राम में विशेष रूप से रमता है। राम को लक्ष्य करके कतिपय अन्य लघु ग्रन्थों की भी रचना इन्होंने की है।

4.3.4.6 रामनामविज्ञप्तिसारः

यह ग्रन्थ कवि की रामभक्ति का परिचायक है। इस ग्रन्थ में मात्र तैतीस पद्य है, जिनमें कवि स्वयं पर राम-कृपा की याचना करता है।

4.3.4.7 रामाष्टकम् अथवा रामाष्टपदी

यह ग्रन्थ भी श्रीराम के प्रति कवि की अनन्य आस्था को सूचित करता है। जयदेव के गीतगोविन्दम् की शैली का अनुकरण करते हुए गुमानी ने इस ग्रन्थ में ललित गेय पदों में श्रीराम की स्तुति की है। यथा-

भज भज भुवनाधारं स्मर जगदाधारं।

दशरथराजकुमारं धृतमनुजाकारं।।

4.3.4.8 विज्ञप्तिसार:

यह एक लघु कलेवर वाला ग्रन्थ है। इसमें मात्र तीस पद्य है। यहाँ भी कवि अपनी रामभक्ति को ही विज्ञापित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान श्रीराम के भक्तिभाव में तल्लीन लोकरत्न गुमानी के मुख से जब भी भक्तिमय वाणी निःसृत हुई तब-तब रामभक्ति से परिपूर्ण काव्य की सृष्टि हुई। उपर्युक्त लघु आकृति वाले रामभक्तिपरक ग्रन्थ इसी तथ्य को प्रकाशित करते हैं।

4.3.4.9 राममहिमावर्णनम्:

कविवर लोकरत्न गुमानी ने राम के प्रति अपनी अनन्य आस्था का प्रदर्शन करते हुए इस ग्रन्थ में कुल 127 पद्यों में राम की महिमा का गुणगान किया है।

4.3.4.10 पंचपंचाशिका:

यह वेदान्त विषयक ग्रन्थ है। मात्र पचपन पद्यों में ग्रथित इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'तत्त्वविद्योतिनी' भी है। इसमें उपनिषदों के सारभूत तत्त्वों का सरल संस्कृत भाषा में प्रतिपादन किया गया है। वेदान्त के जीव, ब्रह्म, आत्मा आदि गूढ़ तत्त्वों पर यह ग्रन्थ सहज ही प्रकाश डालता है। वेदान्त शास्त्र के प्रत्येक तथ्य को स्पष्ट करने के लिए यहाँ लौकिक व्यवहार को दृष्टान्त के रूप में उपनिबद्ध किया गया है। यथा -

स्वगुणैः पुरूषमाद्यं वशमानीयानुवर्तिनी माया
आनन्दयति विहारैर्नारी साध्वीव भर्तारम्।।

4.3.4.11 भक्तिविज्ञप्सिारः

एक सौ पद्यो वाला यह ग्रन्थ कविवर गुमानी के हृदय की भक्ति भावना का विज्ञापित करने वाला है।

4.3.4.12 दुर्जनदूषणम्

यह ग्रन्थ कवि को विशेष प्रिय आर्या छन्द में विरचित है। इसमें मात्र बयालिस पद्यों में दुष्टजनों की भत्र्सना तथा सज्जनों को उनसे दूर रहने की सलाह देते हुए लोकवि गुमानी कहते है:

हन्तु वयो जनन्याः कन्तुमवन्याः सुदूरं भारं।
क्लेशयतुमार्यलोकान् दुर्जन ते केवलं जन्म।।

अर्थात् हे दुर्जन। तेरा जन्म इस लोक में केवल तीन ही काम के लिए है। एक तो माता

की युवावस्था का नाश करने के लिए, दूसरा पृथ्वी पर भारस्वरूप और तीसरा सज्जनों को दुःख देने के लिए।

द्विष्टस्य सज्जनेन द्विषंतोऽसज्जन तवोभयथा।

असिकूष्माण्डन्यायात् क्षयमुत्पश्यामि पापात्मन्।।

हे दुर्जन! सज्जन तुमसे द्वेष करें अथवा तू सज्जनों से द्वेष करे; दोनों ही स्थितियों में नाश तेरा ही देखता हूँ जैसा कुम्हड़े पर तलवार गिरे या तलवार पर कुम्हड़ा गिरे, दोनों ही में नाश तो कुम्हड़े का ही है।

4.3.4.13 जगन्नाथाष्टकम्:

इसमें भगवान जगन्नाथ को लक्ष्य कर भावपूर्ण ललित गीत रचे गए हैं। यह लघु कलेवर वाला ग्रन्थ है। इसमें मात्र आठ पद्य है।

4.3.4.14 गंगाआर्याशतकम्

इस ग्रन्थ में कवि ने एक सौ दो पद्यो में पतित पावनी गंगा की स्तुति की है। गंगा की स्तुति करते हुए कवि गुमानी कहते है -

करतलगतं कृपावति कैवल्यं त्वत्पयः समाश्रयताम्।

ज्ञानादेव विमुक्तिं वदतामुक्तिं मुधा मन्ये।।

गंगा से अपना संबन्ध कवि राम के कारण ही मानते है। इसी ग्रन्थ में एक स्थान पर वे कहते है:

रघुराजमात्मनोहं जनकं जानामि जानकीं जननीम्।

तदभिन्नैकतनुं त्वां मातापितरौ समं जाने।।

राम को वे अपना पिता और जानकी को अपनी जननी मानते है। उनसे अभिन्न सम्बन्ध होने के कारण ही हे गंगा! तुम भी कवि के लिए माता-पिता समान हो।

4.3.4.15 क्रीड़ा विषयक ग्रन्थ:

सद्रंजाष्टकम्, चतुःसारिकावर्णनम्, द्यूतवर्णनम् इनमें क्रमशः शतरंज, चैसर एवं द्यूतक्रीड़ा का वर्णन किया गया है। इन रचनाओं द्वारा कवि का फारसी भाषा विषयक ज्ञान प्रकट होता है। फारसी के शब्दों का प्रचुर प्रयोग करके कवि ने तत्कालीन शासकीय वातावरण पर फारसी के प्रभाव को सूचित किया है। यथा -

चङ्गो वराचः सुरख किमाचः

सफेदश्म्शेर गुलामताजाः

सन्त्यष्टरंगा इह गञ्जफासु

पृथक् पृथक् द्वारशधा विभिन्ना।।

4.3.4.16 देवतास्तोत्राणि:

इस ग्रन्थ में गुमानी द्वारा गणेश-राम-शिव-सूर्य-सरस्वती-लक्ष्मी-दुर्गा-गंगा- हनुमान आदि देवी-देवताओं की स्तुति करते हुए अंत में पुनः श्रीराम की स्तुति की गई है। इन स्तुति-पद्यों में प्रायः संयुक्त व्यंजनों तथा दीर्घस्वरों का अभाव दिखाई देता है। गंगा की स्तुति दृष्टव्य है -

जय हरमुकुटतुहिनसहचरि, जय हरिपदनखजनितजले,

जय जलनिधिसति विमलवसनवति, जय भगवति करधृतकमले।

जय शतमखपुरविहरणकृतमुखि, जय शतमुखि शशधरधवले

जय जगजननि वृजिनभरविजयिनि, जय सुरधुनि कृतसुकृतफले।।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त लोकरत्न गुमानी द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ है जिनमें से कुछ रचनाएँ लुप्त हो चुकी है; उनका केवल नाममात्र सुनाई देता है तथा कुछ ग्रन्थ जीर्ण-शीर्ण या खण्डित रूप में प्राप्त है। यथा - राममहिम्नस्तोत्रम्, कृष्णाष्टकम्, कालिकाष्टकम् ये तीनों ग्रन्थ आज अनुपलब्ध है।

4.3.4.17 अन्य ग्रन्थ:

कवि गुमानी अपने जीवन काल में देशाटन करते हुए जिन-जिन राजाओं के सानिध्य में रहे, उन राजाओं के जीवन-चरित पर इन्होंने ग्रन्थ-रचना की। यथा-

(1) पटियाला नरेश कर्णसिंह का जीवन चरित- यह सात सर्गों में रचित ग्रन्थ है।

(2) नहाणनरेश फतेहशाह जीवन चरित - यह तीन सर्गों में रचित है।

(3) अलवर नरेश वनेसिंह का नीतिविषयक ग्रन्थ - यह पाँच सर्गों में रचित ग्रन्थ है।

दुर्भाग्य से ये तीनों ग्रन्थ काल कवलित हो जाने के कारण आज अप्राप्य है। गुमानी कवि ने धर्मशास्त्र से संबंधित ग्रन्थों की रचना भी की जिनके नाम है - 'निर्णयसारः, 'तिथिनिर्णयः', 'कालनिर्णय', 'अशौचनिर्णयः'। ये ग्रन्थ नष्टप्राय स्थिति में वाराणसी निवासी पंडित जनार्दन पाण्डे के पुस्तकालय में प्राप्य है। लोकरत्न गुमानी प्रतिभा सम्पन्न आशुकवि थे। कवि ने

परिस्थिति तथा वातावरण के अनुरूप अनेक विषयों पर स्फुट रूप से पद्य-रचनाएँ की। तत्कालीन अंग्रेजों की भाषानीति को लक्ष्यकर गुमानी कहते हैं- ने वेदकुशलं न स्मृतिविदं न तंत्रोद्धुरम्

न शास्त्रविहितश्रमं न समधीत साहित्यकम्
लिखन् पठति यावनीमपि य आंगरेजीं लिपिम्
तमेव वत् मन्यते बुधजनं फिरंगीजनः।।

इनके द्वारा रचित स्फुट पद्यों का विषय कहीं मनोविनोद है तो कहीं धर्म की कुरीतियों को उजागर करना कवि का लक्ष्य है। कहीं-कहीं अपने स्फुट पद्यों द्वारा कवि गुमानी अंग्रेजी राज्य की भत्र्सना करने से भी नहीं चूकते है। यथा - भारत में अंग्रेजों के आगमन को वे साक्षात् कलि का आगमन मानते है। अंग्रेजी शासन की लूट-खसोट, न्यायालयों में प्रचलित उत्कोच भक्षण (घूसखोरी) और वंचना को देख कवि गुमानी को ऐसा प्रतीत होता है जैसे अंग्रेज और कलि में कोई घनिष्ठ संबन्ध है -

कलि किल फिरंगिणा सकलिना फिरंगीजनो,
नभा इव तडित्वता स नभसा तडित्वानिव।
विभाति सुतरामहो कथयते गुमानी कवि
र्मिथः फलविधायको भवित योग्ययोः संगमः।।

हिन्दी भाषा में भी गुमानी की अनेक फुटकर रचनाएँ प्राप्त होती है। कविवर लोकरत्न गुमानी की ये प्राप्य-अप्राप्य, प्रकाशित-अप्रकाशित कृतियाँ उनकी कवित्व प्रतिभा तथा उनकी संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करती है। कवि की पूर्वोक्त कविताओं से उनके बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व का पता चलता है।

4.3.4.18 लोकरत्न गुमानी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

कविवर गुमानी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि तथा संवेदनशील हृदय वाले विनोद प्रिय व्यक्ति थे। उनकी रचनाओं से उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं प्रकट होती है:

बहुभाषाविद्: —

लोकरत्न गुमानी की अधिकांश रचनाएँ संस्कृत में हैं। उनकी संस्कृत भाषा सरल-सुगम एवं आलंकारिता आदि आडंबरों से सर्वथा परे जन-जन के लिए सुबोध है। हिन्दी (खड़ी बोली) का तो उन्हें आदि कवि कहना चाहिए। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (सन् 1850) से माना जाता है जबकि इससे चार वर्ष पूर्व ही सन् 1846

ई0 में ही खड़ी बोली में काव्य रचना करने वाले गुमानी गोलोकवासी हो चुके थे। अतः उन्हें हिन्दी (खड़ी बोली) का आदि कवि मानना चाहिए। संस्कृत एवं हिन्दी के अतिरिक्त वे कुमाऊँनी, नेपाली, अंग्रेजी एवं फारसी भाषा के भी ज्ञाता थे। नेपाली और कुमाऊँनी में उन्होंने पद्य-रचना की। शतरंज तथा चैसर आदि खेलों के वर्णन में उन्होंने अपने फारसी एवं अंग्रेजी विषयक ज्ञान का परिचय दिया है।

भक्तिभावना: —

गुमानी की रचनाओं से भगवान राम के प्रति उनकी अटूट आस्था का दिग्दर्शन होता है। यद्यपि उन्होंने हिन्दू धर्म के अन्यान्य देवी-देवताओं की स्तुति भी अपने काव्यों में की है लेकिन कवि का चित्त राममय है। सभी अवतारों, सभी वैदिक एवं पौराणिक देवी-देवताओं को वे राममय ही देखते है। भक्तिविज्ञप्तिसार, रामाष्टकम्, पंचपंचाशिका, रामनाम विज्ञप्तिसार, राममाहिमावर्णनम् आदि ग्रन्थ स्वतंत्र रूप से राम को ही समर्पित है। अन्य गूढ़ विषयों पर रचना करते समय भी वे राम नाम का स्मरण करना नहीं भूलते। यह सब राम के प्रति कवि की अगाध भक्ति-भावना का परिचायक है।

विनोदप्रिय व्यक्ति:—

लोकरत्न गुमानी स्वभाव से विनोदप्रिय प्रतीत होते है। वे स्थान-स्थान पर वे विभिन्न विषयों पर चुटकियाँ लेते दिखाई देते है। यथा, दानपर्व पर किसी ब्राह्माण को देखकर दान देने के भय से घर में छिपने वाले यजमान बनिए के प्रति वे इस प्रकार व्यंग करते हैं -

पर्वणि दानभिया द्विजं दृष्टवान्तर्वव्रज।
अन्येद्युर्वणिगाह तं पालागन महाराज।

समस्यापूर्तियों में उनकी व्यंग्प्रियता सहज ही झलकती है। ढोंगी साधुओं पर व्यंग्य के माध्यम से प्रहार करने से वे नहीं चूकते है। किसी नानकपंथी साधु का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है -

कण्ठे सूत्रं चूडामात्रं किचिन्मुण्डितमुण्डे।
क्रूरामनवच्छिन्नामसकृद् वाचं विभ्रत्तुण्डे।।
भिक्षामाशु न दत्ते योऽस्मिन् नेत्रे विभ्रत्तुण्डे,
नानकपन्थी सुत्रेसाही खड़ा बजावे दण्डे।।

संवेदनशील: —

कवि स्वभाव से ही संवेदनशील होता है। अतः गुमानी भी इससे परे नहीं है। अंग्रेजो के अत्याचारों से आक्रान्त जनता की पीड़ा से उनका हृदय उद्वेलित हो उठता है; इसीलिए अंग्रेजों के आगमन को वे साक्षात् कलि का आगमन कहते है। आज से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व अंगे्रजी राज्य में न्यायालयों की जो दशा कवि ने वर्णित की है लगभग वही दशा आज भी है। अतः इस दृष्टि से कवि गुमानी आज भी प्रासंगिक ठहरते है। अंग्रेजी राज्य के न्यायालयों और अंग्रेजों की भाषा-नीति का कवि ने सम्यक् चित्रण किया है। यह उनकी संवेदनशीलता का परिचायक है।

आशुकवि: —

कवि गुमानी कवित्व-प्रतिभा से सम्पन्न आशुकवि है। आवश्यकतानुसार सद्यः सटीक काव्यरचना करने में वे निष्णात है। गढ़वाल के 'टिहीरी' शहर के नाम की व्युत्पत्ति के विषय में लिखा उनका यह पद्य कवित्व-प्रतिभा के साथ-साथ उनकी आशुकविता करने की शक्ति का परिचायक है -

सुरगङ्गतटी रसखानमही धनकोशभरी यहु नाम रह्यो।
पद तीन बनाय रच्यो बहुविस्तर वेग नहीं जब जात कह्यो।।
इन तीन पदो के वसान वस्यो पद अक्षर एकहि एक लह्यो।
जनराज सुदर्शनशाह पुरी टिहीरी इहि कारण नाम रह्यो।।

बहुमुख प्रतिभा सम्पन्न: —

कवि गुमानी बहुज्ञ है। पुराण, इतिहास, रामायण, महाभारतादि के वे अच्छे ज्ञाता है। इन ग्रन्थों के विविध प्रसंगों का उन्होंने समस्यापूत्रि, हितोपदेश आदि में व्यापक प्रयोग किया है। वेदान्त तथा दर्शन के भी वे मर्मज्ञ है। ज्ञानभैषज्यमंजरी उनके आयुर्वेद विषयक ज्ञान को सूचित करने के लिए पर्याप्त है। व्याकरण तथा साहित्यशास्त्र में भी वे पारंगत है।

खेलविषयक ग्रन्थ—

द्यूतवर्णनम्, चतुःसारिकावर्णनम्, सद्रजाष्टकम् कवि गुमानी की मनोरंजनप्रियता तथा खेल-विषयक जानकारी को सूचित करते है। वे अंग्रेजी शासन प्रणाली को भलीभाँति जानते थे। उनके निर्णय ग्रन्थ (तिथि, आचार एवं अशौच) धर्मशास्त्र एवं ज्योतिष विषय पर उनके आधिपत्य को सूचित करते है।

देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत: —

कवि गुमानी ने अपने साहित्य में यत्र-तत्र अंग्रेजी राज्य की कटु आलोचना की है। एक वीर सपूत कर्मणा देशप्रेम का परिचय देता है जबकि एक कवि मनसा-वाचा अपने देशप्रेम को

व्यक्त कर दूसरों को भी देशप्रेम की शिक्षा देता है। कवि गुमानी ने बड़ी कुशलतापूर्वक आलंकारिक भाषा में अंग्रेजी राज्य की निन्दा की है। साथ ही पुराण, रामायण और महाभारत आदि से विषय चुनकर उन पर काव्यरचना करके कवि ने अपने देश एवं संस्कृति से प्रेम करने का पाठ पढ़ाया है।

अभ्यास प्रश्न:

टिप्पणी

1. हितोपदेशतकम्
2. समस्यापूर्तिः
3. ज्ञानभैषज्यमंजरी

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. लोकरत्न गुमानी के पूर्वज कहाँ से आकर कुमाऊँ में बस गए थे?

(क) उज्जयिनी (ख) कन्नौज

(ग) कर्नाटक (घ) महाराष्ट्र

2. गुमानी का जन्म हुआ था -

(क) सन्1650 ई. में (ख) सन् 1750 ई. में

(ग) सन् 1790 ई. में (घ) सन् 1820 ई. में

3. गुमानी के किस राजा की राजसभा को सुशोभित किया था-

(क) रूद्रचन्ददेव (ख) गुमानी देव

(ग) बाजबहादुरचन्द (घ) दुलीचन्ददेव

4. कवि गुमानी का नीतिविषयक ग्रन्थ है -

(क) नीतिशतकम् (ख) नीतिसारः

(ग) हितोपदेशशतकम् (घ) नीतिवचनम्

5. कवि गुमानी ने किस देवता से संबंधित सर्वाधिक पद्य लिखे -

(क) कृष्ण (ख) राम

(ग) शिव (घ) इन्द्र

6. कवि गुमानी की शतरंजविषयक रचना है-

(क) सद्रजाष्टकम् (ख) चतुःसारिकावर्णनम्

(ग) द्यूतवर्णनम् (घ) शतरंजवर्णनम्

रिक्त स्थान की पूर्ति

1. स्त्रियं ..... न वीक्षेत्।
2. कवि का पूरा नाम लोकरत्न ..... 'गुमानी' था।
3. गुमानी के चिकित्सकीय ज्ञान को बताने वाला ग्रन्थ है।
4. कवि गुमानी ..... के भी पहले कवि हैं।
5. गुमानी ने सात सर्गों में पटियाला नरेश ..... का जीवन चरित भी लिखा था।
6. गुमानी का काल भारत में ..... से पराधीनता का काल था।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुरगंगतटी रसखानमही धनकोशभरी यहु नाम रह्यो।

इस पंक्ति में गढ़वाल के किस नगरी का नाम पिरोया हुआ है।

2. कवि ने मुखर रूप में किसके राज्य (शासन) की निन्दा की है।
3. गुमानी हिन्दी, संस्कृत, नेपाली, कुमाऊँनी एवं गढ़वाली के अलावा अन्य किन-किन भाषाओं को जानने वाले थे।
4. दुर्जनों के दोषों को इंगित करने वाला कवि कौसा सा ग्रन्थ है।
5. गुमानी के पिता का नाम क्या था?
6. कवि का बाल्यकाल कहाँ बीता?

सत्य/असत्य बताइए

1. गुमानी कवि का उपनाम था।
2. गुमानी की मृत्यु सन् 1899 में हुई थी।
3. गुमानी वैद्यकी भी जानते थे।
4. गंगार्याशतकम् गुमानी की कृति नहीं है।
5. कवि गुमानी सीता-राम को माता-पिता तुल्य मानते हैं।
6. कविवर गुमानी श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे।

नोट - ऊपर दिए गए प्रश्नों के उत्तर पाठ्य सामग्री के अन्त में दिए गए हैं किन्तु हमारा सुझाव है कि आप स्वमूल्यांकन हेतु उनसे अपने उत्तरों का मिलान करके देखें।

4.4 सारांश:-

हिमालय की गोद में स्थित कूर्मांचल की धरती में जनमे लोकरत्न पन्त गुमानी संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि हुए। यद्यपि इनके द्वारा रचित कोई विशाल ग्रन्थ नहीं है तथापि इनकी अनेकों रचनाएँ प्राप्त होती है। इनकी एक दो ही रचनाएँ ही ऐसी है जिनमें सौ या एक सौ पच्चीस पद्य हो अन्य रचनाएँ पचास-पचपन या उससे भी कम पद्यों वाली है। वास्तव में ये प्रतिभा सम्पन्न आशुकवि थे। तत्कालीन परिस्थितियों तथा सामाजिक दशा को देख-सुन कर इनके मन में जो विचार आते थे उन्हें ये पद्यबद्ध कर देते थे। लगभग 150-200 वर्षों तक इनकी रचनाएँ मौखिक रूप में ही जनमानस में व्याप्त रही। बहुत बाद में (20 वीं शताब्दी) इनकी रचनाओं को संग्रहीत एवं संकलित कर श्री कैलाश चन्द्र लोहनी जी ने 'गुमानी ग्रन्थावली' के नाम से प्रकाशित करवाया। छोटे ग्रन्थ और छोटी-छोटी पद्य रचनाएँ होते हुए भी संस्कृत साहित्य में गुमानी का योगदान अमूल्य है। संस्कृत के साथ-साथ ये हिन्दी, कुमाऊँनी, गढ़वाली तथा नेपाली में भी काव्य रचना किया करते थे। संस्कृत, कुमाऊँनी, संस्कृत-गढ़वाली, संस्कृत नेपाली एवं संस्कृत-हिन्दी मिश्रित इनकी रचनाएँ सरल-सरस, चुटीले व्यंग्य से युक्त तथा सर्वग्राही है। उनकी कृतियों एवं व्यक्तित्व की विशेषताओं से स्पष्ट है कि सच्चे अर्थों में 'लोकरत्न' थे।

4.5 पारिभाषिक शब्दावली/कठिन शब्द

सद्रजाष्टक	- इसका अर्थ है शतरंज का खेल
चतुःसारिका	- इसका अर्थ है चैसर का खेल
फिरंगीराज	- अंग्रेजों का राज (शासन)

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:-

1. हेतु टिप्पणी इकाई की उपखण्ड संख्या 4.3.4.1 देखे।
2. हेतु टिप्पणी इकाई की उपखण्ड संख्या 4.3.4.2 देखे।
3. हेतु टिप्पणी इकाई की उपखण्ड संख्या 4.3.4.3 देखे।

बहुविकल्पीय

(1) घ	(2) ग
(3) ख	(4) ग
(5) राम	(6) क

रिक्त स्थानपूर्ति

(1) विवस्त्रं (2) पन्त

(3) ज्ञानभैषज्यमंजरी (4) खड़ी बोली हिन्दी

(5) कर्णसिंह (6) अंग्रेजों

अतिलघुउत्तरीय

(1) टीहीरी (2) अंग्रेजों के

(3) अंग्रेजी-फारसी (4) दुर्जनदूषणम्

(5) देवनिधि पन्त (6) ग्राम-उपराड़ा, पिथौरागढ़

सत्य/असत्य

(1) सम्य (2) असत्य

(3) सत्य (4) असत्य

(5) सत्य (6) असत्य

4.7 संदर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री:-

1. गुमानी ग्रन्थावली, कैलाश चन्द्र लोहनी, प्रकाशक प्रेम ग्रन्थ भनार, टनकपुर नैनीताल

2. सागरिका पत्रिका, सप्रदशवर्षेतृतीयोगंरू, कूर्मांचलेषु संस्कृत साहित्यसंवर्धनम्, बसन्तबल्लभ भट्ट

3. उत्तरीय पत्रिका, गुमानी स्मृति विशेषांक, गुमानी पन्त और उनका काव्य, भास्कर भट्ट।

4. सुप्रभातम् पत्रिका।

5. काव्यमाला, द्वितीय गुच्छक

6. सागरिका पत्रिका, पृ0सं. 16-17

4.8 निबन्धात्मक प्रश्न:-

1. कविवर गुमानी का जीवन परिचय प्रस्तुत कीजिए।

2. लोकरत्न गुमानी की रचनाओं का परिचय दीजिए।

3. लोकरत्न गुमानी के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. लोकरत्न गुमानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक लेख लिखिए।

इकाई - 5 शिवप्रसाद भारद्वाज का जीवन परिचय एवं उनकी कृतियाँ

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 इकाई की पाठ्य सामग्री

5.3.1 शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म एवं पूर्वज

5.3.2 शिक्षा दीक्षा

5.3.3 आजीविका

5.3.4 शिवप्रसाद भारद्वाज का रचना संसार

5.3.4.1 शिवप्रसाद भारद्वाज के प्रकाशित काव्य

5.3.4.2 शिवप्रसाद भारद्वाज के प्रकाशित नाट्य

5.3.4.3 शिवप्रसाद भारद्वाज के प्रकाशित कहानियाँ

5.4 सांराश

5.5 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री

5.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.7 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना:-

''उत्तराखण्ड में संस्कृत की आधुनिक प्रतिभाएँ'' इस शीर्षक वाली प्रथम खण्ड की पंचम इकाई ''शिवप्रसाद भारद्वाज का जीवन परिचय एवं उनकी कृतियाँ'', से संबंधित है। इससे पूर्व की इकाई में आप उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र के सुप्रसिद्ध संस्कृत रचनाकार श्रीकृष्ण जोशी, श्रीहरिनारायण दीक्षित एवं लोकरत्न गुमानी के व्यक्तित्व-कृतित्व आदि के विषय में विस्तार से जान चुके हैं। इस इकाई में शिवप्रसाद भारद्वाज एवं उनके साहित्य के विषय में आप विस्तार से जानेंगे।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के 20 वीं सदी के सुविख्यात संस्कृत रचनाकार श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के जीवनवृत्त एवं उनकी कृतियों के बारे में विस्तार से जानेगें। इससे आप संस्कृत साहित्य में शिवप्रसाद भारद्वाज के योगदान को भलीभाँति जान लेगें।

5.2 उद्देश्य:-

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप—

- बता पाएंगे कि गढ़वाल क्षेत्र के संस्कृत साहित्यकार शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म कहाँ हुआ।
- शिवप्रसाद के माता-पिता, उनकी वंशावली आदि के विषय में अच्छी तरह से बता सकेंगे।
- शिवप्रसाद के कार्यक्षेत्र (आजीविका) आदि के बारे में जानकारी दे पाएंगे।
- कवि के महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतसंग्रह, स्तोत्र काव्य, मुक्तक काव्य आदि के बारे में अच्छी तरह बता सकने में समर्थ होगे।
- शिव प्रसाद के समग्र संस्कृत कृतियों का परिचय दे पाएंगे।
- इनके द्वारा हिन्दी भाषा में विरचित ग्रन्थों के बारे में जानकारी दे सकेंगे।

5.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:-

उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में प्राचीन काल से ही यद्यपि संस्कृत के पठन-पाठन को संकेतित करने वाले साधन यथा-संस्कृत भाषा में लिखे गए शिलालेलख आदि तो मिलते है तथापि लिखित संस्कृत साहित्य वहाँ बहुत बाद से प्राप्त होता है। संभवतः प्राचीन साहित्य विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण प्रकाश में ही नहीं आ पाया और समय के प्रभाव से नष्ट हो गया। राजनीतिक अस्थिरता भी पुराने साहित्य के नष्ट होने के कारण रही होगी। यह भी संभव है कि गोरखा शासन में यहाँ का काफी साहित्य नेपाल ले जाया गया। गढ़वाल में लिखित संस्कृत साहित्य 17 वीं सदी के बाद का ही मिलता है, किन्तु उसके बाद यहाँ संस्कृत साहित्य लेखन की अविरल परम्परा देखने को मिलती है।

गढ़वाल के संस्कृत साहित्यकारों की परम्परा में 20 वीं सदी के साहित्यकार शिवप्रसाद भारद्वाज एक प्रशंसनीय नाम है। इनके जीवन चरित तथा रचनाओं का विवरण इस प्रकार है -

5.3.1 शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म एवं पूर्वज:

शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म कार्तिक मास 21 शुक्रवार विक्रम संवत् 1979 (तद्नुसार सन् 1922 ईसवी) में पौड़ी के समीप स्थित ग्राम-डांग, पट्टी गगवाडस्यू में हुआ था। इनके पिता का नाम हीरामणि तथा माता का नाम उत्तरादेवी है। हीरामणि आजीविका हेतु देहरादून के अन्र्तगत रायपुर में बस गए थे। इनके दादा रामानन्द तथा परदादा श्री छिद्दाराम थे। दुर्भाग्यवश जब शिवप्रसाद छः वर्ष के थे तभी इनकी माता का देहावसान हो गया और ये माता के स्नेह से वंचित हो गए।

5.3.2 शिक्षा दीक्षा:

कवि शिवप्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा हरिद्वार में हुई। हरिद्वार से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने आगे की शिक्षा संसकृत महाविद्यालय, गढ़मुक्तेश्वर में रहकर प्राप्त की। यहाँ ये 20 वर्ष की अवस्था तक विद्याध्ययन करते है। सन् 1942 से 1959 ईसवी तक इन्होंने दिल्ली में शिक्षा प्राप्त की। दिल्ली प्रवास इनके जीवन के उत्थान का आरंभ माना जा सकता है। यद्यपि इन्होंने वाराणसी से शास्त्री एवं साहित्य में आचार्य की उपाधियाँ प्राप्त की थी तथापि दिल्ली से बी0ए0 एवं एम0ए0 (संस्कृत) की परीक्षाऐं भी उत्तीर्ण की। बाद में पंजाब विश्वविद्यालय से ''पश्चाद्वर्ती काव्यशास्त्र के स्रोत के रूप में बाल्मीकी रामाण'' विषय पर शोधोपाधि (पी-एच0डी0) प्राप्त की। इन्होंने जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू से ''संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य बिम्ब-विवेचन'' विषय पर डी0लिट् की उपाधि भी प्राप्त की।

5.3.3 आजीविका:

शिवप्रसाद भारद्वाज ने अपने दिल्ली प्रवास के समय सर्वप्रथम दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत अध्यापन कार्य किया। नवम्बर सन् 1959 में श्री भारद्वाज विश्वबन्धु वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। अध्ययन-अध्यापन एवं लेखन ही इनके जीवन का मुख्य ध्येय रहा। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय में भी संस्कृत व्याख्याता के पद पर कार्य किया। वहीं से ये 1985 में रीडर पद से सेवानिवृत्ति हुए। सेवानिवृत्ति के बाद भी अपने पुत्र के पास भारद्वाज निकेतन देहरादून में रहते हुए व्याख्यान-माला के साथ-साथ संस्कृत हिन्दी में इनका लेखन कार्य सतत् रूप से चलता रहा।

5.3.4 शिवप्रसाद भारद्वाज का रचना संसार:

शिवप्रसाद भारद्वाज जी संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और प्राकृत भाषा के अच्छे जानकार थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारद्वाज जी ने संस्कृत भाषा में अनेक ग्रन्थों की रचना की। इनकी अनेक संस्कृत कृतियाँ प्रकाशित भी है। अनेक रेडियों रूपकों का आकाशवाणी से प्रसारण भी हो चुका है। इन्होंने संस्कृत साहित्य की विभिन्न प्राचीन विधाओं के साथ-साथ कतिपय नवीन विधाओं पर भी काव्य रचना की। उनकी समस्त प्रकाशित एवं अप्रकाशित कृतियों का विवरण इस प्रकार है -

5.3.4.1 शिवप्रसाद भारद्वाज के प्रकाशित काव्य:

1. लौहपुरूषावदानम् महाकाव्य: —

श्री भारद्वाज के जीवन का प्रारंभिक समय भारत की पराधीनता का काल था। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय शिवप्रसाद लगभग 25 वर्ष के युवा थे। उस समय की परिस्थितियों ने उनके युवा मन को झकझोर कर रख दिया। संवेदनशील कवि हृदय शिवप्रसाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारियों से अत्यन्त प्रभावित थे। सरदार बल्लभ भाई पटेल की रीति-नीति तथा उनका व्यक्तित्व कवि के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया। उन्होंने लौहपुरूषावदानम् नामक महाकाव्य में स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता सरदार पटेल, जो लौह पुरूष के रूप में विख्यात थे, के जीवन-चरित का वर्णन किया है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का वर्णन करने वाला यह एक ऐतिहासिक महाकाव्य है। इस महाकाव्य में 32 सर्ग है, जिनमें प्रमुखतः आर्या छन्द सहित विविध छन्दों से युक्त दो हजार सात सौ चैवालिंस (2744) श्लोक है। इस विशाल महाकाव्य में

कवि ने सरदार पटेल के जीवन का विस्तार से वर्णन किया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1978 क बाद का है। संस्कृत के आधुनिक कवि शिवप्रसाद की स्वकृत हिन्दी अनुवाद से युक्त यह अनुपम कृति है, जो किसी कवि को अमर बनाने में सक्षम है।'लौहपुरूषावदानम्' महाकाव्य की कथावस्तु व्यापकता लिए हुए है। सरदार बल्लभ भाई पटेल के जीवन से संबद्ध समस्त घटनाओं को कवि ने काव्यमयी शैली में 32 सर्गों के अन्तगत आबद्ध किया। इसमें सबसे कम श्लोक चतुर्थ सर्ग में (केवल 30 श्लोक) तथा सर्वाधिक श्लोक (162 श्लोक) इक्तीसवें सर्ग में हैं। काव्य के नायक सरदार बल्लभ भाई पटेल है, जो धीरोदात्त के गुणों से युक्त है। महाकाव्य का अंगीरस उत्साह स्थायी भाव वाला वीर रस है अन्य करूण-वात्सल्य आदि रस यहाँ गौण रूप में हैं। कवि ने अनुष्टुप, मालिनी, बसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता, रधोद्धता जैसे पुराने छन्दों के साथ ही पंचचामर, त्रोटक, कुसुम विचित्रा, धनाक्षरी जैसे अप्रचलित छन्दों का भी प्रयोग किया है। कवि ने अपने इस महाकाव्य में अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, यमक, रूपक, सन्देह, अर्थान्तरन्यास, विस्मय आदि अलंकारों का सफल प्रयोग किया है।

2. भारत सन्देश: —

यह भारद्वाज जी का सुप्रसिद्ध प्रकाशित खण्ड काव्य है। इसे सन्देश काव्य भी कहा जाता है। भारत के राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद द्वारा सारे संसार को विश्वशांति का संदेश दिए जाने का चित्रण इस काव्य में है। इस खण्डकाव्य के दो भाग हैं। पूर्व भाग में द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका से त्रस्त कुछ राष्ट्रों के द्वारा अपने प्रतिनिधियों को शान्ति संदेश हेतु भारत भेजे जाने का वर्णन है ताकि शस्त्रास्त्रों की दौड़ में संलिप्त वे राष्ट्र तटस्थ नीति वाले तथा पंचशील के सिद्वान्तों के समर्थक भारत से शान्ति सन्देश पा सके। उत्तर भाग में विदेशी प्रतिनिधियों द्वारा भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात तथा तत्कालीन राष्ट्रपति से शान्ति सन्देश प्राप्त किए जाने का वर्णन है। इसमें पंचशील के सिद्वान्तों तथा मानव मात्र के प्रति कल्याण कामना व्यक्त की गई। है। यह शान्त रस प्रधान काव्य है साथ ही करूण एवं श्रृंगार रस भी कहीं-कहीं दिखाई देता है। काव्य की भाषा अत्यन्त सरल-सरस एवं बोधगम्य है। इस काव्य से शिवप्रसाद भारद्वाज की देशप्रेम की भावना भलीभाँति व्यक्त होता है। काव्य में वण्र्यविषय के अनुरूप ही रस छन्द एवं अलंकारादि का प्रयोग हुआ है।

3. महावीर चरितम्: —

जैन धर्म के प्रवर्तक वर्द्धमान (महावीर) के जीवन वृत्ति का चित्रण इस काव्य में किया गया है। 38 पृष्ठों वाले इस काव्य में हिन्दी अनुवाद सहित महावीर के जीवन की महत्वपूर्ण

घटनाओं का रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें महावीर कालीन भारतवर्ष के इतिहास का भी वर्णन है। अतः इसे ऐतिहासिक खण्डकाव्य माना जा सकता है। इसमें शान्त रस की प्रमुखता है क्योंकि महावीर की संसार से विरक्ति तथा उन्हें कैवल्य की प्राप्ति शान्त रस की प्रतीति कराने वाले हैं। महावीरचरितम् में वार्णिक छन्दों की बहुलता है। इसमें उपजाति, उपेन्द्रवज्रा, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, मालिनी, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी आदि छन्दों तथा अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, अतिश्योक्ति आदि अलंकारों का यथावसर प्रयोग किया है। महावीरचरितम् की भाषा शैली सरल एवं सहज है। कवि ने महावीर के धर्म-प्रवचनों को अत्यन्त सरल एवं मनमोहक भाषा शैली में प्रस्तुत किया है। कवि के उपर्युक्त तीनों ग्रन्थ सन् 1978 ई0 से पहले प्रकाशित हो चुके हैं।

4. गुरू रविदास शतकम्:—

यह भारतवर्ष के प्रसिद्ध भक्त कवि सन्त रविदास, जिन्हें रैदास भी कहा जाता है, के जीवन-चरित से संबंधित ग्रन्थ है। इसमें सन्त रविदास के जीवन की विविध घटनाओं को सौ श्लोकों में विभिन्न छन्दों का प्रयोग करते हुए चित्रित किया गया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1984 में रविदास ट्रस्ट, चण्डीगढ़ से हुआ है।

5. इन्दिरा-गौरवम्: —

सन् 2004 में प्रकाशित यह ग्रन्थ 209 आर्या छन्दों में लिखा गया है। काव्य का हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद भी स्वयं कवि द्वारा किया गया है। यह काव्य देश की सशक्त महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की सन् 1984 में मृत्यु के बाद संवेदना स्वरूप लिखा गया है। इसमें इन्दिरा गाँधी के जन्म से मृत्यु तक के जीवन-वृत्त को संक्षेप में दर्शाया गया है। काव्य में शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह करते हुए लेखक ने जहाँ नायिका की उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन किया है वंही यथावसर उनकी आलोचना करने से भी वह नहीं चूका है।

6. अभिनव रागगोविन्दम्: —

यह आधुनिक शैली के मौलिक गीतों का संग्रह है। इसमें संस्कृत भाषा में गज़ल एवं कव्वालियाँ है। शायद यह संस्कृत भाषा में कव्वाली एवं गज़ल लेखन का प्रथम प्रयोग होगा। इसका प्रकाशन सन् 1979 ई0 में हुआ। इस ग्रन्थ पर कुरूक्षेत्र विश्व विद्यालय में एम0फिल0 स्तर पर शोध कार्य भी हो चुका है।

7. तरंगलेखा: —

इस प्रकाशित ग्रन्थ में कवि द्वारा समय-समय पर लिखित फुटकर संस्कृत कविताओं का संग्रह है। अतः यह एक प्रकीर्ण काव्य संग्रह माना जाता है। विविध छन्दों का प्रयोग यहाँ दिखाई देता है। तरंगलेखा में 'क्षुपापहुति विंशति' शीर्षक से कुछ मुकरियाँ तथा ''संस्कृत त्रिपदिका शीर्षक से रूबाइयाँ लिखी गई है। ग्रन्थ के अन्त में आधुनिक शैली में मुक्तक-छन्द की कतिपय रचनाएं हैं।

8. मत्कुणायनम्: —

यह संस्कृत में लिखित एक व्यंग्यकाव्य है। इसमें तीन आह्निक हैं। प्रथम दो आह्निकों में रामचरितमानस की तर्ज पर दोहा, चैपाई, सोरठा और हरिगीतिका छन्दों में मत्कुण को संबोधित करते हुए समाज के विभिन्न पक्षों पर व्यंग्य किया गया है। तीसरे आहिनक में 'गीता' के समान मनुष्य ओर मत्कुण के संवाद द्वारा समाज का खून चूसने वालों (भ्रष्टाचारियों) पर तीव्र कटाक्ष किया गया है।

9. मुकुन्द—

इसमें कविवर शिवप्रसाद ने सौ वसन्ततिलका छन्दों में भगवान विष्णु की स्तुति की है। काव्यारम्भ में विष्णु के आपातमस्तक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उनके बीस अवतारों की चर्चा की गई है। काव्य के अन्त में विविध दार्शनिक पक्षों से विष्णु-स्तुति की गई है।

10. आर्यार्द्धशतकम्: —

पचास आर्या छन्दों में लिखित यह ग्रन्थ आधुनिक समाज एवं राजनीति की दुर्बलताओं पर तीखा कटाक्ष करता है।

11. इन्दिराभिलाष: —

यह रथोद्धता छन्द में लिखित एक मुक्तक काव्य है। इस काव्य में कुल 64 पद्यो में लक्ष्मी (धन) के दुष्प्रभावों का वर्णन किया गया है।

12. वारूणीमहिमा: —

मात्र 24 पद्यों में विरचित यह ग्रन्थ समाज में अनेकानेक बुराइयों को पैदा करने वाली मदिरा के दुष्प्रभावों को दर्शाता है।

13. कामकौतुकम्: —

यह रथोद्धता छन्दोबद्ध मुक्तक काव्य है। इसमें लक्ष्मी एवं मदिरा के साथ से पैदा होन वाले काम विकारों का वर्णन है।

14. आत्मबोध काव्यम्: —

यह काव्य रथोद्धता छन्द में लिखित है। इसमें मात्र 112 श्लोक हैं। इसमें लक्ष्मी आदि के दुष्प्रभावों से अप्रभावित रहने पर बल दिया गया है। यह काव्य देशभक्ति, परोपकार, नारी का सम्मान, परशोषण की निन्दा आदि भावों को विशेषता से प्रस्तुत करता है।

5.3.4.2 श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के प्रकाशित नाट्य

1. मायापति: —

यह एक एकांकी सामाजिक नाट्य है। इसमे कवि आजकल के नेताओं के चरित्र पर तीखा व्यंग्य करता है। यह सर्वथा नवीन शैली का नाट्य है, जिसमें प्रायः संवाद दूरभाष पर होते हैं। इसमें प्राचीन नाट्यों की तरह प्रस्तावना, भारतवाक्य नहीं है। यह नाट्य दृश्यों मंे विभाजित है। इसमें श्लोक तथा गीत भी अल्प मात्रा में हैं। गद्य की यहाँ प्रधानता है।

2. मेघदूतम् (नाट्य रूपान्तरण) —

आकाशवाणी के जालन्धर केन्द्र में प्रस्तुति हेतु कवि ने कालिदास के मेघदूतम् को ध्वनिरूपक के रूप में परिवर्तित किया है। इसकी प्रथम प्रस्तुति सन् 1982 में आकाशवाणी केन्द्र जालन्धर से हुई थी। इस ध्वनिरूपक में सम्वाद योजना हेतु कालिदास के पद्यों (मेघदूतम् के) साथ कवि ने स्वरचित पद्य भी लिखे हैं। संवाद गद्य-पद्यो दोनों में हैं। इसमें यक्ष, कुबेर, यक्षपत्नी और विद्युत इन चार पात्रों के द्वारा संवाद करते हुए मेघदूतम् को नाट्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. पुरोधसः स्वप्नः —

यह एक सामाजिक प्रहसन है। इसमें प्राचीन प्रहसनों की तरह अश्लीलता का पुट न होकर शुद्ध हास्य पर बल दिया गया है। पुरोहितों की भोजन लोलुपता, आधुनिक भारत सरकार की तथाकथित धर्मनिरपेक्षता, अंग्रेजी भाषा के प्रति उनका प्रेम, आधुनिक नारी पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, आर्थिक लाभ हेतु सरकार द्वारा गोवध को प्रोत्साहित किया जाना आदि विषयों पर इस ग्रन्थ के माध्यम से तीखा कटाक्ष किया गया है जो हास्य उत्पन्न करने के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक बुराइयों को भी इंगित करता हैं।

4. नारदस्य दिल्ली यात्रा: —

यह रूपक का एक भेद भाण है। इसमें भारतीयों के अंग्रेजी प्रेम, पश्चिमी सभ्यता के प्रति आकर्षण, स्त्रियों की फैशन प्रियता तथा नागरिकों द्वारा उत्पन्न किए गए प्रदूषण आदि को विषय बनाया गया है। भारत का राष्ट्रपति अंग्रेजी के अलावा और कोई भाषा नहीं समझता इस पर

कटाक्ष किया गया है। इसमें एकमात्र पात्र नारद है, जो ब्रह्मा के आदेश से भारत का वृतान्त लेने दिल्ली आता है। वह राष्ट्रपति से मिलने जाता है परन्तु उसका अंग्रेजी न जानना और उसकी वेशभूषा इसमें बाधक बनते हैं तथा उसे कार्य पूरा किए बिना ही वापस लौटना पड़ता है। यही इस भाण की विषयवस्तु है।

5. स्वातन्त्र्य सुखम्: —

यह प्रेक्षणिक श्रेणी का उपरूपक है। इसमें प्रधान पात्र दो तोते हैं तथा गौण पात्र एक महिला और उसकी पुत्री है। आजाद तोता पिजड़े में बन्द और उसी बन्दी जीवन में ही सुखी दूसरे तोते को स्वतन्त्र होने की प्रेरणा देता है। उसमें पुनः उड़ने की शक्ति का अभ्यास द्वारा संचार करता है। इस लघु कथा के माध्यम से स्वतंत्रता के सुख को दर्शाया गया है।

5.3.4.3 श्री शिवप्रसाद भारद्वाज की प्रकाशित कहानियाँ:

1. न्यास: —

यह कहानी अजमेर से प्रकाशित पत्रिका स्वरमंगला में सन् 1976 में प्रकाशित हुई थी। इसका कथानक बांग्लादेश के स्वतंत्रता युद्ध से सम्बद्ध है। इस कहानी में संवाद अत्यन्त अल्प है। आरम्भ में शैली कुछ जटिल है, किन्तु बाद में वह सरल प्रतीत होती है।

2. नास्तिक: —

यह एक सामाजिक सरोकारों से सम्बद्ध कहानी है। इसमें एक व्यापारी के पुत्र का जीवन बचाने के लिए एक गरीब हरिजन रिक्शा चालक अपना खून देता है जिससे व्यापारी का पुत्र बच जाता है। इस घटना से व्यापारी और उसकी पत्नी के हृदय में सत्य, धर्म और मानव मात्र के प्रति प्रेम जाग्रत होने का वर्णन किया गया है।

3. पुत्रेषणा: —

इसमें, जैसा कि प्रायः भारतीय समाज में देखा जाता है कि, माता-पिता पुत्र मोह के कारण अपनी ही सन्तान कन्याओं के प्रति कैसे निष्ठुर हो जाते हैं? इस बात का चित्रण किया गया है। बाद में वही पुत्र जब माता-पिता के प्रति निर्मोही हो जाता है और उन्हें कष्ट देता है तब उन्हें पुत्रमोह की असारता समझ में आती है। माता-पिता की दुर्दशा देख कन्याएं ही अन्त में उनकी देखभाल करती है। यह कहानी भारतीयों की पुरूष प्रधान मानसिकता पर आघात कर उन्हें पुत्र-पुत्री में समभाव अपनाए जाने का उपदेश देती है। इसकी भाषा अत्यन्त सरल एवं प्रभावशाली है।

4. शैलबाला: —

साक्षात्कार की शैली में लिखी गई यह एक सामाजिक कहानी है। एक स्त्री ससुराल वालों के अत्याचारों का शिकार होते हुए भी दृढ़ रहकर समाज में अपना स्थान बना लेती है। उसकी ख्याति सुनकर पत्रकार उसका साक्षात्कार लेता है और उसकी सारी जीवन कथा को सुनता है। इस कहानी की भाषा अत्यन्त सरल-सहज एवं प्रभावपूर्ण है। इस कथा में पर्वतीय वातावरण और वहाँ के जनजीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

5. इयं सुमंगली वधू:—

यह भी एक सामाजिक कहानी है। इसमें सुन्दर-सुशील बहू के साथ सास के दुव्र्यवहार को देखकर बाद में घर में आई छोटी बहू सह नहीं पाती और अपनी सास को सबक सिखाती है। इस कहानी में संवाद अधिक है किन्तु भाषा अत्यन्त सरल है।

6. कुमाता न भवति: —

दिल्ली में प्रचलित घृणित देह व्यापार से संबंधित यह एक सामाजिक कहानी है। किस तरह तथाकथित समाज सेविका एक युवती को देह व्यापार के दलदल में धकेलना चाहती है और किस तरह वह युवती न केवल स्वयं बच निकलती है अपितु अपनी बहिन को भी इस घृणित धन्धे से बचाकर उसका विवाह योग्य युवक से कराती है। इन सब बातों का चित्रण इस कहानी में किया गया है। विषय की दृष्टि से कहानी में कहीं-कही चित्रित अश्लीलता क्षम्य है। इसकी भाषा प्रवाहमय तथा सरल है।

7. पुरूष द्वेषिणी: —

इस कहानी में परिस्थितिवश एक राजकन्या अपने राज्य में पुरूषद्व्रेषिणी बन जाती है। वह अपने राज्य में पुरूषों का प्रवेश तक वर्जित कर देती है किन्तु एक विषम परिस्थिति ऐसी आती है कि अपने राज्य की रक्षा के लिए उसे पुरूषों की सहायता लेनी पड़ती है। अन्ततः उसकी समझ में आता है कि स्त्री-पुरूष का एक दूसरे के प्रति द्वेष व्यावहारिक नहीं है। ऐसे तो सृष्टि चक्र ही आगे नहीं बढ़ पाएगा। यह एक सामाजिक कहानी है जो समाज में स्त्री पुरूष के बीच तारतम्य की आवश्यकता को बताती है। यह एक लम्बी कहानी है, जिसके संवाद प्रभावशाली एवं स्वाभाविक है। यह कहानी शक्ति की गरिमा को व्यक्त करती है।

8. बालस्पशः—

कश्मीर के आतंकवाद से संबंधित यह एक सामाजिक कथा है। इसमें हैदर नामक एक बालक उग्रवादियों का पीछा कर उनके हाथों अपहृत अपने पड़ोसी को अपनी जासूसी बुद्धि एवं

युक्ति से छुड़ा लेता है। अतः पुरस्कार स्वरूप उसे राष्ट्रपति से बालस्पश (बालक जासूस) की उपाधि प्राप्त होती है। यह कहानी अत्यन्त सरल बालोपयोगी एवं प्रेरणादायक है।

9. कविदिग्दर्शिका: —

इसमें संस्कृत में काव्य रचना करने की शिक्षा दी गई है। हिन्दी अनुवाद सहित सात संकेतों में क्रमशः काव्य प्रतिभा प्राप्ति के आवश्यक निर्देश, छन्दोबद्ध रचना का मार्ग निर्देश, सार्थक काव्य रचना का प्रकार, काव्य में चमत्कार लाने के साधन, अलंकार संयोजना, लाक्षणिक शब्द योजना, श्लेष सिद्धि तथा समस्यापूर्ति के प्रकार तथा अन्य आवश्यक निर्देश दिए गए हैं। पुस्तक में सरलतम प्रकार से काव्य-रचना के अभ्यास मार्ग को प्रशस्त किया गया है।

10. कालिदास गरिमा: —

इस ग्रन्थ में श्री शिवप्रसाद भारद्वाज ने कालिदास के जन्म एवं कृतियों से संबंधित बारह शोधपूर्ण लेख लिखे हैं। यशःकाया से आज भी विद्यमान महाकवि कालिदास का जन्म कब और कहाँ हुआ? इनका जीवन कहाँ-कहाँ व्यतीत हुआ? कालिदास की वर्णन शैली, शब्द विन्यास आदि उन्हें कहाँ का सिद्ध करते है ? मेघदूतम् काव्य क्या उन्हीं की जीवन घटना पर आधारित है? आदि विषयों को सप्रमाण पुष्ट कर भारद्वाज जी ने अपने मत की अभिव्यक्ति की है। सभी विषयों का सप्रमाण साक्ष्यों सहित वर्णन करके उन्होंने कालिदास की गरिमा को यथार्थता दी है। कालिदास के विषय में जो भ्रम समालोचक वर्ग में बना हुआ है, उसका सार्थक एवं सफल समाधान करने का प्रयास शिवप्रसाद भारद्वाज जी ने किया है। ग्रन्थ की भाषा सरल है। इस ग्रन्थ में शब्द विन्यास तथा भाषा शैली विषयानुगत तथा प्रसाद गुण से युक्त है।

उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त श्री शिवप्रसाद भारद्वाज ने सन् 1963-67 तक त्रैमासिक संस्कृत पत्रिका विश्वसंस्कृतम् का सम्पादन कार्य भी किया। कवि के द्वारा विरचित अधिकांश ग्रन्थों का प्रकाशन भी संस्कृत की पत्रिकाओं, यथा विश्वसंस्कृतम्, दूर्वासार, स्वरमंगला, हरिप्रभा (त्रैमासिक) तथा उड़ीसा से प्रकाशित वासन्ती आदि में हुआ है। इनके लिखे पाँच संस्कृत ध्वनि रूपकों का प्रसारण भी आकाशवाणी के विविध केन्द्रों से हो चुका है। अभी भी कवि के अनेक हस्तलिखित काव्य हैं, जो प्रकाश में नहीं आ सके हैं। इनके निर्देशन में लगभग बारह शोधार्थी पी-एच0डी0 कर चुके है। आज कवि और उनके ग्रन्थों पर अनेक शोधार्थी शोध कार्य भी कर रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

टिप्पणी

(क) लौहपुरूशावदानम महाकाव्य

(ख) शिवप्रसाद भारद्वाज की संस्कृत रचनाएँ

(ग) महावीर चरितम्

बहुविकल्पीय प्रश्न

यहाँ प्रत्येक वैकल्पिक प्रश्न के चार उत्तर दिए गए हैं, जिनमें से एक सही उत्तर है। उसमें से सही उत्तर को चुनिए -

1. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज की वार्ताओं का प्रसारण आकाशवाणी के किस केन्द्र से हुआ है?

(क) अल्मोड़ा (ख) लखनऊ

(ग) दिल्ली (घ) नजीबाबाद

2. जैन धर्म के प्रवर्तक 'वर्धमान' पर लिखित इनका कौन सा खण्ड काव्य है?

(क) परषुरामचरितम् (ख) उत्तररामचरितम्

(ग) महावीर चरितम् (घ) हर्षचरितम्

3. शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म कब हुआ?

(क) सन् 1884 में (ख) सन् 1922 में

(ग) सन् 1925 में (घ) सन् 1928 में

4. शिवप्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ हुई?

(क) ऋषिकेश में (ख) पौड़ी में

(ग) हरिद्वार में (घ) श्रीनगर में

5. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के कितने रेडियो रूपक है? जिनका प्रसारण आकाशवाणी केन्द्रों से हो चुका है?

(क) चार (ख) पाँच

(ग) छः (घ) आठ

6. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के पिता का नाम क्या था?

(क) रामानन्द (ख) छिद्दाराम

(ग) हीरामणि (घ) लोकमणि

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. शिवप्रसाद भारद्वाज ने शास्त्री एवं ..... की उपाधियाँ वाराणसी से प्राप्त की।

2. शिवप्रसाद भारद्वाज ने पी-एच0डी0 की उपाधि ..... से प्राप्त की।

3. शिवप्रसाद पंजाब विश्वविद्यालय से सन् ..... में रीडर के पद से सेवानिवृत्त हुए।

4. शिवप्रसाद भारद्वाज के पूर्वज ग्राम ..... पट्टी .....पौड़ी के रहने वाले थे।

5. शिवप्रसाद के पिता आजीविका हेतु ..... में बस गए थे।

6. शिवप्रसाद भारद्वाज ने डी.लिट. की उपाधि..... से प्राप्त की।

नोट: य़द्यपि यहाँ दिए गए प्रश्नों के उत्तर भी इकाई में दिए गए हैं तथापि आपके लिए हमारा सुझाव है कि आप स्वमूल्यांकन हेतु उनसे अपने स्तरों का मिलान करके देखें।

5.4 सारांश:-

गढ़वाल के 20 वीं सदी के महान साहित्यकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री शिवप्रसाद भारद्वाज की सारस्वत साधना उनके रचना संसार की विशालता से स्पष्ट है। उन्होंने लगभग 35 ग्रन्थों (जिनमें 30 संस्कृत भाषा में तथा 5 हिन्दी भाषा में है) की रचना की। इसके अलावा उन्होंने लगभग 50 शोध आलेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओं द्वारा प्रकाशित किए।

श्री भारद्वाज ने संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं पर काव्य रचना की। उन्होंने 'लौहपुरूशावदानम्' जैसा विशाल महाकाव्य लिखा वहीं दूसरी ओर लीक से हटकर शान्त रस प्रधान भारत सन्देश और महावीर चरितम् जैसे प्रशंसनीय खण्डकाव्य लिखकर अपनी अलग पहचान बनाई। अपने रेडियों रूपकों, व्याखान माला, सरल सामाजिक कथाओं, बालकथाओं द्वारा उन्होंने आधुनिक काल में संस्कृत के प्रचार-प्रसार में भी अपूर्व योगदान दिया। संस्कृत साहित्य को श्री भारद्वाज जी की देन अमूल्य है।

5.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:-

टिप्पणी

1. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 5.3.4.1 का 'क' अंश देखें।
2. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 5.3.4 के 1 से 27 तक के अंश को देखें।
3. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 5.3.4.1 क 'ग' अंश को देखे।

बहुविकल्पीय

1. घ
2. ग
3. ख

4. ग

5. ख

6. ग

रिक्त स्थान पूर्ति

1. आचार्य

2. पंजाब विश्वविद्यालय

3. 1985

4. डांग, गगवाडस्यू

5. देहरादून

6. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

1. शिवप्रसाद भारद्वाज कुल कितनी संस्कृत रचनाएँ प्रकाशित हैं।

2. इनका 'पुरोधसः' स्वप्नः कैसा काव्य है?

3. शिवप्रसाद केकितने सामाजिक कथा संग्रह है?

4. शिवप्रसाद भारद्वाज द्वारा हिन्दी में लिखित कितने ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है?

5. भारद्वाज जी द्वारा सम्पादित शब्दकोश का नाम क्या है?

6. भारद्वाज जी द्वारा रचित मुक्तक काव्य कितने है?

सत्य/असत्य बताइए

1. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज श्रीनगर, के रहने वाले थे।

2. शिवप्रसाद का 'वारूणी महिमा 'ग्रन्थ सन् 1820 ई. मं प्रकाशित हुआ।

3. भारद्वाज जी का कालिदास गरिमा एक समीक्षा ग्रन्थ है।

4. 'नारदस्य दिल्ली यात्रा 'भारद्वाज जी का यह ग्रन्थ रूपक के नाटक भेद के अन्तर्गत आता है।

5. 'गुरूदक्षिणाः'भारद्वाज जी का यह ग्रन्थ प्रकाशित है।

6. भारद्वाज जी का 'मेघदूतम्' एक ध्वनिरूपक है।

7. देहरादून

8. जम्मू विश्वविद्यालय

अतिलघुउत्तरीय

1. पैतीस

2. सामाजिक प्रहसन

3. चार (04)

4. चार (04)

5. अशोक संस्कृत - हिन्दी-अंग्रेंजी शब्दाकोष

6. 3 तीन

सत्य/असत्य

1. असत्य

2. असत्य

3. सत्य

4. असत्य

5. सत्य

6. सत्य

5.6 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री:-

1. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन, डा0 प्रेमदत्त चमोली।

2. उत्तराखण्ड का इतिहास, बद्रीदत्त पाण्डे।

5.7 संदर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री

1. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन, डा0 प्रेमदत्त चमोली।

2. उत्तराखण्ड का इतिहास, बद्रीदत्त पाण्डे।

5.8 निबन्धात्मक प्रश्न:-

1. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज का जीवन परिचय दीजिए।

2. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के प्रकाशित काव्यों का परिचय

3. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के द्वारा लिखित कहानियों का परिचय दीजिए

4. श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

तृतीय सेमेस्टर/SEMESTER-III

खण्ड–द्वितीय

आधुनिक संस्कृत महाकाव्यकारों का परिचय

इकाई - 1 अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 इकाई की पाठ्य सामग्री

1.3.1 कुमाऊँ में अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रमुख काव्यकार

1.3.2 गढ़वाल में अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रमुख काव्यकार

1.4 सारांश

1.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.6 निबन्धात्मक प्रश्न

1.7 सन्दर्भग्रन्थ

1.1 प्रस्तावना:-

आप प्रथम खण्ड की पाँच इकाइयों में उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा के बारे में तथा उत्तराखण्ड की चार संस्कृत प्रतिभाओं क्रमशः विद्याभूषण, श्रीकृष्ण जोशी, श्री हरिनारायण दीक्षित, लोकरत्न गुमानी तथा श्री शिवप्रसाद भारद्वाज के बारे में पर्याप्त रूप से जान चुके हैं। अब 'आधुनिक संस्कृत महाकाव्यकारों का परिचय'' नामक द्वितीय खण्ड की इस प्रथम इकाई ''अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय'' के अन्तर्गत आपको इस कालखण्ड के काव्यकारों के विषय में बताया जाएगा।

इस इकाई के द्वारा आप उत्तराखण्ड में एक काल विशेष अट्ठारहवीं शताब्दी (सन् 1700 ई. के बाद) के काव्यकारों का संक्षिप्त परिचय एवं उनकी कृतियों के बारे में जानेंगे। इन 100 वर्षों के बीच उत्तराखण्ड के गढ़वाल एवं कुमाऊँ क्षेत्र में पैदा होकर संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान देने वाले काव्यकारों के बारे में आपको बताया जाएगा।

1.2 उद्देश्य:-

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप

- भलीभाँति समझा सकेंगे कि अट्ठारहवी शताब्दी में उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा कैसी थी।
- अट्ठारहवी शताब्दी में कुमाऊँ क्षेत्र के संस्कृत काव्यकारों एवं उनकी रचनाओं के विषय में आप अच्छी तरह से समझा पाने में समर्थ हो पाऐंगे।
- गढ़वाल में अट्ठारहवी शताब्दी में जन्में काव्यकारों एवं उनकी कृतियों का परिचय अच्छी प्रकार से दे पाऐंगे।
- बता सकेंगें कि अट्ठारहवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड में कौन-कौन से संस्कृत काव्यकार हुए तथा कैसे-कैसे ग्रन्थरत्न लिखे गए।

1.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:

अट्ठारहवी शताब्दी में अर्थात् सन् 1700 से 1800 ईसवीं के मध्य का काल भारत में अंग्रेजों की पराधीनता का प्रारंभिक काल था। धीरे-धीरे भारत के प्रायः सभी भागों में उन्होंने

अपने पाँव पसारने शुरू कर दिए थे पर उत्तराखण्ड अभी उनके प्रभाव से लगभग अछूता था। इस कालखण्ड में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ एवं गढ़वाल दोनों ही क्षेत्रों में संस्कृत साहित्य सृजन की परम्परा सतत् गतिमान रही। अट्ठारहवी शताब्दी के कुमाऊँ एवं गढ़वाल क्षेत्र के काव्यकारों एवं उनकी रचनाओं का परिचय प्रस्तुत है -

1.3.1 अट्ठारहवी शताब्दी के कुमाऊँ के संस्कृत काव्यकार:-

अट्ठारहवी शताब्दी से पूर्व भी कुमाऊँ में संस्कृत काव्यकारों की दीर्घ परम्परा रही है जिनमें आचार्य हरिहरण, केदार पाण्डेय, राजा रूद्रचन्द देव तथा स्मृति कौस्तुभ के रचयिता अनन्तदेव का नाम उल्लेखनीय है। संस्कृत काव्यकारों की इस परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य अट्ठारहवी शताब्दी के विद्वान कवियों ने सफलतापूर्वक किया। अट्ठारहवी शताब्दी में कुमाऊँ के उल्लेखनीय काव्यकारों तथा उनकी कृतियों का परिचय इस प्रकार है -

1. पण्डित भगीरथ पाण्डेय—

प्रख्यात छन्दशास्त्र वेत्ता तथा 'वृत्तरत्नाकर' के लेखक केदार पाण्डे के वंश में ही भगीरथ पाण्डे का जन्म हुआ था। ये चन्द राजा जगत चन्द के राज्याश्रित कवि थे, जिनका शासनकाल सन् 1708 से 1720 ई0 मान्य है। अतः भगीरथ पाण्डे का समय भी अट्ठारहवी शताब्दी का पूर्वाद्ध निश्चित होता है।

भगीरथ पाण्डे संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान थे। ये मुख्य रूप से टीकाकार के रूप में जाने जाते है। इन्होंने संस्कृत के अनेक प्राचीन काव्यों पर टीकाएँ लिखी है जिनका विवरण इस प्रकार है-

1. नैषधीय चरितम् टीका

2. रघुवंश टीका

3. शिशुपालवध टीका

4.तत्वदीपिका मेघदूतम् टीका

5. किरातार्जुनीयम् टीका

6. काव्यादर्श टीका

7. महिम्नस्तवकटीका

8. देवीमाहात्म्य टीका

2. पण्डित लक्ष्मीपति पाण्डे—

लक्ष्मीपति भारद्वाज गोत्र के पाण्डे ब्राहमण थे। इनका जन्म कुमाँऊ के अल्मोड़ा जिलान्र्तगत पाटिया गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम था विश्वरूप पाण्डे। इनके पूर्वज श्रीवल्लभ पाण्डे कन्नौज से यहाँ आए थे। लक्ष्मीपति चन्द शासनकाल में राजा ज्ञानचन्द्र (1698से 1708ई0) तथा जगत चन्द (1708से 1720) के दरबार में संस्कृत सुकवि के रूप में प्रतिष्ठित थे। इस प्रकार लक्ष्मीपति का समय 18वीं सदी का पूर्वार्ध सिद्व होता है। ऐसी मान्यता है कि ये संस्कृत के साथ-साथ उर्दू-अरबी फारसी के भी अच्छे ज्ञाता थे। इनके द्वारा संस्कृत भाषा में रचित काव्य ग्रन्थ इस प्रकार है-

1. फर्रूखशेयरचरितम्

2. अब्दुल्लाहचरितम्

3. यागीश्वरमाहात्म्य

इनमें से फर्रूखशेयरचरितम् एक ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य है। यह काव्य एक हजार आठ सौ सैतीस (1837) अनुष्टुप छन्दों में रचित है। इसमें मुगल बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद से लेकर रफीउज्जीत के राज्याभिषेक तक की घटनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। तत्कालीन मुगल शासन के वृत्तान्तों सें परिपूर्ण इस काव्य का केन्द्रबिन्दु मुगल बादशाह फर्रूखशेयर है। इस काव्य को कवि के द्वितीय काव्य अब्दुल्लाहचरितम् की पूर्वपीठिका माना जाता है।

अब्दुल्लाहचरितम् कवि के फर्रूखशेयरचरितम् नामक प्रबन्धकाव्य का पूरक ग्रन्थ है। यह गद्य-पद्य मिश्रित एक ऐतिहासिक चम्पू काव्य है। एक हजार आठ सौ चार (1804) अनुच्छेदों में विभक्त इस ग्रन्थ में भी भाई हुसैन अली के शक्ति पराक्रम का वर्णन है, जिन्होंने मुहम्मदशाह को कारावास से छुड़ाकर बादशाह बनाया। इन दोनों भाइयों की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर डरे हुए मुहम्मदशाह ने हुसैन अली को मरवा डाला। मुहम्मद शाह से बदला लेने के लिए अब्दुल्ला ने इब्राहीम को बादशाह घोषित कर मुहम्मदशाह पर आक्रमण कर दिया किन्तु वह अपने प्रयास में असफल रहा। इसी इतिवृत्त को लेकर कवि लक्ष्मीपति ने इस काव्य की रचना की है। इस काव्य में संस्कृत के अलावा अरबी-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग देखने को मिलता है।

लक्ष्मीपति द्वारा रचित 'यागीश्वर महात्म्य' नामक ग्रन्थ अप्रकाशित है, जबकि इनके पूर्व के दानों ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है। यागीश्वर महात्म्य में दारूकावनस्थली के मध्य में स्थित यागेश्वर (जागेश्वर) के महात्म्य का चित्रण है।

3. पण्डित पद्मदेव—

पण्डित पदमदेव विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों के टीकाकार भगीरथ पाण्डे के पुत्र थे। ये सीमल्टा नामक गाँव के रहने वाले थे। पद्मदेव चन्द नरेश मोहनचन्द्र (राज्यकाल 1777 से 1779 ई0) के राज्याश्रित कवि थे। अतः इनका समय 18 वीं सदी का उत्तरार्ध निश्चित होता है। पद्मदेव विरचित दो ग्रन्थ इस प्रकार है-

(1) 'जगव्चन्द्रिका' नाम से रघुवंशटीका

(2) 'मोहनचन्द्रिका' धर्मशास्त्र विषयक लघु ग्रन्थ

4. पण्डित शिवानन्द पाण्डे—

पण्डित शिवानन्द पाण्डे का स्थितिकाल सन् 1670 से 1750 ई0 के मध्य माना जाता है। ये नैनीताल जिले के षष्ठीखाता परगनाऩ्तगत बटोषर गाँव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम विश्वरूप था जो स्वयं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान के रूप में मान्य थे। शिवानन्द चन्द्रनरेश कल्याण चन्द के राजगुरू और दरबारी कवि थे। इनकी विद्वता से प्रभावित होकर कल्याणचन्द ने इन्हें बटोषर ग्राम पुरस्कार के रूप में दिया था। शिवानन्द की दो रचनाएँ है—

1. कल्याणचनद्रोदयकाव्य

2. कूर्मांचलकाव्य

कुमाऊँ के चन्द राजा तथा शिवानन्द के आश्रयदाता कल्याणचन्द को समर्पित 'कल्याणचन्द्रोदय' एक ऐतिहासिक काव्य है। इस काव्य में केवल सात सर्ग हैं। कवि का दूसरा 'कूर्मांचलकाव्य' आज अनुपलब्ध है। ऐसी मान्यता है कि 'कल्याणचन्द्रोद' कूर्मांचलकाव्य का ही एक अंश है। तब भी जब तक कूर्मांचलकाव्य प्रकाश में नहीं आ जाता तब तक निश्चित रूप से कुछ कह पाना संभव नहीं है।

5. त्रिलोचन जोशी—

भक्त हृदय वाले कवि त्रिलोचन जोशी जन्म सन् 1739 ई0 को अल्मोड़ा में हुआ था। संभवतः ये महाराजा कल्याणचन्द के सभारत्न थे। इन्होंने छः (06) संस्कृत ग्रन्थों की रचना की थी ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। किन्तु आज इनकी केवल एक कृति 'भक्तिप्रबन्ध' काव्य ही उपलब्ध है। कवि के इस काव्य को उन्हीं के वंशज श्रीकृष्ण जोशी ने सन् 1912 ई0 में नैनीताल

से प्रकाशित करवाया था पुनः इसका प्रकाशन बनारस से भी हुआ। 'भक्तिप्रबन्ध काव्य' कृष्ण भक्ति से परिपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें कुल 571 श्लोक है। यह काव्य धर्म, कर्म काम और मोक्ष चार शीर्षकों में विभाजित है। त्रिलोचन जोशी द्वारा रचित अन्य काव्यों का नामोल्लेख इस प्रकार है -

1. बदरीशलीला

2. साहित्यसार

3. सिद्धान्तसंग्रहाकनिर्णय

4. छाया प्रमाण

5. विदिशानिदान

6. भवानन्द—

पण्डित भवानन्द भक्ति प्रबन्ध काव्य के रचयिता त्रिलोचन जोशी के समकालीन कवि थे। इनके पिता का नाम राधापति था। भवानन्द अल्मोड़ा के चीनाखान के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1739 ई0 मे आस-पास माना जाता है। इनके द्वारा विरचित 'बदरीशस्तोत्र' नाम से मात्र 22 श्लोंकों में बद्ध भगवान बदरी नारायण की स्तुति करने वाला एकमात्र ग्रन्थ प्राप्त होता है

7. प्रेमनिधि पन्त—

प्रेमनिधि भारद्वाज गोत्री पन्त ब्राहमण थे। ये पिता उमापति तथा माता उद्योतमपति के पुत्र थे। इनका समय सन्1700-1760 ईसवी मान्य है। इनके गुरू का नाम दिवाकर भारद्वाज था। कवि का अधिकांश समय काशी में व्यतीत हुआ था। प्रेमनिधि पन्त के आश्रयदाता नेपाल के राजा मलयवर्मा थे। पे्रमनिधि पन्त धर्मशास्त्र तथा तन्त्रशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। इस कवि की निम्नलिखित संस्कृत रचनाएँ मानी जाती है—

1. पृथ्वी प्रेमोदयकाव्य

2. प्रयोगरत्नाकर

3. प्रायश्चितप्रदीप

4. कार्तवीर्यसपर्या

5. जगत्प्रेमोदयकाव्य

6. समयाराम

7. समयप्रदीप

8. मूलप्रकाश

9. शब्दप्रकाश

10. दीपप्रकाश

11. जैमिनीयसूत्रवृत्ति

12. शिवताण्डव की टीका

13. शारदांतिलक की टीका

14. तन्त्रराज की टीका

15. शक्तिसंगम की टीका

16. कमला पद्धति

17. कार्तवीर्यार्जुनटीका

8. प्राणमंजरी—

कुमाँऊ में संस्कृत साहित्य जगत की एकमात्र विदुषी कवयित्री के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त प्राणमंजरी प्रेमनिधि पन्त की तृतीय पत्नी थी। इनकी दो रचनाएँ मानी जाती है-

1. तन्त्रराज की 'सुदर्शना' टीका

2. श्रीविद्यानित्यिकर्म पद्धति

9. धरणीधर पन्त—

ये कवि मूलतः अल्मोड़ा के तिलाड़ी गाँव के रहने वाले थे। इनका समय 1750 ईसवी के बाद माना जाता है। इनके पिता का नाम रेवाधर पन्त था। धरणीधर पन्त रीवाँ राज्य के भी सम्मानित पण्डित थे। ये धर्मशास्त्र एवं वेदान्त में निष्णात थे। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ इस प्रकार माने जाते है।

1. यमद्वितीयानिर्णय

2. ईशतत्त्व

3. चातुर्वण्र्य विवेचन

4. चातुर्वण्र्यव्यवस्था

5. सापिण्ड्यतत्त्वप्रकाश

6. कालानिर्णय की टीका

उपर्युक्त ग्रन्थों में से अब तक केवल यमद्वितीयानिर्णय ग्रन्थ ही प्रकाशित है। शेष ग्रन्थ अभी प्रकाश में नहीं आ पाए हैं।

10. हरिदत्त जोशी—

ये अल्मोड़ा के समीपस्थ कलौन ग्राम के निवासी थे। ये 'भक्तिप्रबन्ध' के रचयिता त्रिलोचन जोशी के समकालीन माने जाते हैं। कविवर गुमानी (1790ई0) द्वारा इनसे शिक्षा प्राप्त किए जाने का विवरण मिलता है। इस आधार हरिदत्त जोशी का स्थितिकाल 18 वी0 शताब्दी उत्तरार्ध सिद्ध होता है। ये षट्शास्त्री की पदवी से सुशोभित थे। पण्डित हरिदत्त जोशी द्वारा रचित एकमात्र काव्य ग्रन्थ है 'राघवनैषधीयम्'। यह श्लेषालंकार बहुल काव्य है जिसमें राम व नल की कथा एकसाथ गुम्फित हुई है।

11. विश्वेश्वर पाण्डे—

आचार्य विश्वेश्वर अल्मोड़ा के निकट पाटिया गाँव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम लक्ष्मीधर पाण्डे था जो राजा बाजबहादुर चन्द की राजसभा के रत्न थे। मान्यता है कि लक्ष्मीधर पाण्डे ने पुत्र प्राप्ति की कामना से काशी में रहकर बाबा विश्वनाथ (शिव) की अनन्य आराधना की थी जिसके फलस्वरूप प्राप्त हुए पुत्र का नाम उन्होंने विश्वेश्वर रखा। विश्वेश्वर पाण्डे का समय अट्ठाहरवीं शताब्दी के मध्य भाग अनुमानित है। इन्होंने मात्र 40 वर्ष की अवस्था में ही संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी का कौशल दिखाया। इनके द्वारा रचित ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है-

1. सिद्धान्त सुधनिधि

2. दीधिति प्रवेश

3. तर्ककूतुहल

4. अलंकारकौस्तुभ

5. अलंकारमुक्तावली

6. अलंकारप्रदीप

7. रसचन्द्रिका

8. रसमंजरी टीका

9. कवीन्द्रकणीभरण

10. मन्दारमंजरी

11. नैषधीयचरितम् टीका

12. आर्यासप्रशती

13. काव्य तिलक

14. काव्यरत्न

15. रोमावलिशतक

16. वक्षोजशतक

17. होलिकाशतक

18. लक्ष्मीविलास

19. षड्ऋतुवर्णनम्

20. अभिरामराघव

21. रूक्मिणीपरिणय

22. श्रृंगारमंजरी सट्टक

23. नवमालिका नाटिका

24. अभिधार्थचिन्तामणि

25. अशौचीयदश श्लोकी वितृतिकी टीका

12. हरिकृष्ण पन्त—

पण्डित हरिकृष्ण पन्त अपने समय के सुप्रसिद्ध नैयायिक थे। इनके स्थितिकाल के विषय में अनुमान है कि ये 17 वी0 सदी के अन्त और 18वी0 सदी के पूर्वार्ध में कभी हुए थे। इन्होंने ''निपातोपसर्गद्योतकवाचकत्वविचारः'' नामक एकमात्र लघु ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में उन्होंने वैयाकरणों एवं मीमांसकों के मतों का युक्तियुक्त ढंग से खंडन करते हुए 'निपातानां वाचकत्वमुपसगीणां द्योतकत्वम्'' इस प्रकार के न्याय सम्मत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

13. हरिवल्लभ उप्रेती—

हरिवल्लभ उप्रेती का स्थिति काल अट्ठाहरवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में अनुमानित है। ये गंगोलीहाट के उप्रेती ब्राहमण थे। ये प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य थे। कौण्डभट्ट विरचित वैयाकरणभूषणसार पर हरिवल्लभ की 'दर्पण टीका' विख्यात है। हरिवल्लभ के पिता का नाम श्रीवल्लभ था। जो स्वयं भी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। हरिवल्लभ ने 'श्रीमद्भूषणसारदर्पण' नामक एकमात्र ग्रन्थ की रचना की।

14. तारानिधि पन्त—

तारानिधि प्रख्यात तन्त्रशास्त्री प्रेमनिधि पन्त के सुपुत्र थे। इनका समय 18 वी0 सदी का उत्तरार्ध एवं 19 वी0 सदी का प्रथम चरण अनुमानित है। तारानिधि पन्त की एकमात्र कृति 'वृत्तसार' है। छन्दशास्त्र से संबन्धित इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि वर्तमान में नेपाल के राष्टीय

संग्रहालय में सुरक्षित है। इस प्रकार हम देखते हैं कि 18 वी0 शताब्दी में कुमाँऊ में संस्कृत साहित्य लेखन की परम्परा सतत् प्रवहणशील रही। इस सदी में अनेकानेक प्रख्यात काव्यकार हुए जिन्होंने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में ग्रन्थ रचना करके संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया।

1.3.2 अट्ठारहवीं शताब्दी के गढ़वाल के संस्कृत काव्यकार:-

यद्यपि उत्त◌ाराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन और संभवतः ग्रन्थ लेखन का कार्य भी अत्यन्त प्राचीन समय से ही होता चला आ रहा है तथापि वहाँ संस्कृत के अध्ययन अध्यापन के तो पुष्ट प्रमाण मिलते है किन्तु प्राचीन काल के ग्रन्थ वहाँ अप्राप्य है।

गढ़वाल में संस्कृत का पठन-पाठन गुरू शिष्य परम्परा में प्राचीन काल से ही अविरल रूप से चलता रहा होगा और उस परम्परा ने न जाने कितने विद्वान लेखकों को बनाया होगा, किन्तु समय की परिवर्तनशील धारा ने उनके साहित्य को विलुप्त कर दिया। यहाँ का प्राचीनतम लिखित संस्कृत ग्रन्थ जो आज उपलब्ध है वह है राजा अशोकमल्ल विरचित 'नृत्याध्याय'। यह 12 वीं शताब्दी की रचना है। अट्ठारहवी शताब्दी में यहाँ अनेक संस्कृत काव्यकार हुए जिन्होंने संस्कृत साहित्य भंडार की अभिवृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया। गढ़वाल के 18 वीं शताब्दी के संस्कृत काव्यकारों का विवरण इस प्रकार है—

1. मेधाकर बहुगुणा: —

मेधाकर बहुगुणा राजा प्रदीप शाह के राज्यकाल में राजपंडित थे। प्रदीप शाह का राज्य काल 1717 से 1772 ईसवीं अनुमानित है। अतः मेधाकर बहुगुणा का समय भी यही रहा होगा। मेधाकर के पिता का नाम चण्डीदास था। इनके पितामह श्रीपति थे। मेधाकर बहुगुणा की 'रामायणप्रदीप' नामक एक अपूर्ण कृति प्राप्त है। इसका उत्तरकाण्ड अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। यह काव्य श्रीनगर गढ़वाल के राजा फतेहशाह के पौत्र प्रदीप शाह से संबंधित होने से ऐतिहासिक तथा रामायण की कथा पर आधारित होने से धार्मिक रचना है। इसके पूर्वखण्ड में रामायण के बालकाण्ड से पूर्व महाराज प्रदीप शाह के पराक्रम का वर्णन है। रामायण के बालकाण्ड से लंका काण्ड (अपूर्ण) तक ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति अद्यावधि प्राप्त है। उपलब्ध ग्रन्थ में 250 पद्य है, जिनमें 47 पद्यों में पूर्वखण्ड के अन्तर्गत प्रदीप शाह का गुणकीर्तन तथा शेष पद्यों में रामचरित का वर्णन है। प्रदीप शाह राम के अनन्य भक्त थे। अजयपाल से प्रदीप शाह तक के नृपतियों का ऐतिहासिक विवरण इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। यह काव्य भक्ति रस से परिपूर्ण है।

मेधाकर बहुगुणा की दूसरी रचना संस्कृत के ललित छन्दों एवं सरल भाषा में रचित 'बहुगुणावंशावलिः' अपूर्ण है।

विष्णुदत्त हरिदत्त नौटियाल: —

'श्रृंगारलता' विष्णुगुप्त हरिदत्त नौटियाल बन्धुओं की रचना है। यह ग्रन्थ स्तवकों में विभक्त है। काव्य में रस प्रशंसा, रसोत्पत्ति, विभावादि भावों का व्याख्यान, श्रृंगारादि नव रसों की भेद प्रभेद सहित परिभाषा, भाग्वत स्तुति आदि से सम्बन्धित कुल 412 है। इसके रचनाकार विष्णुदत्त और हरिदत्त सगे भाई है। इनका समय 18 वीं सदी मान्य है। काव्य के मंगलाचरण में गणेश एवं राम का स्मरण करने के बाद कवि ने चार स्तवकों में इस काव्य की रचना की है। काव्य में स्वाभाविकता एवं पाण्डित्य का प्रभाव है। इस ग्रन्थ में रचनाकारों ने पूर्वाचार्यों द्वारा प्रतिपादित नव रसों का अपनी शैली में प्रतिपादन किया है। प्रत्येक इस के सूक्ष्मतम भेद-उपभेद का लक्षण एवं उदाहरण ग्रन्थकारों ने स्वरचित पद्यों में दिया है।

हरिदत्त नौटियाल: —

'श्रृगारलता' के सहलेखक हरिदत्त नौटियाल की तीन स्वतंत्र रचनाएँ इस प्रकार है-

1. लघु रामायण

2. लघु भागवत

3.कामदूतकाव्यम्।

लघु रामायण में श्री राम के जीवन चरित को संक्षिप्त रूप में चित्रित किया गया है। इस ग्रन्थ में कवि ने मात्र 52 स्रग्धरा छन्दों में राम के प्रति अपनी भक्ति भावना को व्यक्त किया है। सम्पूर्ण कथा 6 काण्डों में विभक्त है। लघुरामायण का कथानक बाल्मीकी रामायण पर आधारित है। इसमें कथानक को अतिसंक्षिप्त करके महत्वपूर्ण घटनाओं का सारगर्भित भाषा में वर्णन किया गया है। राम के चरित्र-चित्रण के साथ-साथ कवि की भक्ति भावना काव्य में भली भाँति व्यक्त हुई है। काव्य के मंगलाचरण से ज्ञात होता है कि यह कवि की आरंभिक रचना है। लघुरामायण की भाषा सरल है तथा वर्णविन्यास में कवि के प्रौढ़ पांडित्य का प्रभाव है। धार्मिक तथा साहित्यिक दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ रचना है।

हरिदत्त नौटियाल ने कृष्ण द्वैपायन प्रणीत श्रीमद्भागवत में चित्रित श्रीकृष्ण चरित के विविध आख्यानों को बावन (52) स्रग्धरा छन्छों में आबद्ध कर 'लघुभागवतम्' की रचना की है। यह काव्य पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध दो भागों में विभक्त है। पूर्वार्ध में कृष्ण जन्म से लेकर कंस वध तथा कृष्ण के गुरू गृह गमन तक की घटनाओं का वर्णन है। उत्तरार्ध में कंस की स्त्रियों का

जरासन्ध के पास जाना, जरासन्ध द्वारा मथुरा पर आक्रमण, द्वारिका निर्माण, जरासंघ का विनाश, शिशुपाल वध तथा सत्राजित मणि आदि से सम्बन्धित कथाएँ वर्णित हैं। इस काव्य की कथा का आधार पौराणिक है, शैली सूत्रात्मक तथा भाषा समासबहुल एवं सारगर्भित है। काव्य में श्रीकृष्ण के उदात्त चरित का वर्णन करना कवि का अभीष्ट प्रती होता है।

दूतकाव्य परम्परा पर आधारित कामदूतकाव्यम् में हरिदत्त नौटियाल ने वर्णन किया है कि किस प्रकार बसन्त ऋतु का आगमन होने पर विरह वेदना से व्यथित विरहिणी नायिका 'कामदेव' को माध्यम बनाकर अपना सन्देश परदेश गए अपने प्रियतम को भेजती है। नायिका अपनी मनोदशा का परिचय दूत (कामदेव) को कराकर नायक का आह्वान करती है। इस काव्य में मात्र 26 पद्य है। शब्द रचना, भाव व्यंजना, पदसालित्य तथा काव्य सौष्ठव की दृष्टि से यह रचना नवीन है। इसमें विप्रलम्भ श्रृंगार रस का सुन्दर समायोजन है तथा अनुप्रास, यमक, श्लेष, चित्रालंकार आदि विविध अलंकारों का प्रयोग किया गया है। अनेक प्रकार के छन्दों में रचित इस काव्य में बसन्त ऋतु एवं तज्जन्य काम व्यथा का सुन्दर चित्रण हुआ है।

हरिदत्त नौटियाल की एक अन्य रचना है भोज्यावलिः। इसमें फल मिष्ठानादि पदार्थों तथा मांस भोज्य में विविध वस्तुओं का उपयोग, निर्माण विधि तथा उससे प्राप्त लाभ आदि का चित्रण किया गया है। यह रचना दो भागों में विभक्त है। पूर्व भाग में शाकाहार एवं उत्तर भाग में मांसाहार का वर्णन है। फल प्रकरण, मिष्ठान प्रकरण, खाद्य प्रकरण तथा मांस वर्ग का पृथक-पृथक क्रमिक वर्णन 132 पद्य बद्ध विवेचन इस काव्य में प्रस्तुत किया गया है। काव्य द्धारा कवि की 'सूद विद्या' के गहन ज्ञान का पता चलता है।

अभ्यास प्रश्न

टिप्पणी

1. लक्ष्मीपति पाण्डे
2. विश्वेश्वर पाण्डे
3. हरिदत्त नौटियाल

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. पण्डित भगीरथ पाण्डे जाने जाते हैं -

(क) नाटककार के रूप में

(ख) गद्यकार के रूप में

(ग) व्याकरणकार के रूप में

(घ) टीकाकार के रूप में

2. फर्रूखशेयरचरितम् और अब्दुल्लाहचरितम नामक ऐतिहासिक काव्य किसकी रचनाएँ है-

(क) लक्ष्मीपति पाण्डे

(ख) शिवानन्द पाण्डे

(ग) पंडित पद्मदेव

(घ) त्रिलोचन जोशी

3. त्रिलोचन जोशी का एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ है -

(क) देवीमाहात्म्य

(ख) भक्तिप्रबन्ध काव्य

(ग) कृष्णस्तोत्र

(घ) राममहिम्नस्तोत्र

4. प्रेमनिधि पन्त की कुल कितनी रचनाओं का उल्लेख प्राप्त होता है -

(क) बारह

(ख) तेरह

(ग) सत्रह

(घ) तीन

5. मेधाकर बहुगुणा किस राजा के सभापंडित थे-

(क) मलयवर्मा

(ख) प्रदीपशाह

(ग) अनुरंजन शाह

(घ) भूपेन्द्र शाह

6.'कामदूतकाव्यम' किसकी रचना है -

(क) शिवानन्द

(ख) विष्णुदत्त

(ग) बालकृष्ण

(घ) हरिदत्त नौटियाल

रिक्त स्थान पूर्ति

1. विष्णुदत्त, हरिदत्त बन्धु की संयुक्त रचना ..... है।

2. प्राणमंजरी ..... की तीसरी पत्नी थी।

3. हरिबल्लभ उप्रेती ने ..... नामक एकमात्र ग्रन्थ की रचना की।

4. मेधाकर बहुगुणा के पिता का नाम ..... था।

5. मन्दारमंजरी .....की रचना है।

6. धरणीधर पन्त अल्मोड़ा के .....ग्राम के रहने वाले थे।

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

1. पद्मदेव किसके राज्याश्रित कवि थे?

2. यागीश्वर माहात्म्य किसकी रचना मानी जाती है?

3. बदरीशलीला के लेखक कौन है?

4. कुमाऊँ की एकमात्र संस्कृत कवियित्री कौन है?

5. कल्याणचन्द्रोदय काव्य किसकी रचना है?

6. विश्वेश्वर पाण्डे की कुल कितनी कृतियों का विवरण प्राप्त होता है?

सत्य/असत्य बताइए।

1. अलंकारकौस्तुभ के लेखक विश्वेश्वर पाण्डे हैं।

2. 'पृथ्वीप्रेमोदयकाव्य 'धरणीधर पन्त की रचना है।

3. 'बदरीशस्तोत्र 'भवानन्द की रचना है।

4. तारानिधि पन्त की एकमात्र कृति 'वृत्तसार' ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित है।

5. 'रामायणप्रदीप' में महाराजा प्रदीप शाह के पराक्रम का वर्णन प्राप्त होता है।

6. लघु रामायण और लघुभागवतम् विष्णुदत्त की रचनाएँ हैं।

नोट: उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर इकाई के अन्त में दिए जा रहे है किन्तु हमारा सुझाव है कि आप स्वमूल्यांकन हेतु उनसे अपने उत्तरों का मिलान करके देखें।

1.4 सारांश:-

अट्ठारहवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र में तो संस्कृत के अनेक काव्यकारों तथा उनकी रचनाओं का परिचय हमें प्राप्त होता है किन्तु आप जानते ही होंगे कि गढ़वाल क्षेत्र में हमें अट्ठारहवीं शताब्दी पर्यन्त संस्कृत भाषा में बहुत कम लिखित काव्य देखने को मिलते है। कुमाऊँ में में इस शताब्दी के पंडित भगीरथ पाण्डे, पण्डित लक्षमीपति पाण्डे, पंडित पद्मदेव, पंडित शिवानन्द पाण्डे, त्रिलोचन जोशी, भवानन्द, प्रेमनिधि पंत, प्राणमंजरी, धरणीधर पन्त,

हरिदत्त जोशी, विश्वेश्वर पाण्डे, हरिकृष्ण पन्त, हरिबल्लभ उप्रेती तथा तारानिधि पन्त आदि काव्यकारों की सुदीर्घ परम्परा प्राप्त होती है। उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में हमें केवल तीन काव्यकारो - मेधाकर बहुगुणा, विष्णुदत्त तथा हरिदत्त नौटियाल का ही उल्लेख प्राप्त हो सका है। ऐसा नहीं है कि गढ़वाल में संस्कृत में साहित्य रचना करने वाले विद्वान नहीं थे। संभवतः अन्य अनेक ऐसे कवि भी होंगे जो अब तक या तो प्रकाश में नहीं आ पाए है या उनकी रचनाएं नष्ट-भ्रष्ट हो चुकी है। भविष्य में यह आशा की जानी चाहिए कि इस सदी के गढ़वाल के अन्य काव्यकारों के ग्रन्थ यदि यत्र-तत्र कहीं से भी प्राप्त हों जाएं तो उन्हें प्रकाश में लाने का कार्य सम्पन्न किया जाना चाहिए।

1.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:-

टिप्पणी

1. हेतु इकाई की उपखण्ड सं. 1.3.1 (पप) को देखें।
2. हेतु इकाई की उपखण्ड सं. 1.3.1 (गप) को देखें।
3. हेतु इकाई की उपखण्ड सं. 1.3.2 (पपप) को देखें।

बहुविकल्पीय

1. घ
2. क
3. ख
4. ग
5. ख
6. घ

रिक्त स्थान पूर्ति

1. श्रृंगारलता
2. प्रेमनिधि पन्त
3. श्रीमद्भूषणसारदर्पण
4. चण्डीदास
5. विश्वेश्वर पाण्डे
6. तिलाड़ी

अतिलघूत्तरीय

1. चन्द नरेश मोहनचन्द के
2. लक्ष्मीपति पाण्डे की
3. त्रिलोचन जोशी
4. प्राणमंजरी
5. पण्डित शिवानन्द पाण्डे की
6. 25

1.7 संदर्भ ग्रन्थ:-

1. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन, डा. प्रेमदत्त चमोली।
2. कुमाऊँ का इतिहास, बद्रीदत्त पाण्डे।
3. कुमाऊँ में संस्कृत साहित्य की परम्परा, बसन्तबल्लभ भट्ट।

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न:-

1. अट्ठारहवीं शताब्दी में कुमाऊँ के संस्कृत काव्यकारों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. अट्ठारहवीं शताब्दी में गढ़वाल के संस्कृत काव्यकारो का परिचय दीजिए।
3. अट्ठारहवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड की संस्कृत काव्य परम्परा पर प्रकाश डालिए।

इकाई 2. उन्नीसवीं शती के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 इकाई की पाठ्य सामग्री

2.3.1उन्नीसवीं शती के उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय

2.3.2 उन्नीसवीं शती के उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय

2.4 सारांश

2.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.6 निबन्धात्मक प्रश्न

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री

2.1 प्रस्तावना:

द्वितीय खण्ड की प्रथम इकाई में आप अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रमुख संस्कृत साहित्यकारों एवं उनके द्वारा विरचित ग्रन्थों के विषय में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस इकाई में आपकों उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं के बारे में बताया जाएगा। इस शताब्दी में उत्तराखण्ड में उर्वीदत्त डंगवाल, सदानन्द डबराल, बालकृष्ण भट्ट, विजयानन्द बहुगुणा, कुमुदानन्द बहुगुणा, देवराज कवि, रामप्रसाद हटवाल, लोकरत्न गुमानी, सुकृतिदत्त पन्त, दुर्गादत्त पन्त, देवीदत्त पाण्डे आदि काव्यकारों की सुदीर्घ परम्परा विद्यमान रही है। इन काव्यकारों ने अपनी विद्वता और काव्य प्रतिभा के बल पर संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में ग्रन्थ रचना कर संस्कृत साहित्य के भण्डार की अभिवृद्धि में अमूल्य योदान दिया। इस इकाई में आप उत्तराखण्ड के प्रमुख काव्यकारों और कृतियों का परिचय प्राप्त करेंगे।

2.2 उद्देश्य:-

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप—

- भलीभाँति समझा पाएंगे कि उन्नीसवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की क्या परम्परा रही।
- अच्छी तरह बता पाएंगे कि उन्नीसवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र में कौन कौन से संस्कृत कवि हुए।
- उन्नीसवीं शताब्दी में कुमाऊँ में प्राप्त संस्कृत काव्यों के बारे में बता सकेंगे।
- अच्छी प्रकार से बता सकेंगे कि उन्नीसवीं शताब्दी में गढ़वाल में कौन कौन से संस्कृत काव्यकार हुए।
- भलीभाँति समझा पाएंगे कि उन्नीसवीं शताब्दी में गढ़वाल में कैसे-कैसे संस्कृत काव्य रचे गए।

2.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:

उन्नीसवीं शताब्दी भारतवर्ष में अंग्रेजों के शासन का चरम काल था तथापि इस काल में भी उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य के सृजन में कोई कमी नहीं आई। इस कालखण्ड

में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र में अनेकानेक प्रसिद्ध काव्यकार हुए जैसे- पण्डित तरानिधि पन्त, लोकरत्न पन्त गुमानी, सुकृतिदत्त पन्त, दुर्गादत्तपन्त, देवीदत्त जोशी, गुणानन्द, पंडित गंगाराम शास्त्री तथा देवीदत्त पाण्डे आदि। उन्नीसवीं शताब्दी में गढ़वाल में भी मेधाकर बहुगुणा, कुमुदानन्द बहुगुणा, देवराज कवि, विजयानन्द बहुगुणा, प्रसिद्ध कवि सदानन्द डबराल तथा रामप्रसाद हटवाल आदि अनेकानेक सुविख्यात कवि हुए जिन्होंने अपनी कवित्व प्रतिभा एवं पांडित्य द्वारा अनेकानेक ग्रन्थों की रचना करके संस्कृत वाड्.मय की अभिवृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया। कुमाऊँ तथा गढ़वाल के उन्नीसवीं शताब्दी के संस्कृत काव्यकारों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

2.3.1 उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय

2.3.1.1 पंडित तारानिधि पन्त—

तारानिधि पन्त के पिता प्रेमनिधि पन्त नेपाल के महाराजा मलयवर्मा तथा पृथ्वीनारायण शाह के राजाश्रय में रहते हुए काशी में गोमठ के समीप निवास करते थे। तारानिधि पन्त का सम्बन्ध भी नेपाल एवं काशी से बना रहा। तरानिधि पन्त की एकमात्र रचना 'वृत्तसार' है। यह छन्दशास्त्र विषयक ग्रन्थ है। इस रचना की पाण्डुलिपि आज भी अप्रकाशित रूप में नेपाल के राष्ट्रीय संग्रहालय काठमाण्डू में विद्यमान है।

2.3.1.2 लोकरत्न पन्त 'गुमानी':

कुमाऊँ क्षेत्र में पिथौरागढ़ जिले में विद्यमान 'उपराड़ा' ग्राम में भारद्वाज गोत्र के पन्त ब्राह्मण रहते है। यही गाँव कविवर गुमानी की जन्मस्थली रहा है। इनका जन्म यद्यपि अठ्ठारवीं शती के अन्तिम दशक (सन् 1790 ईसवी) में हुआ था तथापि इनका रचना काल 19 वी शती का पूर्वार्द्ध रहा है। इनके पिता का नाम देवनिधि तथा माता का नाम देवमंजरी था। कवि का वास्तविक नाम लोकरत्न था किन्तु बचपन में इनके माता-पिता प्रेमवश इन्हें गुमानी नाम से पुकारते थे। आगे चलकर साहित्य जगत में इनका यही नाम प्रचलित हुआ। गुमानी कवि संस्कृत के साथ-साथ हिन्दी (खड़ी बोल), कुमाऊँनी, नेपाली, अवधी, उर्दू एवं फारसी का भी अच्छा ज्ञान रखते थे। ये भगवान राम के अनन्य भक्त थे। इनके द्वारा रचित अनेक रचनाएं भगवान राम को ही समपिर्तत हैं। यद्यपि गुमानी ने संस्कृत में किसी विशाल ग्रन्थ की रचना तो नहीं की

तथापि इनके स्फुट पद्यात्मक रचना संसार से संस्कृत वाड्.मय समृद्ध है। गुमानी द्वारा रचित ग्रन्थ इस प्रकार है -

1. उपदेशशतक

2. समस्यापूर्ति

3. ज्ञानभैषज्यमंजरी

4. भक्तिविज्ञप्तिसार

5. रामनाम विज्ञप्तिसार

6. रामाष्टक

7. जगन्नाथष्टक

8. रामनामपंचशिका

9. गाड.गप्रबन्धम्

10. पंचपंचाशिका

11. दूर्जनदूषणम

12. देवतास्तोत्राणि

13. रामसहस्रगणदण्डक

14. कालिकाष्टक

15. निर्णयसार

16. अंग्रेजराज्यवर्णनम्

17. हितोपदेशशतक

इसके अलावा भी गुमानी ने मनोविनोद एवं क्रीड़ा से संबन्धित स्फुट पद्य लिखे। इन्होंने पटियाला नरेश श्रीकर्ण सिंह, अलवर नरेश श्रीवनेसिंह, नहाण रियासत के राजा श्री फतेहसिंह की स्तुति में भी सर्गोबद्ध काव्यरचना की थी, किन्तु आज वे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। गुमानी हिन्दी (खड़ी बोली) के प्रथम कवि थे। हिन्दी में रचित स्फुट पद्य इसके उदाहरण है तथापि हिन्दी जगत में उन्हें उनका स्थान उपलब्ध नहीं हो पाया है।

2.3.1.3 सुकृतिदत्त पन्त

सुकृतिदत्त के पूर्वज पिथौरागढ़ जनपद के उपराड़ा गाँव के रहने वाले थे किन्तु बाद में ये स्थायी रूप से नेपाल में रहने लगे। सुकृतिदत्त के पिता का नाम भवदत्त था। इस कवि की दो रचनाएं 'कार्त्तीवीर्योदय' महाकाव्य तथा 'दक्षिणकालीस्तोत्र' हैं जो आज भी अप्रकाशित हैं।

इनकी पाण्डुलिपियाँ 'राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेपाल' में संग्रहीत हैं। सोलह सर्गों में रचित इनका कार्तवीर्योदय महाकाव्य 19 वीं शताब्दी का महत्वपूर्ण महाकाव्य है। कवि का यह महाकाव्य श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् तथा भारवि के किरातार्जुनीयम् महाकाव्यों से अद्भुत समानता रखता है। इनकी दूसरी रचना दक्षिणकालीस्तोत्र शक्ति की तान्त्रिक उपासना से संबद्ध है।

2.3.1.4 दुर्गादत्त पन्त:

इनका समय उन्नीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है। दुर्गादत्त पन्त का मूल निवास तो पिथौरागढ़ का यजूटा (जजूट) था किन्तु इनके पितामह मुरादाबाद में बस गए थे। कवि का जन्म सन् 1865 ई. में यहीं हुआ था। दुर्गादत्त जी मुख्यतः आयुर्वेद के अच्छे जानकार थे। इन्होंने आयुर्वेद पर आधारित तीन ग्रन्थों की रचना की थी। इनकी पहली रचना सुश्रुत संहिता पर लिखी टीका है, जो ''पदार्थ भाष्य'' नाम से प्रसिद्ध है। इनकी दूसरी रचना ''पदार्थ विद्या'' है, जो पदार्थ विज्ञान तथा रसायन शास्त्र से सम्बन्धित है तथा इनकी तीसरी रचना ''दोषदर्पण'' है, जिसमें वात-पित्त-कफ के विकार से उत्पन्न होने वाले रोगों का विस्तार से वर्णन किया गया है। 'हकीमज्यू' के नाम से प्रसिद्ध दुर्गादत्त पन्त जी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से कई भयंकर रोगों का निदान तो किया ही साथ ही साहित्य सृजन करके सुरभारती की सेवा भी की।

2.3.1.5 पंडित घनानन्द पन्त:

घनानन्द भी गंगावली (गंगोलीहाट) के निकट यजूटा (जजूट) ग्राम के रहने वाले आयुर्वेद के ज्ञाता तथा एक कुशल वैद्य थे। इनका जन्म सन् 1870 ईसवीं में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। बाद में बनारस जाकर इन्होंने व्याकरण एवं साहित्य में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। इनके पिता हरिकृष्ण पन्त आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता थे। दुर्गादत्त पन्त जो आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता थे, ने भी इन्हें आयुर्वेद के प्रति प्रेरित किया था। घनानन्द ने बाद में मुरादाबाद जाकर चिकित्सा कार्य किया। ये अपने समय के प्रसिद्ध चिकित्सक रहे। इन्होंने संस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनका विवरण इस प्रकार है -

1. रसेन्द्रसार संग्रह की ''आनन्दी टीका''

2. प्रतिसंस्कृत निदान

3. भेड़संहिता (टीका)

4. धात्रीविद्या

5. महामारी निदान

2.3.1.6 रामदत्त पन्त:-

रामदत्त जी पिथौरागढ़ जनपद के उपराड़ा गाँव के भारद्वाज गोत्री पन्त ब्राह्माण थे। इनके पिता का नाम केवलकृष्ण पन्त था। बाल्यकाल में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। अतः ये अपने मामा के घर पले-बढ़े। इनका समय उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध मान्य है। इन्होंने बरेली कॉलेज में 15 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। बाद में ये बरेली में ही रहने लगे। रामदत्त पन्त गायत्री के अनन्य उपासक थे। इनके द्वारा संस्कृत भाषा में विरचित रचनाओं का उल्लेख इस प्रकार है -

1. दीपशतकम् (लघुकाव्य)

2. लेखनीकृपाणम्

3. अपरपंचरात्र (नाटक)

4. एकादशी निर्णयभार प्रकाश

5. रामनवमीनिर्णय

6. अमरकोश व्याख्या

संस्कृत के साथ ही इन्होंने ''ज्योतिष प्रकाश'', ''दिव्य ज्योति'' तथा ''विधवा विवाह के दोष'' नामक हिन्दी ग्रन्थ भी लिखे। इनके अधिकांश ग्रन्थ प्रकाशित हैं। 'दीपशतक' तथा 'लेखनीकृपाण' ये दो रचनाएँ इन्होंने महाराजा जार्ज पंचम तथा महारानी 'मैरी' के भारत आगमन पर उन्हें समर्पित की थी। इन काव्यों से प्रभावित होकर जार्ज पंचम ने उन्हें पाँच हजार रूपये का पुरस्कार भी प्रदान किया था।

2.3.1.7 देवीदत्त जोशी:

अल्मोड़ा जनपद के समीपस्थ सोमेश्वर में अंगीरस गोत्र वाले जोशी ब्राह्माणों का 'सर्प' नामक एक गाँव है वहीं देवीदत्त जोशी का जन्म 19 वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था। देवीदत्त ने काशी में रहते हुए दो ग्रन्थों की रचना की -

1. सुगम ज्योतिष

2. सन्ध्यादर्पण

ज्योतिषशास्त्र के प्रारंभिक ज्ञान के लिए 'सुगम ज्योतिष' महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह 10 अध्यायों में विभक्त है। इनका सन्ध्यादर्पण नामक ग्रन्थ नित्यकर्मानुष्ठान से सम्बन्धित है।

2.3.1.8 गुणानन्द:

उन्नीसवीं शताब्दी में पंडित विष्णुदत्त के पुत्र गुणानन्द अद्भुत ज्योतिषी थे। इनका जन्म पिथौरागढ़ के समीपस्थ विशाड़ नामक गाँव में विश्वामित्र गोत्री 'भट्ट' ब्राह्माण परिवार में हुआ था। इन्होंने ज्योतिष विद्या के साथ-साथ कर्मकाण्ड, मीमांसा, पुराण तथा साहित्यादि विषयों का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। इन्होंने 'पंचाग' तथा 'ग्रहगणितीय सारिणयों' के साथ ही 'पृथ्वीसहस्रनाम' नामक एक लघु ग्रन्थ की रचना भी की थी। गुणानन्द द्वारा विरचित अन्य ग्रन्थ आज भी अप्राप्य है।

2.3.1.9 पंडित गंगाराम शास्त्री:

उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृत व्याकरण में परिष्कार शैली के प्रवर्तक पंडित गंगाराम शास्त्री का नाम प्रशंसनीय है। ये कुमाऊँ के ज्योली गाँव से बाद में काशी चले गए। इनकी नई व्याकरण शैली ने व्याकरण के अध्ययन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। इन्होंने नव्य न्याय में 'अवच्छेदकावाच्छिन्न' रीति को अपनाकर व्याकरण के अध्ययन को सरल बनाया।

2.3.1.10 देवीदत्त पाण्डे:

देवीदत्त जी पिथौरागढ़ के छाना गाँव के सीमाल्टीय पाण्डे थे। इनका समय उन्नीसवीं शती का अन्तिम चरण माना जाता है। इनके पिता का नाम लक्ष्मीनारायण था। देवीदत्त सनातनी प्रकृति के थे। इन्होंने अल्मोड़ा के रैमजे इण्टर कॉलेज में लम्बे समय तक अध्यापन कार्य किया। इनकी एकमात्र रचना ही प्राप्त है। महाकवि क्षेमेन्द्र रचित 'अवदानकल्पलता' 107 पल्लवों में विभक्त है, जिसके प्रारंभिक तीन पल्लवों - प्रभासावदान, श्रीसेनावदान तथा मणिचूड़ावदान पर देवीदत्त पाण्डे ने व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित विस्तृत संस्कृत टीका लिखी है। यह टीका नवलकिशोर प्रेस, इलाहाबाद से सन् 1907 ईसवी में प्रथम बार प्रकाशित हुई। इन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख भी लिखे।

2.3.2 उन्नीसवीं शती के उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय

2.3.2.1 उर्वीदत्त डंगवाल:

गढ़वाल की ऐतिहासिक नगरी श्रीनगर के समीप स्थित डांग नामक गाँव में सन् 1868 ईसवी को उर्वीदत्त डंगवाल का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम बदरीदत्त था। उर्वीदत्त की प्रारंभिक शिक्षा श्रीनगर में हुई उसके बाद वे लाहौर चले गए और वहाँ के ''ओरिएन्टल कॉलेज' से शास्त्री की उपाधि लेकर पुनः अपने गाँव लौट आए। उनकी विद्वता से प्रभावित तत्कालीन

टिहरी नरेश कीतिशाह ने इन्हें 'प्रताप हाई स्कूल' टिहरी में प्रधानाध्यापक पद पर नियुक्ति दी। यही अध्यापन करते हुए इन्होंने देववाणी की सेवा की। ये संस्कृत-हिन्दी के साथ ही अंग्रेजी के भी अच्छे ज्ञाता थे। उर्वीदत्त डंगवाल नृपति कीत्तिशाह के दरबार में राजज्योतिषी एवं राजपंडित रहे।

इनके द्वारा रचित एकमात्र कृति 'एडवर्डवंशम' महाकाव्य पन्द्रह सर्गों में निबद्ध है। यह ब्रिटेन के राजाओं के ऐतिहासिक चरित्र को प्रकाश में लाने वाला पहला महाकाव्य है। इस काव्य में विविध छन्दों में निबद्ध कुल 832 श्लोक है जिनमें ईसा पूर्व 55 से लेकर 1903 ईसवी पर्यन्त ब्रिटेन में घटित प्रमुख घटनाओं के साथ ही ब्रिटेन के युवराज एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहरण तक की घटनाओं को चित्रित किया गया है।

इनके द्वारा विरचित एक अन्य काव्य 'भूपाल वंशकाव्य' का उल्लेख भी प्राप्त होता है किन्तु यह रचना अभी तक अप्राप्य है।

2.3.2.2 सदानन्द डबराल:

सदानन्द का जन्म पौड़ी गढ़वाल के गाँव तिमली में सन् 1877 ईसवीं के लगभग माना जाता है। इनके पिता का नाम दामोदर था, जो अनन्य संस्कृत प्रेमी, तान्त्रिक तथा समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। सदानन्द ने शिक्षा तो केवल 'प्राज्ञ' की उत्तीर्ण की थी किन्तु स्वाध्याय द्वारा इन्होंने संस्कृत में अद्भुत वैदुष्य प्राप्त किया था। बचपन में ही ये सुन्दर संस्कृत छन्दों की रचना किया करते थे। सदानन्द के जीवन का अधिकांश समय श्रीरघुनाथकीर्ति संस्कृत विद्यालय, देवप्रयाग के प्रधानाचार्य के रूप में बीता। देवप्रयाग में संस्कृत के प्रचार-प्रसार में इनका विशेष योगदान रहा। स्वयं केवल प्राज्ञ उपाधिधारी होते हुए भी ये शास्त्री एवं आचार्य के विद्यार्थियों को साधिकार पढ़ाया करते थे। सदानन्द डबराल उच्चकोटि के विद्वान एवं श्रेष्ठ कवि थे। इनके द्वारा विरचित संस्कृत रचनाएँ इस प्रकार हैं -

1. नरनाराणीयकाव्यम्

2. रास विलास

3. कीर्ति विलास

4. नैषधीचरितम् की संस्कृत टीका

5. राजरहस्य

इनका सबसे प्रसिद्ध महाकाव्य है नरनारायणीय महाकाव्य। यह महाकाव्य धर्म प्रजापति की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न नर और नारायण का बदरीवनगमन, तपस्या तथा अर्जुन एवं कृष्ण के

रूप में उनके अवतरण आदि इतिवृत्त से युक्त है। यह महाकाव्य ब्रह्मवैवर्तपुराण तथा श्रीमद्भागवत आदि पर आधारित है। नर-नारायण पर्वतों की अचल समाधि के सन्दर्भ में कृष्ण की बाल लीलाओं का इसमें रोचक वर्णन किया गया है। काव्यात्मक गुणों से युक्त नरनारायणीय काव्य 9 सर्गों तथा 393 पद्यों में निबद्ध है। कवि का कीर्तिविलास टिहरी नरेश कीर्तिशाह से संबन्धित 12 सर्गों का काव्य अद्यतन अप्रकाशित है। नैषधीय चरितम् पर लिखित इनकी टीका लाहौर से प्रकाशित हुई थी। कवि कृत रासविलास एक गीतिकाव्य है। इनका नरनारायणी काव्य संस्कृत साहित्य जगत की एक उत्कृष्ट रचना है।

2.3.2.3 कुमुदानन्द बहुगुणा:

कवि कुमुदानन्द का जन्म 18 वीं शती के अन्त में श्रीनगर गढ़वाल के समीपस्थ ग्राम पुष्कर (पोखरी) चलनस्यूं में हुआ था किन्तु इनका रचना काल 19 वीं सदी का पूर्वाद्ध है। इनका 'सुदर्शनोदय काव्य' गढ़वाल नरेश प्रद्युम्नशाह के पुत्र सुदर्शनशाह से सम्बन्धित एक ऐतिहासिक काव्य है। गढ़वाल में गोर्खाओं के अत्याचार से जनता आक्रान्त थी। राज्य च्युत नरेश सुदर्शनशाह अंग्रेजों की सहायता से अपना राज्य पुनः प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील थे। सुदर्शनोदय काव्य में गोर्खा शासक अमरसिंह थापा का सुदर्शनशाह के साथ युद्ध वर्णन तथा उनकी कीर्ति आदि का चित्रण प्राप्त है। कुमुदानन्द कवि का यह काव्य आकार में छोटा होने पर भी तत्कालीन ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का यथार्थ ज्ञान कराने में सक्षम है। सुदर्शनोदय काव्य 5 प्रकाशों में विभक्त है। ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थ समाप्ति की सूचना न होने से इसके विस्तार की सम्भावना व्यक्त होती है। साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से कवि कुमुदानन्द की यह रचना उत्तम है।

2.3.2.4 देवराज कवि:

देवराज कवि टिहरी में 19वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था। इनके मूलपुरूष 17 वीं 18 वीं शताब्दी में गढ़वाल आए थें इनके पूर्वजों ने टिहरी राज्य के अन्तर्गत काणाताल के समीप 'खुरेत' गाँव बसाया था। जब टिहरी गढ़वाल की राजधानी बनी तो ये खुरेत छोड़कर टिहरी में बए गए। कवि की वंश परम्परा में उच्चकोटि के अनेक विद्वान हुए। इनके पुत्र बृजराज भी संस्कृत के कवि हुए।

देवराज कवि की रचना 'गढ़वाल राजा वंशावलीः' विविध वृत्तों में निबद्ध शुद्ध संस्कृत भाषा में काव्यमयी शैली में रचित है। इस काव्य में मात्र 165 पद्यों में गढ़वाल के राजवंश का वर्णन किया गया है। गढ़वाल के पवार राजवंश का प्रारम्भ चन्द्रवंश से मानकर प्रतापशाह तक के राजाओं की नामावलि, उनके शौर्य-पराक्रम, उनकी राजधानियों के वैभवादि का काव्यमय शैली में वर्णन इस काव्य में हुआ है। इस वंश के पूर्वजों तथा नहुष आदि राजाओं का उल्लेख करते हुए गढ़वाल के चन्द्रवंशी अनंतपाल आदि राजाओं का ऐतिहासिक वर्णन देवराज कवि ने किया है। यह ग्रन्थ गढ़वाल के जनजीवन के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान कराता है। गढ़वाल के प्राचीन राजओं की शौर्य गाथाओं, उनके वैभव वर्णन, युद्ध वर्णन तथा तत्कालीन समाज के विभिन्न स्वरूपों का दिग्दर्शन काव्य में प्राप्त होता है। तत्कालीन गढ़वाल के राजनैतिक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक स्वरूप का ज्ञान गढ़वालराजा वंशावलिः से सम्यक रूपेण स्पष्ट हो जाताहै।

2.3.2.5 विजयानन्द बहुगुणा:

कवि विजयानन्द का जन्म पौड़ी के समीप स्थित कोठार गाँव में सन् 1869-65 ईसवीं के मध्य अनुमानित है। इनके पिता का नाम गौरीशंकर था, जो ज्योतिष एवं तन्त्रशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे। इनके पिता का उपनाम 'अव्यकानन्द' भी था। विजयानन्द बहुगुणा ने पाँच उच्छवासों में 'विरही नवोदय काव्य' की रचना की। इस काव्य में गढ़वाल में बहने वाली विरही नदी की प्रबल धारा के घात प्रतिघातों से सन् 1894 ईसवी की विनाशलीला का काव्यमय चित्रण किया गया है। पचपन पृष्ठों में अंकित यह ग्रन्थ कुल 219 पद्यों में निबद्ध है। ग्रन्थ के अन्त में बारह पद्य गणपति स्त्रोत के तथा छः पद्य कविवंश परिचय से संबद्ध हैं। विजयानन्द ने अपनी इस रचना का प्रणयन सन् 1894 ईसवी में विरही गंगा की विध्वंस लीला को देखने के बाद किया था अतः इस ग्रन्थ की रचना निःसन्देह उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में हुई होगी। विरही नवोदयकाव्य में पौराणिक कथा के साथ-साथ प्रलयंकारी विनाशजन्य घटनाओं का सजीव एवं रोचक वर्णन कवि ने एक प्रत्यक्षदर्शी के समान किया है, जिसमें स्वाभाविकता और मानव की मूक वेदना के दर्शन होते हैं। यह एक खण्डकाव्य है, जिसमें दक्ष के यज्ञ विध्वंस से लेकर श्रीनगर की सन् 1894 की विनाशलीला तक की करूण गाथा समविष्ट है। काव्य में करूण रस अंगीरस है।

2.3.2.6 नागदत्त शर्मा:

नागदत्त शर्मा का जन्म चमोली गढ़वाल में अगस्त्य मुनि के पास ग्राम मणिगूह (मणगू) में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था। इनके पिता का नाम कामरूप था, जो अपने समय के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। नागदत्त शर्मा की एकमात्र रचना 'कामेश्वरकीर्तिविलासकाव्यम्' प्राप्त होती है, जिसमें दरभंगा के राजा कामेश्वर सिंह का जीवन चरित्र तथा उनके वंशज नृपतियों का ऐतिहासिक विवरण प्राप्त होता है। काव्य के पूर्वांश में दरंभगा नरेश कामेश्वर सिंह का यशोगन तथा उत्तरांश में 37 वें वर्ष से कामेश्वर सिंह के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है। इस काव्य में गद्य-पद्य का सम्मिश्रण है। 608 गद्य-पद्य भागों का संग्रह इस काव्य में है। काव्य के पूर्वांश में 447 गद्य-पद्य भाग तथा उत्तरांश में 161 पद्य हैं और गद्य के केवल छः अंश हैं। काव्य में प्राप्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि कवि नागदत्त का अधिकांश जीवन मिथिला नरेश के राजदरबार में ज्योतिषी के रूप में बीता था। कवि की रचना कामेश्वरकीर्ति विलास-काव्य आज तक अप्रकाशित है। इसके अलावा उन्होंने ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ भी रचे थे जिनकी पाण्डुलिपियाँ उनके निवास पर सुरक्षित हैं।

कामेश्वरकीर्तिविलास काव्य की भाषा सरल तथा सामान्य है। कहीं कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हिन्दी कविता पढ़ी जा रही है। संस्कृत भाषा के साथ-साथ कवि ने अंग्रेजी के शब्दों का ज्यों का त्यों प्रयोग कर दिया है। वस्तुतः कवि ने भाषा पर ध्यान न देकर विषय पर अधिक ध्यान दिया है इसलिए काव्य में कहीं कहीं भाषा सम्बन्धी त्रुटियाँ रह गई हैं। काव्य में छन्दों की विविधता दर्शनीय है।

5 अभ्यास प्रश्न:

टिप्पणी

1. नरनारायणी काव्य
2. गुमानी कवि
3. सदानन्द डबराल
4. एडवर्डवंशम्

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. गुमानी कवि का असली नाम क्या था?

(क) कुलरत्न

(ख) कुलदीपक

(ग) लोकरत्न

(घ) लोकनायक

2. तारानिधि पन्त की एकमात्र रचना है-

(क) वृत्तसार

(ख) वृत्तरत्नाकर

(ग) वृत्तकोश

(घ) वृत्तरत्नेश

3.'दीपशतकम्' और 'लेखनीकृपाण' रचना पर ब्रिटेन के महाराज जार्ज पंचम ने किसे 5 हजार रूपए का पुरस्कार दिया था-

(क) तारानिधि पन्त को

(ख) रामदत्त पन्त को

(ग) घनानन्द को

(घ) देवीदत्त पाण्डे को

4.एडवर्डवंशम महाकाव्य में कितने सर्ग हैं?

(क) दस

(ख) बारह

(ग) चैदह

(घ) पन्द्रह

5. नरनारायणी काव्य किसकी रचना है?

(क) उर्वीदत्त डंगवाल

(ख) हरिदत्त नौटियाल

(ग) सदानन्द डबराल

(घ) विष्णुदत्त नौटियाल

6. विरही-नवोदय-काव्य में विरही गंगानदी में बाढ़ के कारण किस सन् में आई विनाशलीला का वर्णन है?

(क) 1894

(ख) 1872

(ग) 1909

(घ) 1880

रिक्त स्थान पूर्ति

1. नागदत्त शर्मा ने कामेश्वर.....काव्य की रचना की।
2. कीर्तिविलास काव्य में टिहरी नरेश.....का वर्णन है।
3. सुदर्शनोदय काव्य के रचनाकार.....हैं।
4. 'सुगमज्योतिष' और 'सन्ध्यादर्पण'.....की रचनाएँ हैं।
5. रासविलास एक.....कव्य है।

अतिलघूत्तरीय प्रश्न

1. दुर्गादत्त पन्त ने किस वेद का आधार लेकर तीन ग्रन्थों की रचना की ?
2. 'पृथ्वीसहस्रनाम' किसकी रचना है ?
3. उर्वीदत्त डंगवाल किस राजा के दरबार में राजज्योतिर्ष एवं राजपंडित थे ?
4. सदानन्द डबराल का जन्म पौड़ी गढ़वाल के किस गाँव में हुआ था ?
5. कुमुदानन्द बहुगुणा ने किस काव्य की रचना की ?
6. लघुरामायण और लघुभागवत किस छन्द में रचित काव्य ग्रन्थ है ?

सत्य/असत्य बताइए

1.उन्नसवीं सदी में उत्तराखण्ड में संस्कृत काव्य की समृद्ध परम्परा दिखाई देती है।

2.सुकृतिदत्त पन् के कार्तवीर्योदय महाकाव्य की पाण्डुलिपि अखिल भारतीय संस्कृत संस्थान में सुरक्षित है।

3. दुर्गादत्त पन्त रचित पदार्थ विद्या रसायन शास्त्र विषयक ग्रन्थ है।
4. सुदर्शनोदय काव्य में सुदर्शनशाह के पुत्र पद्युम्नशाह का वर्णन है।
5. भोज्यावलिः ग्रन्थ कवि की सूदविद्या का परिचायक है।
6. अपरपंचरात्र नाटक रामदत्त पन्त की रचना नहीं है।

नोटः- उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर इकाई में दिए जा रहे हैं तथापि हमारा सुझाव है कि आप स्वमूल्यांकन हेतु उनसे अपने उत्तरों का मिलान करके देखें।

2.4 सारांश:-

उन्नीसवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ तथा गढ़वाल दोनों ही क्षेत्रों में संस्कृत काव्य लेखन की समृद्ध परम्परा प्राप्त होती है। इस कालखण्ड में कुमाऊँ में तरानिधि, गुमानी कवि, सुकृतिदत्त, दुर्गादत्त, घनानन्द, रामदत्त, देवीदत्त, गुणानन्द, गंगाराम शास्त्री तथा दवीदत्त

पाण्डे आदि कवि एवं साहित्यकार अवतरित हुए जिन्होंने अपने अनेकानेक ग्रन्थ सुमनों द्वारा संस्कृत वाड्.मय की वाटिका को सुवासित किया।

उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में भी 19वीं शताबदी में उर्वीदत्त डंगवाल, सदानन्द डनराल, कुमुदानन्द बहुगुणा, देवराज कवि विजयानन्द बहुगुणा तथा नागदत्त शर्मा जैसे संस्कृत के विद्वान कवि हुए जिन्होंने महाकाव्य, खण्ड काव्य, प्रशस्तिकाव्य, शतक काव्य तथा ज्योतिषि आदि विविध प्रकार के ग्रन्थों की रचना करने संस्कृत-साहित्य-भंडार की अभिवृद्धि में अमूल्य योगदान दिया।पर्युक्त सभी कवियों के विविध काव्य आज संस्कृत प्रेमीजनों के कंठहार हैं उनके प्रेरणा हैं।

2.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:-

टिप्पणी

1. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 2.3.2.2 को देखें।
2. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 2.3.1.2 को देखें।
3. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 2.3.2.2 को देखें।
4. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 2.3.2.1 को देखें।

बहुविकल्पीय

1. ग
2. क
3. ख
4. घ
5. ग
6. क

रिक्त स्थान पूर्ति

1. कीर्तिविलास
2. हरिदत्त
3. कीर्तिशाह
4. कुमुदानन्द बहुगुणा

5. देवीदत्त जोशी

6. गीति

अतिलघुउत्तरीय

1. आयुर्वेद

2. गुणानन्द

3. टिहरी नरेश कीर्तिशाह

4. तिमली

5. सुदर्शनोदय

6. स्रग्धरा

सत्य/असत्य

1. सत्य

2. असत्य

3. सत्य

4. असत्य

5. सत्य

6. असत्य

2.6 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री:-

1. कुमाऊँ का इतिहास, बद्रीदत्त पाण्डे

2. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन, डा0 प्रेमदत्त चमोली

3. कूर्मांचल में संस्कृत वाड्.मय का विकास, डा0 बसन्तबल्लभ भट्ट

4. कूर्मांचल के ऐतिहासिक काव्यकार पंडित शिवानन्द पाण्डे: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, हस्तलिखित शोध प्रबन्ध, नीमा तिवारी शोध छात्रा (2005) कुमाऊँ वि0वि0 नैनीताल।

2.7 निबन्धात्मक प्रश्न

1. उन्नीसवीं सदी में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र की संस्कृत काव्य परम्परा का परिचय दीजिए।

2. उन्नीसवीं सदी के गढ़वाल के किन्हीं दो काव्यकारों का उल्लेख कीजिए।

3. उन्नसवीं सदी के गढ़वाल के संस्कृत कवि विषय पर एक लेख लिखिए।

इकाई - 3 बीसवीं शती के महाकाव्यकारों का परिचय

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 इकाई की पाठ्य सामग्री

3.3.1 बीसवीं शती के उत्तराखण्ड के कुमाँऊ क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय

3.3.2 बीसवीं शती के उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय

3.4 सारांश

3.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.6 निबन्धात्मक प्रश्न

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री

3.1 प्रस्तावना:-

द्वितीय खण्ड की दूसरी इकाई में आप उत्तराखण्ड के कुमाँऊ एवं गढ़वाल क्षेत्र के संस्कृत काव्यकारों के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस इकाई में आप बींसवी शताब्दी के उन संस्कृत काव्यकारों के विषय में जान पाएंगे, जिन्होंने इस शताब्दी में उत्तराखण्ड में रहकर संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया है। बीसवीं शती में उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य लेखन की सुदीर्घ परम्परा दिखाई देती है। इस कालखण्ड में कुमाँऊ एवं गढ़वाल दोंनों ही क्षेत्रों में अनेकानेक विद्वान कवि साहित्यकार हुए जिन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में काव्य रचना करके संस्कृत-साहित्य भण्डार की अभिवृद्धि की। इस इकाई में आपको उन काव्यकारों के बारे में विस्तार से बताया जा रहा है।

3.2 उद्देश्य:-

- इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप अच्छी तरह से बता पाएंगे की बीसवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड में आधुनिक संस्कृत के काव्यकारों की परम्परा किस रूप में रही है। भलीभाँति समझा सकेंगे की बीसवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड में कौन-कौन से संस्कृत काव्यकार हुए।
- भलीभाँति बता सकेंगे कि इस कालखण्ड में उत्तराखण्ड के कुमाँऊ क्षेत्र में संस्कृत में कैसे-कैसे काव्यों की रचना हुई।
- अच्छी प्रकार से समझा पाएंगे कि बीसवीं शताब्दी में गढ़वाल में संस्कृत काव्य की परम्परा कैसी थी ?
- भली प्रकार समझा सकेंगे कि गढ़वाल में कौन-कौन से संस्कृत काव्यकार हुए।
- अच्छी तरह बता पाएंगे कि इस कालखण्ड में गढ़वाल में कौन-कौन से संस्कृत काव्य रचे गए।

3.3 इकाई की पाठ्य सामग्री:-

बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध भारत की पराधीनता, भारत के स्वतंत्रता संग्राम का समय था तो बाद का आधा भाग भारत की स्वतंत्रता के अभ्युदय एवं भारत के विकास का समय था।

इस शताब्दी में भी उत्तराखण्ड संस्कृत-साहित्य-सृजन अखिरल गति से होता रहा। इस शती में उत्तराखण्ड के कुमाँऊ क्षेत्र में अनेकानेक ख्याति प्राप्त काव्यकारा हुए जैसे कि केदारदत्त जोशी, विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी,श्रीकृष्ण पन्त, जनार्दन शास्त्री, तारादत्त जोशी, प्रेमबल्लभ शर्मा, भोलादत्त पाण्डे, तारादत्त पन्त, महामहोपाध्याय पंण्डित, नित्योनन्द पंत, पर्वतीय डा. जयदत्त उप्रेती आदि। बीसवीं शताब्दी में गढवाल में भी संस्कृत काव्यकारों की सुदीर्घ परम्परा दिखाई देती है। इस समय में यहाँ बालकृष्ण भट्ट, हरिकृष्ण, श्रीधर प्रसाद बलूनी, जितेन्द्र चन्द्र भारतीय, शशिधर शर्मा, श्रीकान्त आचार्य, रामप्रसाद हटवाल और अशोक डबराल जैसे संस्कृत काव्यकारों का परिचय प्राप्त होता है जिन्होंने अपने ग्रन्थसुमनों संस्कृत साहित्य क उद्यान को सुवासित किया। कुमाऊँ तथा गढ़वाल के इन काव्यकारों तथा उनकी कृतियों का परिचय इस इकाई की पाठ्य सामग्री द्वारा आपको दिया जा रहा है।

3.3.1.1.बीसवीं शती के उत्तराखण्ड के कुमांऊ क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय-

3.3.1.1.केदारदत्त जोशी

केदारदत्त का जन्म अल्मोड़ा जनपद के जुनायल गाँव में सन् 1909 ईसवी में हुआ था। ये गर्ग गोत्र के जोशी ब्राहमण थे। काशी के अच्छे खगोलज्ञों तथा गणितज्ञों के मध्य इनकी गणना की जाती थी। केदारदत्त जोशी के बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी में रहकर शिक्षा प्राप्त की ये काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग में गणित के अध्यापक कार्य किया। केदारदत्त जोशी द्वारा विरचित ग्रन्थ इस प्रकार हैं।

1. उपपत्ति (सिद्धान्तशिरोमणि मध्यमाधिकारान्त)

2. सूर्यग्रहण विमर्श

3. स्वरशास्त्र विमर्श

4. ज्योतिष निबन्ध संग्रह

5. दैवज्ञभरण

6. गणित प्रवेशिका

7. बृहदवकहड़ाचकम्

8. ग्रहगणिताध्याय

9. मूहूर्तचिन्तामणि- (पीयूषधाराव्या टीका)

10. अष्टग्रहीयोग तथा क्षयमास मीमांसा

11. ज्योतिषशास्त्र का जीवतत्व पर प्रभाव

12. ज्योतिष में स्वरविज्ञान का महत्व

13. महामोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी का जीवन एवं कृतियाँ

इनमें से अंतिम तीन कृतियां हिन्दी भाषा में है। संस्कृत वाड्मय की अभिवृद्धि में इनका योगदान है।

3.3.1.2 'विद्याभूषण' श्रीकृष्ण जोशी

श्रीकृष्ण जोशी बीसवीं शताब्दी के अग्रगण्य संस्कृत काव्यकार हैं। इनका जन्म सन् 1883 ईसवीं में अल्मोड़ा नगर के चीनाखान मुहल्ले में हआ था। इनके पिता का नाम बद्रीदत्त जोशी था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा तथा नैनीताल में सम्पन्न हुई। इसके बाद इन्होंने म्योर सेन्ट्रल कॉलेज इलाहाबाद से बी.ए. तथा एल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त की। यद्यपि इनकी जीविका का साधन वकालत रहा किन्तु स्वाध्याय द्वारा इन्होंने संस्कृत में अद्वितीय विद्वता प्राप्त कर ली थी। सन् 1912 से 1926 तक वकालत ही इनका पेशा था। बाद में इन्होंने गाँधी जी के आह्वान पर वकालत त्याग दी और मदन मोहन मालवीय जी के प्रभाव एवं प्रेरणा से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में लगभग 20 वर्षों तक संस्कृत अध्यापन का कार्य किया। श्रीकृष्ण की विद्वता से प्रभावित होकर काशी के विद्वत समाज ने वे उन्हें 'विद्याभूषण' की उपाधि प्रदान की थी। श्रीकृष्ण जोशी का रचना संसार वृहत् है। जिसका विवरण इस प्रकार है-

1. अन्तरंगमीमांसा (मनोविज्ञान विषयक ग्रन्थ)

2. श्रीकृतार्थकौशिकम् (पौराणिक नाटक)

3. परमतत्त्वमीमांसा (दर्शन विषयक ग्रन्थ)

4. श्रीकृष्णमहिम्न स्तोत्र

5. श्रीराममहिम्न स्तोत्र

6. श्री गंगामहिम्नस्तोत्र

श्रीकृष्ण जोशी के ये छः काव्य प्रकाशित हैं। इसके अलावा इनके अप्रकाशित ग्रन्थों की सूची बहुत बड़ी हैं जिनकी हस्तलिखित प्रतियाँ अखिल भारतीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ तथा कवि के नैनीताल स्थित आवास (कृष्णापुर,नैनीताल) में देखने को मिलती हैं। उनके अप्रकाशित ग्रन्थ इस प्रकार हैं

1. रामरसायन महाकाव्य	**2. स्यमन्तकनाम महाकाव्य**	**3. अखण्डभारतम्**
4. पस्शुरामचरितम् नाटक	**5. यमराजपराज नाटक**	**6. पृथुचरितम्**
7. वीरभारत काव्यम्	**8. हिमालयमहिमा**	**9. संगीतराधवीयम्**

10. श्रीमद्भगवद्गीताभाष्य 11. धातुपाठ (पाँच भागों में) 12. क्रियाकलाप

13. संस्कृतबोधक 14. सर्वदर्शनमंजूषा 15. .श्रायदर्शनमंजूषा

16. कालयीमांसा 17. विशिष्टाद्वैतदर्शनम् 18. वेदान्तशास्त्र

19. परमार्थसार 20. पाश्चात्यतत्त्वदर्शनम् 21. योगकारिका

22. अद्वैतवेदान्तदर्शनम् 23. खगोलज्ञानम् 24. खगोलज्ञानमंजूषा

25. ज्योतिर्विदकण्ठभूषणम् 26. यन्त्रविद्या 27. सर्वार्धचिन्तामणि

28. बहुभाषाक्रियाकोष 29. सामाजिक शास्त्रमंजमूषा

30. प्रह्लाद, युधिष्ठिर, नारद, श्रीमद्भागवत, सत्यनारायण, तथा श्रीराम कथा आदि 07 कथा ग्रन्थ

31. चरितमीमांसा 32. विज्ञानगीता 33. राष्ट्रीयरामचरितम्

34. काव्यमीमांसाशास्त्रम् 35. अपथ्यापध्यम् 36.वृत्तदर्शनविज्ञानम्

संस्कृत वाड्.मय की प्रत्येक विधा यथा - महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक, दर्शन, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, खगोल, मनोविज्ञान, कथाकाव्य, स्तोत्रकाव्य में काव्य रचना करके अपने संस्कृत विषयक ज्ञान का परिचय दिया है। श्रीकृष्ण जोशी की अधिकांश रचनाएँ अभी भी प्रकाश में नहीं आ पाई है। संस्कृत वाड्.मय को 20 वी शताब्दी के श्रीकृष्ण जोशी की देन अमूल्य है।

3.3.1.3. श्रीकृष्ण पन्त

श्रीकृष्ण पन्त का जन्म सन् 1904 ईसवी में अल्मोड़ा के निकट स्थित 'मलेरा' गाँव में हुआ था। इनकी माता का नाम तुलसी तथा पिता का नाम भवदेव था। इनके गुरू का नाम श्रीमद् चन्द्रधर था। श्रीकृष्ण की शिक्षा-दीक्षा काशी में सम्पन्न हुई। ये संस्कृत के अलावा हिन्दी एवं बंगाली भाषा के भी अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने मुख्य रूप से सम्पादन, भाषानुवाद तथा टीका आदि कार्य ही सम्पन्न किए, जो कि मौलिक रचनाओं से भी बढ़कर है। इन्होंने जिन अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया वे इस प्रकार है -

1. मधुसूदन शास्त्री विरचित 'सिद्धान्तबिन्दु' का सानुवाद सम्पादन।
2. शंकराचार्य विरचित 'प्रकरण पंचक' के पाँचों प्रकरणों का सानुवाद सम्पादन
3. ब्रहमसूत्रशंकरभाष्य का 'रत्नप्रभा' टीका' सहित सम्पादन
4. योगवशिष्ठ के पाँचों भागों का सम्पादन
5. 'वृहदारण्यक' 'वार्तिकसार', 'वेदान्तमत संग्रह' तथा 'शिवस्तुति' का सम्पादन

6. 'ब्रहमवैवर्तपुराणान्र्तगत काशी-केदार माहात्म्य' का सानुवाद सम्पादन

7. निरूक्त की टीका एवं विस्तृत भूमिका

8. 'वाड्.मयार्णव' का सम्पादन

श्रीकृष्ण पन्त द्वारा सम्पादित उपर्युक्त ग्रन्थ संस्कृत साहित्य के महत्तवपूर्ण ग्रन्थ हैं।

3.3.1.4. जनार्दन शास्त्री

जर्नादन शास्त्री सन् 1920 में अल्मोड़ा के 'सालम' गाँव में पैदा हुए थे। इनके पिता का नाम गोपालदत्त पाण्डे था। इनकी शिक्षा-दीक्षा काशी में सम्पन्न हुई। इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं।

1.	गोरक्षा संहिता (दो भाग)	2. गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह	3. भक्ति विवेक
4.	सिद्धसिद्धान्त पद्धति	5.तर्ककुतूहलम्	6. सांख्यदर्शन
7.	भुशुण्डि रामायण	8. कर्मकाण्डप्रदीप	9. भगवद्भक्तिरसायन
10.	अन्योक्तिविलास	11. सांरव्यकारिका (गौड़पाद)	12. अलंकारप्रभा

इसके अलावा जनार्दन शास्त्री ने 'मेघदूतम्' किरातार्जुनीयम् (1-6 सर्ग), शिशुपालवध, रघुवंश (13-14 सर्ग), नीतिशतकम्, वेदान्तपरिभाषा, तथा संस्कृत भारती (1-4 भाग) का सम्पादन भी किया।

3.3.1.5. तारादत्त जोशी

बीसवीं शती में तारादत्त जोशी प्रख्यात विद्वान हो चुके हैं। ये अल्मोड़ा के समीपस्थ सोमेश्वर के 'सर्प' गाँव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम नीलाम्बर जोशी था। इनके पितामह आदि हिमाचल प्रदेश के राजगुरू एवं राजज्योतिषी पद पर आसीन थे। इन्होंने भी अपनी पारिवारिक परम्परा का निर्वाह किया। तारादत्त जोशी द्वारा रचित नवग्रहों में प्रसिद्ध शनि, बुध तथा राहु आदि मन्त्रों पर विस्तृत भाष्य भाषा-टीका सहित उपलब्ध है, जो वेंकटेश्वर प्रेस मंुबई से मुद्रित है।

3.3.1.6. प्रेमबल्लभ शर्मा

बीसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान प्रेमबल्लभ शर्मा अल्मोड़ा जनपद के द्वाराहाट के ग्राम कौला के मूल निवासी थे। इन्हें साहित्य, पुराण, मीमांसा तथा न्याय आदि विषयों का विशद् ज्ञान था। इनका अधिकांश जीवन काल द्वाराहाट इन्टर कॉलेज में अध्यापन कार्य करते हुए बीता इनकी रचनाएँ इस प्रकार है -

1. नागार्जुन माहात्म्य

2. नागार्जुनाष्टक

3. विभाण्डेश्वर माहात्म्य

3.3.1.7. भोलादत्त पाण्डे

आयुर्वेद के ज्ञाता तथा सुविख्यात स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे भोलादत्त पाण्डे रानीखेत के समीप स्थित 'पुथुली' गाँव में सन् 1908 में जन्में थे। इनके पिता का नाम तारादत्त पाण्डे था, जो स्वंय आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान थे। भोलादत्त ने अपने पिता से ही चरक, सुश्रुत, माधवनिदान, अष्टांग आयुर्वेद तथा योग आदि की शिक्षा प्राप्त की थी। भोलादत्त ने 'पार्वत्यऔषधीतन्त्र' नाम से लगभग 2000 श्लोंको में एक विशाल चिकित्सा विषयक ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ की रचना हेतु इन्होंने 1944-46 तक हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों का भ्रमण करके हिमालय के औषधीय पादपों के चिकित्सकीय गुणों का ज्ञान प्राप्त किया था। इनके आयुर्वेद विषयक ज्ञान की विलक्षणता के कारण विद्वत समाज ने इन्हें 'आयुर्वेदिक वृहसपति' की उपाधि से अलंकृत किया था।

3.3.1.8 तारादत्त पन्त

बीसवी शती के प्रख्यात विद्वान तारादत्त का जन्म पिथौरागढ़ जनपद के 'बरसायत' ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम दुर्गादत्त तथा माता का नाम भागीरथी था। इन्होंने अपनी माता के नाम से ही प्रायः सभी टीकाएँ लिखी हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। आगे की शिक्षा हेतु ये काशी चले गए। यही इन्होने संस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन, मीमांसा आदि विविध शास्त्रों का अध्ययन किया। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से साहित्याचार्य एवं व्याकरणाचार्य की उपाधियाँ प्राप्त की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संबद्ध रणवीर संस्कृत विद्यालय में दीर्घकाल तक इन्होंने अध्यापन कार्य किया। काशी में बहुत समय तक निवास करने के बाद ये ऋषिकुल हरिद्वार तथा ऋषिकेश में भी विद्याभ्यास तथा विद्याध्ययन करते रहे। इनकी विविध रचनाओं को देखकर इनकी विद्वता का सहज अनुमान हो जाता है। इनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं -

1. सूर्यचरित या ऋतुचरित महाकाव्य **2. गोलविद्या**

3. गोलसूत्र **4. भारतवर्ष भूगोल (श्लोकोबद्ध)**

5. आर्याप्रवाह (पण्डित गुरू परम्परा वर्णन) **6. दाशरथिभरतचरितनाटक**

7. भारतोद्धार **8. इन्द्रियार्थमीमांसा (गद्यरचना)**

9. सौवर (स्वरमीमांसा गद्यमय) **10. वर्णमालासूत्र (भाषा टीका सहित)**

11. पा..चभौतिक (दर्शन ग्रन्थ) **12. संस्कृत भाषा में कूर्मांचल का इतिहास (गोरखा शासन तक)**

इन मौलिक रचनाओं के अलावा तारादत्त पन्त ने विश्वेश्वर की मन्दारम॑जरी पर 'कुसुमाख्या टीका', चरक संहिता, रसार्णवसंहिता, अष्टागहृदय, सारड्.गधर संहिता, भावप्रकाश, रसेन्द्रसारसंग्रह आदि ग्रन्थों पर 'भागीरथी' टिप्पणी (भाष्य) लिखी। इन्होंने स्कन्दपुराण के मानसखंण्ड का प्रतिसंस्कार एवं हिन्दी अनुवाद भी किया था।इसके अलावा 'गुमानी' कवि के 'ज्ञानभैषज्यमंजरी' तथा 'वल्लरी' एवं 'सुप्रभातम्' संस्कृत पत्रिकाओं का सम्पादन भी इन्होंने किया।

3.3.1.9. पण्डित नित्यानन्द पन्त 'पर्वतीय'

नित्यानन्द पन्त के पूर्वज अल्मोड़ा जनपद के 'तिलाड़ी' गाँव के रहने वाले थे। बाद में इनके परदादा काशी में ही बस गए थे। नित्यानन्द के पिता का नाम नामदेव था। बीसवीं शती के साहित्यकार नित्यानन्द पन्त ने संस्कृत वाड्.मय की श्रीवृद्धि में अपना अपूर्व योगदान दिया। मात्र 19 वर्ष की अवस्था में इन्होंने व्याकरणाचार्य की पदवी प्राप्त कर ली थी। इनके पाण्डित्य के कारण इन्हें महामहोपाध्याय की उपाधि से समंलकृत किया गया था। ये व्याकरण,मीमांसा,कर्मकाण्ड तथा वेदान्त के अद्भुत विद्वान थे। इन्होंने देववाणी में निम्न ग्रन्थों की रचना की थी-

1. लघुशब्देन्दुशेखर की 'दीपक' टीका **2. संस्कार दीपक**

3.अन्व्यकर्मदीपक **4. वर्षकृव्यदीपक**

5. कातीयेष्टिदीपक **6. सापिण्ड्यदीपक**

7. परिशिष्ट दीपक

इसके अलावा नित्यानन्द के अनेक ग्रन्थों का वैदुष्यपूर्ण टीका सहित सम्पादन भी किया, जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं-

1. जैमिनीय सूत्रवृत्ति **2. मीमांसा परिभाषा**

3. परमलघुमंजूषा **4. काव्यायनश्रौतसूत्र (11अध्यायपर्यत्नों)**

5. वीरमित्रोदय (आरंभिक भाग)

अपने जीवन के अंतिम काल में इन्होंने कुमारिल भट्ट के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'श्लोकवार्तिक' की व्याख्या लिखनी आरम्भ की थी किन्तु उनका यह कार्य पूर्ण नहीं हो सका। संस्कृत साहित्य को नित्यानन्द पन्त की देन अमूल्य है।

3.3.1.10. डा जयदत्त उप्रेती:

जयदत्त उप्रेती मूलतः अल्मोड़ा के समीप स्थित पंतौली ग्राम के निवासी हैं। इनका जन्म सन् 1933 ईसवी में हुआ था। बचपन से ही संस्कृत के प्रति इनका विशेष लगाव था। उत्तर प्रदेश सचिवालय में लिपिक पद पर कार्य करते हुए इन्होंने संस्कृत में बी0ए0 तथा एम0ए0 किया। कालान्तर में ये संस्कृत के अध्यापन कार्य से जुड़ गए। अनेक संस्कृत विद्यालयों में कार्य करते हुए इन्होंने सन् 1980 से 1995 तक संस्कृत विभाग कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अल्मोड़ा परिसर मंे अपनी सेवाएं दी। इन्होंने दर्शन विषय पर 'सिद्धान्तशतकम्' नामक मौलिक ग्रन्थ की रचना की जो विद्वज्जनों के मध्य विशेष आदर को प्राप्त है। इन्होंने पाँच व्याकरण ग्रन्थ भी लिखें। वेदों में इन्द्र इनका पी-एच0डी0 उपाधि हेतु लिखा गया शोध ग्रन्थ है। आर्य समाज से गहराई से जुड़े श्री जयदत्त उप्रेती ने कुमाऊँ विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होने के बाद अल्मोड़ा के निकट ज्योली गाँव में आवासीय संस्कृत विद्यालय भी खोला था, किन्तु धनाभाव तथा संस्कृत के प्रति लोगों की कम होती रूचि के कारण वह अधिक समय तक नहीं चल सका। आज भी ये निरन्तर सुभारती की सेवा में संलग्न हैं।

3.3.2 बीसवीं शताब्दी के गढ़वाल क्षेत्र के काव्यकारों का परिचय:

3.3.2.1 बालकृष्ण भट्ट

बालकृष्ण का जन्म टिहरी जिले के ग्राम जखौली में सन् 1901 में हुआ था। इनके पिता का नाम तारादत्त तथा माता का नाम मूंगा देवी था। अपने परिवार की परम्पर के अनुरूप बालकृष्ण ने आरम्भ में ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड का अध्ययन किया। इसके बाद विधिवत् संस्कृत का अध्ययन आरंभ करके लाहौर के सनातन धर्म कॉलेज से विशारद की उपाधि प्राप्त की। सन् 1925 में ओरियन्टल कॉलेज लाहौर के शास्त्री परीक्षा तथा बनारस में सर्वदर्शन शास्त्री के प्रथम दो खण्ड उत्तीर्ण किए। लहौर से अपने ग्राम वापस आकर ये अध्ययन कार्य करने लगे। ये महान ज्योतिषी एवं कर्मकाण्डी ब्राह्माण थे। ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड एक तरह से उनकी पैतृक सम्पदा थी, जिसे उन्होंने पुष्पित पल्लवित किया।बालकृष्ण भट्ट की लगभग 2 दर्जन से भी अधिक

रचनाएँ मिलती है उनमें मौलिक, अनुदित, संग्रहित रचनाओं के साथ लेख, प्रशस्तियाँ, स्तवक एवं गद्यात्मक विशाल साहित्यिक भंडार है। उनकी उपलब्ध रचनाएँ इस प्रकार है।

1. कनवंश महाकाव्य (4 भाग) **2. स्वतन्त्राभारतम्**

3. जगदम्बाशतकम् **4. शिवशतकम्**

5. जगदम्बाशतकम् **6. तपोवन शतकम्**

7. कालिदास जन्म भूविलासः, **8. काव्य प्रबन्ध**

9. जातक दीपिका **10.ताजिक चन्द्रिका**

11. संस्कार पद्धति **12. पितृकर्मपद्धति**

13. दुर्गापूजापद्धति **14. पूजापद्धति**

15. शान्तिपद्धति (दानचन्द्रिका) **16. तार्चनकथविधि**

17. साहित्यकल्पलतिका **18. अनुवाद दीपिका**

19. बालप्रस्ताव **20. बालशिक्षा**

21. आत्मदर्शन काव्य **22. नव्य भारतनाटकम् (अप्रकाशित)**

23. सूर्य प्रयागतार्थ महात्म्यम् (हिन्दी अर्थ सहित)

इनके अलावा भट्ट जी ने 'गढ़वाल जाति प्रकाश', 'प्राचीन देशों का आदि देश गढ़वाल' नामक हिन्दी ग्रन्थ भी लिखे। 'संस्कारचन्द्रिका' नामक ग्रन्थ का संशोधन भी इन्होंने किया। संस्कृत काव्य जगत को अमूल्य ग्रन्थ दान देने वाले इस कवि का सन् 1972 में देहावसान हो गया।

3.3.2.2 हरिकृष्ण

टिहरी जिले में स्थित ग्राम रानीहाट में हरिकृष्ण का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम दुर्गादत्त था इसी लिए हरिकृष्ण साहित्यजगत में हरिकृष्ण दौर्गादत्त के नाम से विख्यात हुए। ये 20 वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध कवि हुए। महाराजा कीर्तिशाह के राज्यकाल में उन्हीं के सान्निध्य में इन्होंने अपनी रचनाओं का निर्माण किया। इनकी निम्नलिखित तीन रचनाएं प्राप्त होती हैं -

1. शतश्लोकीरघुवंशम्

2. प्रस्तावपुष्पाजंलिः

3. स्तवनस्तवकावलिः

हरिकृष्ण दौर्गादत्त ने देहरादून टे[a]निंग कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। टिहरी के हाईस्कूल में भी इन्होंने अध्यापन कार्य किया। उपर्युक्त तीन ग्रन्थों के अलावा तीन अन्य ग्रन्थ भी

लिखे थे, जिनका नाम 'अप्रतिमप्रतिमा', 'द्वैतध्वान्तनिवारणम्' तथा 'अप्रतिमनिरूपणखण्डम्' हैं। इनका उल्लेख कवि ने स्वयं अपनी प्रस्तावपुष्पांजलि के अन्त में किया है। प्रस्तावपुष्पांजलि में विविध छन्दों में नीतिवर्णन, चन्द्रवर्णन षट् ऋतु वर्णन, श्रृंगार तथा भक्ति विषयक कविताओं का छः स्तवकों में विभाजन किया गया है।

शतश्लोकी रघुवंश में हरिकृष्ण दौर्गादत्त द्वारा 'रघुवंश महाकाव्य' को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य में राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक के रघुवंशी राजाओं का वर्णन किया गया है। इनके स्तवनस्तवक काव्य का विस्तृत उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

3.3.2.3 शिवप्रसाद भारद्वाज

शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म सन् 1922 ईसवी को लगभग गढ़वाल क्षेत्र के पौड़ी जनपद के निकट स्थित गाँव डांग में हुआ था। इनकेपिता का नाम हीरामणि तथा माता का नाम उत्तरादेवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा हरिद्वार से तथा आगे की शिक्षा संस्कृत महाविद्यालय गढ़मुक्तेश्वर से हुई सन् 1942 से 1959 तक इन्होंने दिल्ली में अध्यापन कार्य किया। इन्होंने वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री तथा आचार्य की उपाधियाँ प्राप्त की थी। सन् 1959 में शिवप्रसाद विश्वबन्धु वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। बाद में पंजाब विश्वविद्यालय में भी आपको व्याख्याता बने। बींसवी शती के महान संस्कृत साहित्यकार शिवप्रसद की लगभग तैतसी (33) प्रकाशित रचना है, जो इस प्रकार है

1. लौहपुरूषवादानम् (महाकाव्य) 2. इन्दिराविलास
3. वारूणीमहिमा तथा 4. कामकौतुकम् ये तीनों मुक्तक काव्य है।
5. गुरूरविदासशतकम् (शतक काव्य) तथा 6. इन्दिागौरवम् (द्विशतककाव्य है।)
7. न्यायः, 8. पुत्रैषणा,
9. इयं सुमंगलीवधू, 10. कुमाता न भवति
11. पुरूषद्वेषिणी तथा 12. स्नेहहप्रतिफलम् ये छः सामाजिककथाएँ हैं।
13. पुरोघसः स्वप्नः सामाजिक प्रहसन तथा 14. नारदस्य दिल्लीयात्रा रूपक का भाण नामक भेद है। 15. मेघदूतम् घ्वनिरूपक तथा 16. स्वातंत्र्यसुखम् प्रेक्षणक हैं।
17. बालस्पशः तथा 18. गुरूदक्षिणा बालकथाएँ हैं।
19. बन्धुजीवः (उपन्यास) 20. तंरगलेखा प्रकीर्णकाव्य संग्रह तथा
21. अभिनवरागमोदितम् मौलिक गीत संग्रह है। 22. मत्कुणायनम् व्यंग्यकाव्य तथा
23. मुकुन्द शतकस्तोत्र काव्य है। 24. आर्यार्द्धशतकम् सुभाषित तथा

25 कालिदास गरिमा समीक्षा ग्रन्थ है। 26. निबन्धकुसुमाकर निबन्ध संग्रह है।

27. इनके द्वारा 'अशोक संस्कृत हिन्दी अग्रेजी शब्दकोष, का सम्पादन भी किया गया

28. महापुरूषचरितावलिः महापुरूषों के जीवन चरित्र को उजागर करने वाला ग्रन्थ है और

29. शैलबाला ग्रन्थ में साक्षात्कार प्रकार की कथाएँ हैं। इसके अलावा इनके तीन हिन्दी ग्रन्थ भी प्रकाशित हैं-

30. कालिदास दर्शन,

31. कालिदास दर्पण तथा

32. संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य बिम्ब विवेचन

33. ''पश्चाद्वर्ती काव्यशास्त्र के स्रोत के रूप में वाल्मीकि रामायण का अध्ययन'' श्री भरद्वाज का पी0एच0डी0 उपाधि का शोधप्रबन्ध अप्रकाशित है।

भारद्वाज जी की उपर्युक्त पुस्तकों का प्रकाशन विश्वसंस्कृतम्, दूर्वासार, स्वरमंगला तथा वासन्ती आदि संस्कृत की पत्र-पत्रिकाओं में हो चुका है। सन् 1963 से 67 तक इन्होंने संस्कृत की त्रैमासिक पत्रिका विश्वसंस्कृत का सम्पादन कार्य भी किया। इनके अतिरिक्त भारद्वाज जी के 12 अप्रकाशित काव्य भी हैं। अकाशवाणी से इनके 5 संस्कृत नाटकों का प्रसारण भी हुआ है। सन् 1965 से पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगड़ की सेवा में चले जाने के पश्चात् सन् 1985 में वे संस्कृत रीडर पद से सेवानिवृत्त हुए। तदनन्तर वे अपने पुत्र के पास भारद्वाज निकेतन, हरिपुर देहरादून में रहकर संस्कृत की आराधना में तत्पर रहे।

3.3.2.4. श्रीधर प्रसाद बलूनी

बलूनी जी का जन्म पौड़ी गढ़वाल के ग्राम बागी में सन् 1941 में हुआ था। इनके पिता श्रीकृष्ण तथा माता श्रीमती धन्वन्ती देवी थी। इनके दादा ज्योतिष के विद्वान थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही हुई। आदर्श संस्कृत पाठशाला, तिमली, पौड़ी गढ़वाल से इन्होंने उत्तरमध्यमा तक की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बनारस से इन्होंने शास्त्री तथा साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। साथ-साथ साहितय रत्न की परीक्षा भी प्रयाग से उत्तीर्ण की और अंग्रेजी भाषा में इण्टर भी पास किया।

श्रीधर बलूनी ने सन् 1957-58 में संस्कृत पाठशाला, तिमली में संस्कृत अध्यापन का कार्य किया। सन् 1963-66 तक इन्होंने जनता इण्टर कॉलेज खिर्सू में पढ़ाया। बाद में सन् 1966 से 1990 ईसवीं तक दिल्ली में कई स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालयों में वे व्याख्याता रहे और अन्त में वे प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए। इन्हें 1996 में 'राज्य शिक्षा पुरस्कार', 2002 में

'संस्कृत साहित्य सेवा सम्मान' तथा 2003 में 'जनगणना प्रशस्ति पदक' प्रदान किया गया। श्री बलूनी जी सामाजिक सेवा में संलग्न रहते हुए दिल्ली संस्कृत आकादमी, अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन एवं स्नातक धर्म प्रतिनिध सभा के अवैतनिक सदस्य भी रहे। इनकी निमनलिखित संस्कृत रचनाएँ प्राप्त होती हैं-

1. दशमेशचरितम् (सिक्खगौरवम्)

2. श्रीबदरीशस्तोत्रम्

3. श्रीकेदारनाथस्तोत्रम्

4. श्रीगुरूरामरायचरितामृतम्

इनमें से दशमेशचरितम् इक्कीस सर्गों में लिखा गया महाकाव्य है। इसमें गुरू गोविन्दसिंह का गौरवमय इतिहास-वर्णन है। इसमें गुरूनानक देव से लेकर गुरूगोविन्दसिंह तक सिक्ख धर्म के दश गुरूओं का उल्लेख करते हुए सिक्ख धर्म के ऐतिहासिक स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। कवि ने स्वयं ही इसका हिन्दी भाषानुवाद करके काव्य को जन-जन के लिए सहज बना दिया है। श्रीबदरीनाथस्तोत्रम् तथा श्रीकेदारनाथस्तोत्रतम् में बदरी (नर-नारायण) एवं केदार (शिव) की स्तुति की गई है। इनके ग्रन्थ श्रीगुरुरामरायचरितामृतम् में गुरू रामराय के जीवन चरित्र से संबद्ध विवरण संस्कृत पद्यों के माध्यम से हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य में कुल 128 पद्य है। यह ग्रन्थ चरितकाव्य की श्रेणी में आता है। इस प्रकार श्रीधर प्रसाद बलूनी का संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि में विशेष योगदान है।

3.3.2.5. श्रीकृष्ण सेमवाल:

श्रीकृष्ण सेमवाल का जन्म केदार घाटी के यमुनापार (ह्यूण) गाँव में सन् 1949 को हुआ था। इनके पिता का नाम नाथोराम था जो ज्योतिष तथा तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता थे। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद श्रीकृष्ण ने उत्तराखण्ड संस्कृत विद्यापीठ, गुप्तकाशी से संस्कृत का अध्ययन किया। इनके आराध्य गुरू व्याकरणाचार्य भास्करानन्द मैठाणी थे। विद्यापीठ से आकर इन्होंने गुरूकुल आदि संस्कृत महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया साथ ही वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय से व्याकरणाचार्य की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। बाद में इन्होंने बी0ए0 तथा एम0ए0 की उपाधियाँ भी प्राप्त की श्रीकृष्ण सेमवाल की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

1. इन्दिराकीर्तिशतकम्

2. अन्योक्तिपंचाशिका

3. दयानन्दशतकम्

4. युद्धशतकम्

5. मुक्तककाव्यम्

6. क्रान्तिवीर-विरुदावलिः

इन्दिराकीर्तिशतकम् में इन्दिरा गाँधी के जीवन चरित की प्रमुख घटनाओं को सौ शलोकों में प्रस्तुत किया गया है। काव्य की भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। अन्योक्तिपंचाशिका उपदेशात्मक ग्रन्थ है। इस काव्य में प्रत्येक पद्य स्वतंत्र है। हंस, कोयल, बन्दर समुद्र, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, कमल आदि प्रकृति के विभिन्न अंगों को सम्बोधित कर कवि ने सामान्य जन के लिए विविध उपदेश दिए हैं। दयानन्दशतकम् में दयानन्द सरस्वती का वर्णन है।

श्रीकृष्ण सेमवाल की कुछ अन्य प्रकाशित संस्कृत रचनाएँ भी है यथा-

1. पीयूषम्
2. भक्तिरसामृतम्
3. वाग्मैभवम्
4. संघे शक्ति कलौ युगे
5. प्रियदर्शनीयम्
6. भीमशतकम्
7. व्यावहारिक संस्कृतम्
8. सर्वमङ्गलाशतकम्
9. हिमाद्रिपुत्राभिनन्दनम्
10. विन्सरस्तोत्ररत्नावलिः
11. शक्तिसौरभम्
12. शनिसमाराधना
13. संस्कृत भाषा में

20 गीत एवं अन्य लेख

इनके अलावा इनका 'संस्कृत सूक्ति समुच्चय' भी है। इन्होंने 'दिल्लीस्थाः विंशताब्दीयाः संस्कृत-रचनाकारः' ग्रन्थ का सम्पादन भी किया। इनका ''व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण के नए आयाम'' (हिन्दी ग्रन्थ) अप्रकाशित है।

सन् 2002 में इनको महामहिम राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित किया गया। कविवर श्रीकृष्ण की विद्वता, क्षमता एवं कार्यदक्षता के कारण विद्वद्वर्ग द्वारा इन्हें 'विद्यावाचस्पति' की मानद उपाधि

विशिष्ट 'विद्वत्सम्मान', 'कविरत्नम', 'संस्कृतसेनापति', 'सम्मानित शिक्षक', 'देववाणी प्रचारक', 'शुश्रूषा सम्मान' आदि पुरस्कार एवं प्रशस्ति तथा 'संस्कृत लोक संग्रह महारथी' आदि अनेक उपाधियाँ एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

3.3.2.6. शशिधर शर्मा:

शशिधर शर्मा का जन्म गढ़वाल क्षेत्र के देवप्रयाग में सन् 1932 ई0 के आस-पास हुआ था। इनके पिता का नाम सदाराम तथा माता का नाम मोहिनी देवी था। इनके पिता देवी के उपासक, कवि तथा तान्त्रिक थे। शशिधर की प्रारंभिक शिक्षा के बाद पिता ने इन्हें संस्कृत शिक्षा प्राप्त करने के लिए ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार भेज दिया, जहाँ सन् 1940 से 1965 तक इन्होंने लगन के साथ संस्कृत का अध्ययन किया। इसके साथ ही इन्होंने विभिन्न संस्थानों से व्याकरणाचार्य, वेदान्त तीर्थ, अद्वैत वेदान्त, साहित्य तथा पुराण से उत्तमा परीक्षा, सांख्ययोग में आचार्य, साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य की उपाधियाँ तथा आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी तथा संस्कृत में एम0ए0 की उपाधि भी प्राप्त की।

इन्होंने विभिन्न संस्कृत विद्यालयों में कार्य किया। सन् 1960 से नेशनल कॉलेज लखनऊ में तथा सन् 1962 से पंजाब विश्विद्यालय चण्डीगढ़ में प्रवक्ता पद पर कार्य किया। बाद में ये पंजाब विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे और अन्त में वहीं से सेवानिवृत्त हुए। इनके द्वारा रचित संस्कृत रचनाएँ इस प्रकार हैं-

1. वीरतरंगिणी काव्य

2. शाङ्करसर्वस्वम्

3. कैनेडीकरुणांजलिः

4. वीरतरंगिणी

सन् 1962 के चीनी आक्रमण के समय भारतीय सैनिकों की वीरता का सजीव रोचक एवं स्वाभाविक वर्णन इनके 'वीरतंरगिणी काव्य में किया गया है। आदिशंकराचार्य के जीवन दर्शन एवं परम्परा का लगभग 500 पद्यों में काव्यमय वर्णन 'शांकरसर्वस्वम्' में किया गया है। 'कैनेडीकरूणांजलिः' अमेरिकन राष्ट्रपति जॉन0ऐफ0 कैनेडी की हत्या का काव्यमय वर्णन करता है। संस्कृत व्याख्या एवं हिन्दी टीका से युक्त इस काव्य में लगभग 150 पद्य हैं।

2.3.2.7. श्रीकान्त आचार्य

श्रीकान्त आचार्य (कुकरेती) का जन्म सन् 1911 ईसवी में पौड़ी गढ़वाल के ग्राम नौगाँव में हुआ था। अपनी आत्मकथा में कवि ने स्वयं लिखा है कि चूड़ाकर्म संस्कार के बाद मात्र 8 वर्ष की अवस्था में उन्हें 'श्रीदर्शन महाविद्यालय', 'मुनि की रेती' में प्रविष्ट कराया गया। इस संस्था में प्राचीन परिपाटी से शिक्षण कार्य होता था। यहीं रहते हुए उन्होंने संस्कृत से प्रथमा एवं मध्यमा की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद ये 'रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय' जम्मू चले गए। सन् 1933 में विशारद तथा सन् 1935 में पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से शास्त्री परीक्षा पास की। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद इन्होंने सन् 1951 में सोलन के संस्कृत विद्यालय में प्रधानाध्यपक के पद पर कार्य किया।

श्रीकान्त आचार्य की प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं-

1. सीमातिक्रमण महाकाव्य (हिन्दी अनुवाद सहित)

2. युगनिर्माता-दयानन्द महाकाव्य (हिन्दी अनुवाद सहित)

3. प्रताप विजय (संस्कृत उपन्यास)

4. आनन्दकन्दचरित खण्डकाव्य (हिन्दी अनुवाद सहित)

5. भारतस्य-रजत-जयन्ती (ऋतम्भरा-पत्रिका में प्रकाशित)

6. मातृ वन्दना(लघु पुस्तिका) हिन्दी अनुवाद सहित

7. प्रत्याक्रमण ऐतिहासिक काव्य (अप्रकाशित)

8. त्रिवेणी (तीन एकांकी नाटकों का संग्रह, अप्रकाशित)

9. पंच महामानवाः (हिन्दी अनुवाद सहित, अप्रकाशित)

श्रीकान्त उच्चकोटि के संस्कृत विद्वान थे। संस्कृत साहित्य को श्रीकान्त आचार्य की देन बहुमूल्य है। इनके 'सीमातिक्रमणम् महाकाव्य' का कथानक सन् 1962 में चीन द्वारा आक्रान्त भारतीय सेना की वीरता, सेनानायकों (नेताओं) की अक्षमता तथा आदिवासी युवक युवतियों के अपूर्व योगदान को दर्शाता है। इस महाकाव्य में कुल 15 सर्ग हैं। 'युगनिर्माता दयानन्द महाकाव्य दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित से संबन्धित 15 सर्गों का महाकाव्य है। इनका 'प्रताप विजय' नामक संस्कृत उपन्यास 15 निःश्वासों में विभक्त है। यह महाराणा प्रताप के जीवन चरित से संबन्धित उपन्यास हैं। 'आनन्दकन्द चरितम्' में सतपाल महाराज के जीवन की कतिमय घटनाओं का काव्यात्मक चित्रण है। इस काव्य में सतपाल महराज को 'आनन्दकन्द' विशेषण से सम्मानित किया गया है।

2.3.2.8 रामप्रसाद हटवाल-

रामप्रसाद हटवाल का जन्म श्रीनगर (गढ़वाल) के समीप स्थित गिरगाँव में सन् 1918 ई0 को हुआ था। इनके पिता का नाम हरिदत्त हटवाल था जो ज्योतिष एवं कर्म काण्ड के विद्वान थे। राम प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता के सान्धिय में हुई। मध्यमा तक की शिक्षा इन्होंने संस्कृत विद्यालय डिम्मर में प्राप्त की। तत्पश्चात् शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। बाद में इन्होंने बी0ए0, एम0ए0 तथा पी-एच0डी0 की उपाधियाँ भी प्राप्त की। इनकी एक मात्र रचना 'आकाशवाणी' नामक दूतकाव्य है। इसमें विरह से व्याकुल नायक विद्युततरंग (रेडियो) द्वारा अपना सन्देश दूर देश में रहने वाली अपनी प्रियतमा को भेजता है। कुल 135 पद्यों से युक्त यह रचना अभी-तक अप्रकाशित ही है। कालिदास के मेघदूतम् से प्रभावित इस काव्य में नायक का सन्देश वाहक 'विद्युतरंग' है। काव्य में विप्रलंभ श्रृंगार रस की प्रधानता है। इसमें इन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका मालिनी आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। आकाशवाणी काव्य में षड्ऋतु वर्णन में प्रकृति का सुन्दर एवं स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

2.3.2.9 जितेन्द्र चन्द्र भारतीय

गढ़वाल के देवप्रयाग के समीप 'सिराला' नामक गाँव में जितेन्द्र चन्द्र भारतीय का जन्म 1915 ई0 को हुआ था। इनके पिता का नाम शिवचरण तथा दादा का नाम पीताम्बर दत्त था। जितेन्द्र की प्रारंभिक शिक्षा 'श्री रघुनाथ कीर्ति संस्कृत महाविद्यालय', देवप्रयाग में हुई। इसके बाद ये बिहार के चम्पारन में संस्कृत अध्ययन हेतु गए। वहाँ से आकर गुरूकुल संस्कृत विद्यालय, आर्योला, बरेली में पढ़ाई की। बरेली से बाद में देवप्रयाग आकर इन्होंने शास्त्री एवं हिन्दी में एम0ए0 करके हिन्दी में शोधोपाधि प्राप्त की। आचार्य भारतीय का व्यक्तित्व विविधतापूर्ण है। साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में उनकी प्रवृत्ति रही है। इनकी रचना 'सूरशतकम्' में हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि सूरदास के विभिन्न 101 पद्यों का संस्कृत गेयात्मक रूप में वर्णन किया गया है। इन पद्यों में सूरदास की भावना एवं गीतात्मकता को गुम्फित करने का सफल प्रयास कवि ने किया है। काव्य के पद्य सरल-सरस-सुबोध एवं भावगम्य हैं।

2.3.2.10 अशोक डबराल

गढ़वाल के सिद्धकवि 'नर नारायणी' काव्य के रचयिता सदानन्द डबराल के पौत्र एवं संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान पिता आचार्य विद्यादत्त एवं माता सत्यभामा देवी के पुत्र अशोक डबराल का जन्म सन् 1943 को पौड़ी गढ़वाल के तिमली गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंम्भिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय, देवलीखेत एवं आदर्श संस्कृत पाठशाला, तिमली में हुई। पूर्व

माध्यमिक शिक्षा भी इन्होंने वहीं से प्राप्त की। तिमली से ही प्रथमा, मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा करने के बाद उच्च शिक्षा हेतु ये काशी आ गए। वहाँ वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से सन् 1962 में शास्त्री परीक्षा पास की। इन्होंने विशारद एवं साहित्य रत्न भी किया। सन् 1968 में आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम0ए0 तथा 1974 में मेरठ वि0वि0 से हिन्दी में एम0ए0 करके 1999 में चैधरी चरण सिंह वि0वि0 मेरठ से पी-एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। प्रतिभा सम्पन्न अशोक डबराल की निम्नलिखित संस्कृत रचनाएँ हैं-

1. देवतात्मा हिमालयः (महाकाव्य)

2. द्युक्षते हा धरित्री (महाकाव्य)

3. चन्द्रसिंह, गर्जितम् (लघु नाटक)

4. दायाद्यम (संस्कृत नाटक संग्रह)

5. दुधुक्षा (संस्कृत कथा-पीयूष-दोहानी, हास्य कथा संग्रह

6. प्रतिज्ञानम् (संस्कृत नाटक)

7. पठितानि मया शोधपत्राणि (संस्कृत शोध-पत्र-संग्रह

इनके महाकाव्य 'धुक्षते हा धरित्री' के लिए इन्हें उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा 'कालिदास' पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। संस्कृत के अलावा हिन्दी भाषा में भी इनकी अनेक रचनाएँ प्राप्त होती हैं। जिनमें महाकाव्य, कहानी संग्रह, कविता संग्रह, निबन्ध संग्रह, उपन्यास, आत्मकथा आदि सम्मिलित हैं। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं के जानकार तथा श्रेष्ठ कवि एवं साहित्यकार हैं। संस्कृत साहित्य तथा हिन्दी साहित्य को इनकी देन अमूल्य है।

अभ्यास प्रश्न

टिप्पणी

1.केदारदत्त जोशी

2. तारादत्त पन्त

3.पंडित नित्यनन्द पन्त (पर्वतीय)

4. श्रीधर प्रसाद बलूनी

5. शशिधर शर्मा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सूर्यग्रहण विमर्श किसकी रचना है-

(क) केदारदत्त जोशी (ख) केदार पाण्डे

(ग) प्रेमबल्लभ शर्मा (घ) श्रीकृष्ण जोशी

2. श्रीकृष्ण जोशी द्वारा विरचित संस्कृत नाटक कितने हैं-

(क) दो (ख) तीन

(ग) चार (घ) एक

3. भुशुण्डि रामायण किसने लिखी?

(क) बाल्मीकि (ख) तुलसीदास

(ग) जर्नादन शास्त्री (घ) किसी ने नहीं

4. श्रीकान्त आचार्य का जन्म कब हुआ?

(क) सन् 1908 में (ख) सन् 1909 में

(ग) सन् 1910 में (घ) सन् 1911 में

5. 'कैनडी करूणा´जलिः' किसकी रचना है ?

(क) प्रेमबल्लभ शर्मा (ख) शशिधर शर्मा

(ग) श्रीकान्त आचार्य (घ) जितेन्द्र भारतीय

6. बालकृष्ण भट्ट ने कौन सा महाकाव्य लिखा है?

(क) रघुवंश (ख) नरनारायणी

(ग) कनर्कवश (घ) लौहपुरूषावदानम्

रिक्त स्थान पूर्ति

1. विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी ने रामरसायनम् एवं..... महाकाव्य की रचना की है।

2. जनार्दन शास्त्री सन् 1920 में अल्मोड़ा के..... गाँव में पैदा हुए थे।

3. ..... जयदत्त उप्रेती ने लिखा है।

4. शिवप्रसाद भारद्वाज ने..... मुक्तक काव्य लिखे हैं।

5. दशमेशचरितम्..... के जीवन चरित पर आधारित हैं।

6. इन्दिराकीर्तिशतकम्, दयानन्दशतकम् एवं..... किसके द्वारा लिखित शतक काव्य हैं।

अतिलघूउत्तरीय प्रश्न

1. श्रीकृष्ण जोशी का 'अन्तरंगमीमांसा' किस विषय पर आधारित ग्रन्थ है ?

2. नागार्जुन माहात्म्य और नागार्जुनाष्टक किसकी रचनाएँ हैं ?

3. भोलादत्त पाण्डे को किस उपाधि से अलंकृत किया गया था ?

4. श्री बदरीशस्तोत्रम् और श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् किसने लिखे हैं ?

5. वीरभारतकाव्यम् में किस युद्ध का वर्णन है ?

6. युगनिर्माता दयानन्द, महाकाव्य किसकी रचना है ?

सत्य/असत्य बताइए

1. बीसवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा खण्डित दिखाई देती है।

2. श्रीकृतार्थकौशिकम् ऐतिहासिक नाटक है।

3. विभाण्डेश्वर माहात्म्य प्रेमबल्लभ शर्मा की कृति है।

4. शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म पौड़ी जिले के सेरा गाँवउ में हुआ था।

5. 'आकाशवाणी' रामप्रसाद हटवाल की यह रचना एक दूतकाव्य है।

6. वीरतरंगिणी मे सन् 1971 के युद्ध का वर्णन है।

नोटः- उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर में दिये जा रहे हैं फिर भी हमारा सुझाव है कि आप स्वमूल्यांकन हेतु उनसे अपने उत्तरों का मिलान करके देखें।

3.4 सारांश:-

बीसवीं शताब्दी में भी उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की समृद्ध परम्परा सतत् गतिमान रही इस कालखण्ड में उत्तराखण्ड के कुमाँऊ क्षेत्र में अनेकानेक स्वनामधन्य कवि हुए जिनमें से प्रमुख कवियों एवं उनके काव्यों का परिचय इस इकाई में दिया गया है। इनके अलावा इस शताब्दी में कुमाँऊ में अन्य भी साहित्यकार हुए जिनका विषय विस्तार भय से हम यहाँ पर उल्लेख नहीं कर सके। गढ़वाल में भी अनेक साहित्यकार हुए जिन्होंने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में ग्रन्थ रचना करके संस्कृत साहित्य भण्डार की अभिवृद्धि में अपना अतुलनीय योगदान दिया। इन सभी कवियों द्वारा विरचित ग्रन्थ संस्कृत प्रेमी जनों के प्रेरणा स्रोत हैं। कुमाँऊ तथा गढ़वाल के इकाई में उल्लिखित संस्कृत कवियों के अलावा भी उत्तराखण्ड में ज्योतिषादि ग्रन्थों की रचना करने वाले विद्वानों की भी एक लम्बी परम्परा है जिसका उल्लेख विषय विस्तार भय से यहाँ नही किया जा सका किन्तु यह सत्य है कि उनका योगदान भी संस्कृत वाङ्मय के प्रति अमूल्य है।

3.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:-

टिप्पणी

1. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.31.1. को देखें।
2. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.3.1.9. को देखें।
3. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.3.1.8.को देखें।
4. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.3.1.2.4 को देखें।
5. हेतु इकाई की उपखण्ड संख्या 3.3.2.6 को देखें।

बहुविकल्पीय

1.क

2 ख

3. ग

4. घ

5. ख

6. ग

रिक्त स्थान पूर्ति

1. स्यमन्तकनाममहाकाव्यम्

2. सालम

3. सिद्धान्तशतकम्

4. तीन

5. गुरूगोविन्दसिंह

6. युद्धशतकम्

अतिलघुत्तरीय

1. मनोविज्ञान

2. पे्रमबल्लभ शर्मा

3. आयुर्वेदिक बृहस्पति

4. श्रीधर प्रसाद बलूनी

5. सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध का

6. श्रीकान्त आचार्य

सत्य/असत्य

1. असत्य

2. असत्य

3. सत्य

4. असत्य

5. सत्य

6. असत्य

3.6 सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक सामग्री:-

1. कुमाँऊ का इतिहास, बद्रीदत्त पाण्डे

2. कूर्मांचल में संस्कृत वाड्.मय का विकास, डा बसन्त बल्लभ भट्ट

3. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन, डा प्रेमदत्त चमोली

3.7. निबन्धात्मक प्रश्न:-

1. शिवप्रसाद भारद्वाज के जीवन एवं उनकी कृतियों का परिचय दीजिए।

2. बीसवीं शताब्दी में 'कुमाँऊ में संस्कृत साहित्य की परम्परा' विषय पर एक लेख लिखिए।

3. बीसवीं शताब्दी के गढ़वाल के किन्हीं दो साहित्यकारों का परिचय दें।